

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ श्री चिंतामनि कवि रचित भाषा कवि

॥*॥ कुल कल्पतरु लिलव्यते

॥ अथ कवित्त ॥

श्रीगण नायक सुंदरके अंगन गद्यो सुर सिंधु

संगेज रह्यो फवि ॥ हाथनि अंकुश पास अ

भयनोर लुदिल अंगनि में उमगे छवि ॥ मां

नों द्यो मय सत्वकों अंकुर दंत की दीपति

हो कौने कवि ॥ कुंभ सिंदूर लसे मनि सुंदर

मानो उदय गिरि अंगनि में रवि ॥ १ ॥ मेटेय

नावलि सी विद्यनत्र लि तीषन कानन यो

न उदारसौ ॥ सेवकों नित देत अभय फा

ल लैवारसौ कल्पद्रुम डारसौ ॥ श्रीगणेश

हरजू को दुलारो यहै भजनीय जो चित्त वि

चारसौ ॥ लगि सदा मनि सिंधुर अंगन

सुंदर इंद्रके असवारसौ ॥ २ ॥ दोहा ॥ जे सुर

वानी मंथहैं तिनको समुह विचार ॥ चिंता

मनि कवि काहतहै भाषा कवित्त विचार ॥

३ ॥ वतकहाउरस में जुहै कवित्त कहावै सो

द ॥ गद्य पद्य है भौलि हौं सुखानी में होदू ॥

४ ॥ छंद निवह सपद्य काहि गद्य होत विन

छंद ॥ भाषा छंद निवद्ध सुनि सुकावि होल
 मानंद ॥ ५ ॥ मेरे पिंगल मंथते समुहो छंद
 विचार ॥ रीति सुभाषा कवित की दरनत बुध
 अनुसार ॥ ६ ॥ सगुना लंकारन सहित दोष
 रहित जोहोइ ॥ शब्द अर्थ ताको कवित कहत
 विबुध सब कोइ ॥ ७ ॥ जे रस आगेके चरम
 ते गुन वरने जान ॥ आत्तप दोज्यो सुखतादि
 का निहचल अवदात ॥ ८ ॥ सबे अर्थ तबुद
 रीत्ये जीवित रस जिय जाति ॥ अलंकार
 हारादिने उपमादिक मनआनि ॥ ९ ॥ श्लेषा
 दि गन सुरता दिक् से मानो चित्त ॥ वरनो री
 ति सुभाव ज्यो वृत्ति वृत्ति सी मित्त ॥ १० ॥ य
 द अनगुन विश्रामसो सज्जा सज्जा जाँनि
 रस आस्वादन भेदजे पाक पाक से मानि
 ११ ॥ कवित पुसषकी साजु स्व समुहलोका
 की रीति ॥ गुन विचार अव कारतहो सुनो
 सुकावि करि प्रीति ॥ १२ ॥ प्रथम कहत माधु
 र्य पुनि दोज प्रसाद वरवानि त्रिविधे गुन
 तिनमें सबे सुकावि लेत मनमानि ॥ १३ ॥ जो
 संयोग सिगारमें सुखद दूवावे चित्त ॥ सो
 माधुर्य वरवानिये यहई तत्व कवित ॥ १४ ॥

१०॥ संयोगा सिंगारतै करुणा मध्य अधिका
 ११॥ विपुलंभ अरुसांतरस तामें अधिका व
 नाद्र॥ १५॥ दीप्ति चित्त विस्तारको हेतु वोजर
 गुन जानि ॥ सुतौ वीर वीभत्स अरु रोदू क्र-
 माधिक साति ॥ १६॥ सूखे ईंधन आगज्यौं स्व-
 ह नीरकी रीति ॥ मल्लकै अक्षर अर्थजो सो
 प्रसाद गुन नीति ॥ १७॥ कोऊ अंतर भूत इ-
 त कोऊ दोष अभाव ॥ कोऊ दोष त्रिविधि
 गुरा तामें दसन गनाउ ॥ १८॥ और गुनै जो
 अर्थ गुरा तेनकाछू करि मानि ॥ रचना वर-
 न समान गुन के विंजन के जानि ॥ १९॥ अ-
 नुस्वार जुत वरन जिति संवै वर्ग अठवर्ग ॥
 २०॥ समास माधुर्यकी घटनां में जुनि सर्वा ॥
 २१॥ माधुर्यकौं ॥ संवैया ॥ इका अज्ञु मैकुं दनि
 वेलि लखी मनि मंदिरकी राचि वंद भरै
 कुरविंद के पल्लव वंदु तहां अर विंदनतें
 मकारंद करै ॥ उत वंदनके सुकाना गनहै फ-
 ल सुंदर द्वै पर जानि परै ॥ लखि यौं दृतिकां-
 द अनंद कला नंदनंद सिला द्रव रूप धरै ॥
 २२॥ दोहा ॥ वर गन मै जो आदि अरु तीजो
 आखर कोइ ॥ तिनसौं योग दुतीय अरु चौ

ये कौ जोहोइ ॥ २२ ॥ रेफा जोम सब तौर जो
 तुल्य वरन जग जोम ॥ सषट बरन दीतय
 वारन जेसमास कवि लोग ॥ २३ ॥ ऐसी घट
 ना बोजकी व्यंजक मनमें आनि ॥ सकल
 सुकवि जनकौ सतौ सुजन लेहु मनजानि
 २४ ॥ संजोगी उद्धत वरन जोपुनि हित्य स
 मास ॥ ऐसी रचना कारतहैं सुनतहिं बोजप
 वास ॥ २५ ॥ वोः उः ॥ दूध पक्का फल खात दू
 धा दूधत किलकात अति ॥ चिंतामनि बल
 वंत दूध धावात उद्धत गति ॥ * ॥ मंददियाज
 कदपकसमद गरजात गंभीर धुनि ॥ चूरन वाद
 त पषांन रहे पषय मानौ धुनि ॥ उत उमडि
 पूरि गिरवर धरनि प्रबल जलधि जिमि वि
 नहटका ॥ सम कारत सैल मगान विकट उद
 भट मरकाट भटकाटका ॥ २६ ॥ दोहा ॥ बहुकापि
 भागत निरखिवकौ हस्यौ पराट घन लइ ॥ त
 ह कारत जग अंतजन सह दिसानि विहद
 सह दिसान विहद हर पपल हृदर सिद्ध ॥ त
 द्ध धुकि पद बुद्धर नि विहद धुनिविद्य ॥ रज
 छिति धर भद्र छरक अलहा छरि अशिान
 वविजय असब विकाल अरध बहुकापि ॥

२०॥ इत्युक्तं ॥ दोहा ॥ जामहिं सुनतहि पद
 नके अर्थ बोध मनहोइ ॥ सो प्रसाद वरनादि
 इति साधारण सब जोइ ॥ २८ ॥ प्रसाद को उ
 वाच्यता ॥ सांख्ये सलोने नित बडी अखि
 यान को जहोतु आभरण आजि जमुना
 को तीरको ॥ चिंतामनि कहै गारी दीजे तो है
 सत हीट धसि निकसे त पुनि नारिनकी
 भीरको ॥ अंतो आजु जानी अवलौं नहौं
 बजानत ही वारतु अनीति जैसी छोहरा
 अहीरको ॥ पनिघट रोकात कन्हैया याको
 नास देया खोटोहे निपट छोटे भैया बल
 की जो ॥ २९ ॥ दोहा ॥ प्राचीनो दित गुननिको
 जेरो कछू प्रकार ॥ सोथामें सब लिखत है नि
 जसो को अनुसार ॥ ३० ॥ श्लेष प्रसाद वरन
 बहु लसता नाम बखान ॥ माधुर्यो सुकुमार
 ता अर्थ व्यक्त पहिचान ॥ ३१ ॥ पुनि उदारता
 दोऊगानि कांति समाधो जानि ॥ एवैद भीरी
 तिको प्रानद सो गुनमानि ॥ ३२ ॥ श्लेष गुनको
 ल ॥ बहुत पदको एक पद समको है आ
 यास ॥ ताको कहत सलेष गुन सिथिलनि
 दंथ विलास ॥ ३३ ॥ श्लेष विकटता पदनि २

की जो उदारता होइ ॥ द्रौज सहित जो सिद्धि
 ल पद बंध प्रसाद जू कोइ ॥ ३४ ॥ पद आ
 रोह्नारोहसो जोग समाधि प्रकार ॥ ऐसे वो
 जहि गनत सब संमद बुद्धि विचार ॥ ३५
 श्लेष ॥ कावित्त ॥ राम सृज दंडको दंड संड
 लिति करि दिग्ध उदंड सर दंड छोडे ॥ स
 काल निक्षिचरन वो दंड ऐसो हन्यो प्रव-
 ल घन अनिल जनु यन विलोडे ॥ अंगर
 थ आवरन संगमहि यौगिरे हनें बहु कस
 र राकास निगोडे ॥ गिरे घन चरन के दावा
 त सघात लहि छप्यरन संग जनु दूट दोडे
 ३६ ॥ उदारता कोल ॥ दोहा ॥ जहाँ नृत्यसों
 करत पद सो उदारता जानि ॥ अर्थ चाहता
 सहित सो अति मञ्जुल पहिचानि ॥ ३७ ॥
 उदारता कोउ ॥ सर्वैया ॥ काननि कुंज कालि
 दीके कूलनि कान्ह मिले बछरानि चरा
 वै ॥ हेमनि हेमनि मंडितपे फाल फूल प्र
 वालन की छवि छावै ॥ मञ्जुल मूरति नाच
 त गावत कूदत वेनु विषान बजावै ॥ साँवरे
 सुंदर नंद कुमारहि याविधि गोप कुमारि रि
 तावै ॥ ३८ ॥ अरोहा अरोहा समाधि कोउ

*॥ कविज्ञ ॥ हाथ करि चाप रथुनाथ करि हा
 थ बर विविष दुर्धर्य दुस्सह चलाए ॥ चले
 नभ मूँदि जनु पद् धरि नाग निसिचरन
 के प्राण बहु पवन खाए ॥ दुवन भट विकट
 आकार उद भटनिपट समर पदकटि रिसु
 गन घटाए ॥ ध्वजन कौं छेदि धनु कवच
 गन भेदि धनरत्न उछेद बहु छविनि छाय
 ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ वोज विमिश्रित सिधिल पद
 यह प्रसाद है कोइ ॥ अर्थ व्यक्त जहँ उल्ल
 सत वही प्रसादौ होइ ॥ ४० ॥ वोज विमिश्र
 त सिधिलात्मक प्रसाद को उदाहरन ॥ क
 वित्त ॥ त्रिभुवन चट चट प्रगत प्रकास पायौ
 जोगी जाहि जातन अनल ज्यौ अरनिमै
 चिंतामनि कौं निगमनि बखानि जाकौ
 ज्योति उडगन आदि चंद्रमा तरनिमै ॥ व
 नमै सावानि संग गोधन चरावै लैवै सुख
 पावै खावन ओ भादों की भैरनिमै ॥ स
 लल समीप निरमल शिला पर हरि
 खात दधि भात गिरि कंदरा धरनिमै ॥
 ४१ ॥ दोहा ॥ अर्थ व्यक्त प्रसादतें अर्थ आनि
 जो कोइ ॥ तहां जो अर्थ व्यक्तसौ अलंकार का

सु होइ ॥४२॥ अथ व्यक्तको उदाहरन ॥ वादि
 न ॥ कहां जागे रेन प्राये निपट उनीदे होइ
 सोइ रहौ प्यारे विद्यो आछो परजंका है ॥
 खेलति है चौदिनीमें गालन संग काहुं द्य
 लही को नामलीजे कहा काहु संको है ॥ यो
 ही भले मानमें लगावती कलंक हो को दे
 ल्यो काहु चितामनि रतिहू को अंको है ॥
 पीतरंग अमर सोभयो नीलरंग लाल यूही
 हो गुपाल तुम्हें काहेवो कलंक है ॥ ४३ ॥
 माधुर्यको उदाहरन ॥ सवेया ॥ व्यासने आदि वा
 है कविजे जग ऊपर सोभा सहूह विसेरौ
 इंदु कहा अर विंद कहां हो गुविंदयो अन
 नके समलेखौ ॥ तौ सिगरे फल भाग गनौ
 मन आपन भागनिकी थनि लेखौ ॥ तौ पुनि
 मैनके वानन वारिये वारका नंद कुमा रहि
 देखौ ॥ ४४ ॥ समताको उदाहरन ॥ दोहा ॥ जाले
 पदगाम तुलित है सो समता पहिंचौनि ॥ यो मेक
 हो प्रकार्यो विषम बंधु जनि अंनि ॥ ४५ ॥
 अर्थ प्रौढ में जहं काहत दोष वखान्यो जात
 काहुं प्रवृद्धन में जु मग रंको कहा सुहात ॥
 ४६ ॥ चढे जु तुम मन हर थनुष तौ तुममें दल

कोइ॥हमसौ तमसौ भलीविधि हुंदजुद्ध पु
 नि होइ॥४७॥कथा मध्य जो कहि गये प
 रस रामकी उक्ति॥वैनन उद्धत रीति विन
 वामे ऐसी युक्ति॥४८॥जहं समता जो पद
 निमै वद्ध वद्ध नुप्रास॥शब्द अलं कारण
 विधे तिनको प्रगट प्रकास॥४९॥समता
 को उदाहरन॥वाक्त्रि॥चिंतामनि कच कुच
 भार लंक लचकात सोहे तनका छविखान
 की॥चपल विलास मद आलरुवलितनप
 न ललित विलोकनि लसति मृदुयानिकी
 नाक मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली
 नी रुचि संख्या राग नखत प्रभानिकी॥व
 दन कमल पर अलिज्यो अल कलोल
 अमल कपोलनि भलक मुसक्यानिकी॥
 ५०॥सौकुमार्य अप रष वदन अतुत कादुदो
 ध अभाउ।उज्वल वध्यनु कांति यह गाम्य
 अभाउ गनाउ॥सौकुमार्यको उदाहरन॥सवै
 या॥वामनि मंदिर की छवि चंद्र छपाकार
 की छवि पुंजनि पोरव्यो॥पादकौ स्वच्छ म
 नोहर चादनी चापुलै मेन महा बल रोव्यो
 सुंदरि को मुख चंद्रको छाडि चकीरन चंद्र

मयूषन चोख्यो ॥ चंद्र सिलानिते नीरु भा
र्यो सुसर्वे तियको विरहा गिति सोख्यो
५१ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थमे लक्षणा तें गुणवर्ता
तिथि जानि ॥ अब वरनत प्राचीन मत
इतें अर्थ गुण मानि ॥ ५१ ॥ प्रौढ सुव्याधि
समास पुनि बोजा प्रसाद वावनि ॥ पुनि
माधुर्य उदारता सुकु मारता जुजानि ॥ ५२
अर्थ व्यक्त पुनि प्रौढें कांति श्लेष वल
नि अवे वस्य है सांनिकी अर्थ दृष्ट हो
नि ॥ ५३ ॥ वरनी एक अजोनि है अर्थ दृष्ट
यह कोइ ॥ अन्य ज्ञाया जानि पुनि अर्थ
इत होइ ॥ ५४ ॥ प्रौढा कोल ॥ वाक्य रच
न पद अर्थ सैं एक प्रौढ यह कोइ ॥ वा
क्य अर्थमे पद रचन प्रौढ दूसरी होइ ॥ ५५
पदार्थमे वाक्यार्थ कथन ॥ अत्रि नवन सं
भव सदां संभु भौलि वान वास ॥ पति विर
हित तिय वध सिख्यो कात यह नीति दि
लास ॥ ५६ ॥ उज्वल वेष विलासिनी उज्ज्व
ल जाकी दृशं ॥ कांत हेत लंघनको चर्या
चांदनी मांहु ॥ ५७ ॥ वाक्यार्थमे पद रचना ॥
यह स्यात्त लक्ष्म विरहा लक्ष्मी तिली है जाहि

सोस्यामा अभि सारिका सुहात सुहात फा-
 ल चाहि ॥ ५८ ॥ एक वाक्यार्थ में अनेक
 वाक्यार्थ कथन ॥ कविता ॥ वामून कहा ऊँ वै
 से जप तप हीने वै वै जनम विनायो है
 असाधुनके साथमें ॥ कौन गढ़ मेधी जोप
 अतिथ न पूजे कैसे पंडित हैं आनवस
 भटवै अकाथमें ॥ चिंतामनि कहै वैसैं
 कवि पद पाऊँ जोन कवहुँ गुविंदजूको
 गाँऊँ गुन गाँथमें ॥ पतित बनाइ भयो वा
 त जोवनाइकी सो पतित पावन परमेश्वर
 के हाथमें ॥ ६० ॥ दोहा ॥ बहुवाक्यनको अर्थ जो
 एक वाक्यमें होइ ॥ याहुँ प्रौढ समास यह
 वरनत है कवि कोइ ॥ ६१ ॥ अनेक वाक्यार्थ
 लको एक वाक्यार्थ करि कथन रूप समास
 गुनको उदाहरन दो-वाल अथर रद उरज छ-
 वि बीज फूल फल ऊँद ॥ वैस संध्य में हाँ
 हि लीं लई विचारी लख ॥ ६२ ॥ याविधि के वै
 चित्य में अलंकार कछु होइ ॥ एजो वर्नत
 अप्रं गुन हमुभी सुतोन कोइ ॥ ६३ ॥ साभि
 प्राय पदनि कथनि वोज अर्थ गुन कोइ ॥
 अप्रुकार्य पद दोषको इहाँ अभौवे होइ ॥ १

६४॥ साभि प्राय ब्रोजको उदाहरन ॥ कवि
 ज ॥ हौंते हों अनाथ तुम माथनको नाथहो
 जू दीन तुम दीन वंधु नाम निजुकी नोहे
 हौंते हों पतित तुमपतित पावन वेदपु
 रान वरवान कछू कह्यो नानदीनोहे ॥ कद
 वारी सेव हौंते काहा मेरी सेवा रीको आप
 हीते आपरोके चिंतामनि लीनोहे ॥ अदभु
 मे मेरी रक्षा करवेही परी राम रावेही मोहि
 नितु नातो जोरि दीनोहे ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ जहां
 अधिक पद परान नहिं दिखला नानकजु प
 साद ॥ सुतो अधिक पद दोषको यह अभा
 व अविवाद ॥ ६६ ॥ अर्थ गुन प्रसादको उ
 दाहरन ॥ दो कुंदनदरपन तुलित तनु बसन र
 कुसुमी रंग लसत लाल मनि बैलही ल
 ल वाल सब अंग ॥ ६७ ॥ लक्षो उल्ल वैचित्र
 जो सोमाधुर्य निहारि ॥ यह अलपी गुन
 दोषकी दूहो अभाव दिखारि ॥ ६८ ॥ दोषी च
 र्या ज्ञानका आशी मनकी जीति ॥ संरानि
 सजन की भली नीकी हरिकी शीति ॥ ६९ ॥
 मंगल मय कोमल अरु हृवा सादा वला
 नि ॥ अमंगल्य अलीलकी यह अभाव मन

प्राणि॥७०॥ करि लीजै उत्तम क्रिया हरि
 पद प्रीति विशेष॥ रहत सदा उत्तम पुरुष
 या जगकी रति सेष॥७१॥ अर्थ वीज अ
 ग्नामता उदारता सो जाँनि॥ ग्नाम दोषको
 सृजन द्विति इहो अभावे मानि॥७२॥ सो
 हि मेन चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥
 सुंदरि सो तोपर सदय भलो भागदूतहेत
 ७३॥ जाको से सो रूपहे ते सो वरनो होइ॥ स्व
 भावोक्ति अलंकार यहु अर्थ व्यंग जोकोइ॥
 ७४॥ कविता॥ लालसौं जटित लसै ललित
 लदन बीच लाल मुख लटकन ललित ल
 लाहको॥ बडी बडी आँखें नीकी नाक मध्य
 भालदात बडी मुक्ता हल अनुल छवि टा
 टको॥ चिंतासनि सोहतहे अति अभिराम
 तन इंडी बर स्याम मन हरन निराटको॥
 चेरी हम तेरी बडु भागिनि जसोदा किलका
 नि लखि टोटाकी बटोही मोहे वाटको॥७५
 दोहा॥ रसनध्यानि गुनि भूत पुनि व्यंग जहाँ
 रस होइ॥ सुनौ दीप रस रूप बह काँत वावा
 नत सोइ॥७५॥ रस धुनि गुराणी भूत व्यंग्य
 को उदा हरन॥ आगे कही वाक्य भेद निर्ण

य विषे ॥ क्रम कौटिल्य जो अप्रगट उपमां
 दिक्का जृक्ति ॥ जो धटन यह अर्थकी त
 हंश्लेष की उक्ति ॥ ७६ ॥ कवि चातुरी विचि-
 त्ता यह गुन वेषों करि होइ ॥ अक्रम मंग
 अभाव वह अवे अस्य गुन कोइ ॥ ७७ ॥
 अश्लेष गुनको उदा हरन ॥ कवित ॥ एक
 पलका पै वैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
 कौ छवीलौ लाल अयो रति केलि पर
 चिन्तामनि कोहे अनि वंद्यो पीतम पै काहें
 सों कछून कहि कौ सकात दुहूँके डर ॥ सुख
 के मनाद्वे कौ सेकाको दिवायो नाहें वि
 परीत रतिको स्वरूप लखि चिद्रपर ॥ जोलौं
 वह सवुचनि अंखें मूदि रही तौलौ व्या
 रे प्रान व्यारीके उरोज कार पर ॥ ७८ ॥ वैध
 व्यको उदा हरन ॥ दोहा ॥ असन उदय रवि
 होतहै असने अथवात अनि ॥ संपति वि-
 पति वडेन कौ रके क्रमसों जानि ॥ ७९ ॥
 अजोअ अर्थको उदा हरन ॥ दोहा ॥ चंद्र दि
 पत रमनीय राचि सरद दिमल नभस्यां
 म ॥ मानौ कौस्तुभ मनि लसत हरिउरमें
 अभिराम ॥ ८० ॥ अन्य दृश्या जीनि को उदा

हरन॥ दोहा॥ चाप मुकुट पद तडित वग पां-
 ति मुकात में दाम॥ कनक लता लखि ऊनये
 आइ इतै धन स्याम ८१
 इति श्री चिंतामनिकावि रचिते कावि कुल
 काल्य तरो प्रथम प्रकारां १ अथ अलंकारः
 ॥ दोहा ॥

शब्द अर्थ गति भेदसे अलंकार द्वे भांति
 अलंकारा आदिका शब्द अलंकार की पां-
 ति ॥ १ ॥ वक्रोक्ति अथु प्रास अथु कहिला
 दा नुप्रास ॥ अथु स्लेषो चित्र अथु अथु न स-
 ति वेदा भास ॥ २ ॥ सात शब्द अलंकारये
 तिनमें शब्द जोहोइ ॥ ताहीने पर्जय पदादि
 येन भासे कोइ ॥ ३ ॥ अलंकार ज्यो पुरुष
 के हारदिक मन आनि ॥ प्रासो पम आदि
 क कवित अलंकार ज्यो जानि ॥ ४ ॥ वक्रो
 कति नुप्रास ल ॥ और भांतिको वचन जो
 और लगावे कोइ ॥ कै स्लेष कै काकासो व-
 क्रोक्ति है सोइ ॥ ५ ॥ स्लेष वक्रोक्ति को उद-
 हस्त दो ० ए वृष भानु सुता निर्गिव पर
 जामुने सम भौन ॥ सिखई जीवन चातुरी
 एत बीलो उर रोम ॥ ६ ॥ काक वक्रोक्ति को

उदा हरनदी गुरवरवस परदेस पिय आ
 यो ललित वसंत ॥ अलि कुल कोकिल
 ता विना नहि सैंहै सरिवंता ॥ ७ ॥ अनुर
 प्रासको लक्षणा ॥ समता जो आवरन की
 अनुप्रास जो जानि ॥ छेक वृत्ति द्वै भांति
 सो द्वै विधि ताहि कवनि ॥ ८ ॥ छेक अनु
 प्रासको लक्षणा दो ललितैहै आवरन की
 वारक समता होइ ॥ चिंतामनि कवि का
 हत यों छेक काहावै सोइ ॥ ९ ॥ छेक अ
 नुप्रासको उदा हरन ॥ दो ॥ जो अनेक सुखा
 मा सदन मधुर मंद सुसक्यानि ॥ वृज जी
 वन आनंद धन नंद नंद लखि आनि ॥
 १० ॥ वृत्ति अनुप्रासको लक्षणा ॥ दो ॥ एक अने
 काक्षर रचत वार वार सर होइ ॥ चिंताम
 नि कवि काहत है वृत्त्य काहावै सोइ ॥ ११ ॥
 वृत्ति को उदा हरन ॥ कवि ॥ तैसुनु कूरख
 रेखर वाहरखरे खरके दिग तोहि पतैंहैं ॥
 मूरखनेरीया दुर्गम लंकाहि खेलहि में रघु
 नंदन सैंहैं ॥ * ॥ * ॥ मुंडकी माल है पाई म
 हेस सों संपति राम छिडाइ सुलैंहैं ॥ कुंड
 ल मंडन मंडित मंजुल मुंडकी माल ली

राको देहें ॥ १२ ॥ अथ प्रतिभेद दो माधुर्यो विजक व
 रन उप नागरिका होइ ॥ मिलि प्रसाद पुनि
 कोमला पुरुषा वोज समोइ ॥ १३ ॥ विदभी पंच
 लजो गौडी थरस नवीन ॥ रीति वाहत कोऊ
 उन्हे दृति जेहै सती न ॥ १४ ॥ उपना गरिका ॥
 दृतिको उदाहरन दो छ किअनंद रति रंगके थकि
 त अंग सुकुमार ॥ मग पग मंद गयंद रति थ
 रति तरुनि कुच भार ॥ १५ ॥ कोमलाको उदाह
 रन दो केहूवो विसरति काहों वह सुसकयानि अ
 नूप ॥ लग्यो अरी हियरा लग्यो ललित लालको
 रूप ॥ १६ ॥ खान पान परिधान सब ज्ञानन वि
 संसो वाल ॥ यो मांही तुमको निरखि तुम नि
 र्मोही लाल ॥ १७ ॥ पुरुष दृतिको उदा हरन ॥ ध
 नादरी ॥ उदय रविकरत तमरासि संहरत म
 न ध्यानके धरत तमरासि फाँटे ॥ परम किर
 पाल प्रभु पलक पाइन परत प्रीति करि पुन
 के पुंज पाँटे ॥ नामके जायसो अमाप संपति
 करै प्रवल परताप की टाट टाँटे ॥ विधन अति
 सधन अथ सधन वंकट निपट विवाट संकाट
 कटक प्रकट काँटे ॥ १८ ॥ लाटानु पासको लो दो
 तात पंथके भेदतैं दीनो जो पद देखसो लाटानु पासहै

समुभासज्जने लेइ ॥ १८ ॥ लाटा मुपासको उदा
हरन ॥ * ॥ तोमें दोष कछु नहीं होत न क्यो
पर तोष ॥ दोष जु देखत आपुमें बूढ़े तिहारो
दोष ॥ २० ॥ जमककी उदाहरन ॥ अर्थ होत अ
न्यारथक बरननको जहं होइ ॥ फेर भवन
सो जामकाहि बरनत यों सबकोइ ॥ २१ ॥ जम
ककी उदाहरन ॥ चंदन मुद सम जन परहि
चंदन जेठ अमान ॥ कुंदन रद तनु छवि निर
खि कुंदन रदन समान ॥ २२ ॥ फूली पोंति इ
ती सुरभि कोलिन गवन ॥ करहे साल लह
लहे लही छवि घन ॥ गावत कोकिल बानी
पंच महन धन ॥ सुदित सुमन सोहे मधु प
गन ॥ २३ ॥ पद अभिन्न भिन्ना रथका वाहतत
हां अश्लेष ॥ याको देत उदाहरन सु नहु लुका
वि सुवि शेष ॥ २४ ॥ सरस रसी सुखत धिरह
ग्रीषम ऋतुको घाम ॥ जीवन वामें अलपहे
सुधि लीजै घन स्याम ॥ २५ ॥ हा दूहिवो चा
लम विरह वज्र भयो वरजोर ॥ घनी मही
घनकी धमका धरवयो नही कटोर ॥ २६ ॥ चै
पर खेलत है काहों जगहै जीति सुभाइ ॥ ला
ल जातुहै हाथतें अरी चुके यह दाइ ॥ २७

कविता॥ वसन दिशा है और वासन कपाल
 कार विषो खादू रहे पै न होति हिय हानिये
 चिंतामनि कौहे ऐसी रीति होइ दू सक कीन
 कोऊ भौत मॉने जाको सोंची बात मानिये
 लायत पहार पर गहत जाती को बेष सांय
 भल संगपेन संका उर अनिये ॥ भसम लगा
 वे रहे रहे शूल धरे सदा जाके शिर जार्द्धन
 ताकी सही शूल जानिये ॥ २८ ॥ वडू आदि दे
 कर वरत्व काम धेनु दे आदि ॥ चित्रालंक
 त बहुत विधि वरनत सुकवि अनादि २९
 जोर घोर पर पीर हर सर वर धर धर धीर
 मेर सूर पर देर कर सर कर धर नर धीर ॥
 ३० ॥ खडू बंध कपाट बंध कमल बंध अम्रग
 ति गोसूत्रिका बंध दूतने बंध या दोहामे देखि
 ये ॥ दोहा ॥ एक छंदमे छंद बहु काम धेनु दे मो
 ३१ ॥ बहु छंदन भारवो बहुत यहौ कहत कविको
 ३२ ॥ ३१ ॥ काम धेनुको उदा हरन ॥ सवैया ॥ चा
 तले सह नैन स मोहत पेषिय सांबरो देह
 लहार्ड ॥ साजात नैननि चैनजे जोहत सेखि
 वै लेय अजाके गनार्ड ॥ सीपीत हो गुनजेम
 न मोहत लेखिये तीमन को बल मार्य ॥ सुंद

रत्ना जित मैं नजे सोहत देखिय रूप उदार
 कान्हाई ॥ ३२ ॥ सर्वतो भद्र ॥ मनिनें नितही
 कारिके मति रामें जपे यों कही है भली स
 वसों ॥ गनिनें हितही भरिके अति कामें
 हयै यों सही है चली तवसों ॥ जनिनें चित
 ही धरिके अतिही रति तामें चही है नली
 अवसों ॥ धरिनें नितही अरिक्के तित नामें
 लपे यों गही है गली जवसों ॥ ३३ ॥ दोहा ॥
 भिन्ने पदन में एक सों जहाँ अर्थ आभास
 चिंतामनि कवि कहनसों पुन सङ्ग वदभास
 ३४ ॥ तन सुवरन कंचन तुलित थन वादर
 सम वार ॥ आँखे सरसी तीरसी सुंदर रूप उ
 दार ॥ ३५ ॥ सव्व चित्र दूत स सबै अक्षम वा
 वित पहि चानि ॥ जेतै हैं ध्यनि हीनतें अर्थ
 चित्र सोमानि ॥ ३६ ॥ सधना श्रित गुन्या स
 मुभा शब्द अर्थ श्रित जानि ॥ अलंकार द
 हि विधि गये विद्या नाथ वदति ॥ ३७ ॥
 इति श्री मत चिंतामनि विरचिते क
 वि कुल कल्प तरौ शब्द अलंकारनि
 रूपनं नाम द्वितीयं प्रकरणं २ ॥
 शिव गिरि पर गज मुख मुदिता राजात मि

रिजा पौर ॥ एक विनायक करत है एक वि
 नायक सौर ॥ १ ॥ जामें मंजुल आनसों स
 मता वरनी होइ ॥ वरा मान कछु वस्तु जो उ
 पमा कहिये सोइ ॥ २ ॥ सो पुनि श्रीत्री आ
 रथी द्वे विधि चितमें ल्याय ॥ पूरन लुप्राभे
 दते दोऊ दुविध गनाय ॥ ३ ॥ ज्यों आदिक
 पदके दिये श्रीती उपमा जानि ॥ सदस तुल्य
 पदके दिये होति आरथी आनि ॥ ४ ॥ उप
 मा नो उप मेय पद उपमा वाचका होइ ॥ अ
 र साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ ॥ ५ ॥
 प्राब्दा पूर्णो उपमा को उदाहरन ॥ नाह बचार्
 विरहते आइ अचानक रोह ॥ दवा बीचकी
 बेलि ज्यों उमडि वरस जल मेहदक श्रीय
 दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविको
 वरनेद्यों ॥ श्रीपति आपही वृभात है अरु दे
 खि महा छवि रीभात है यों ॥ लालनके भाभ
 रीनिके मंदिर सुंदरी छंदन सों भालके यों ॥
 लाल सलाकन सों जवारे विलसे मृनियॉन
 भरे पिंजरानज्यों ॥ ७ ॥ अर्थी पूर्णो पमा को उ
 दाहरन ॥ दोहा ॥ बल कल चीरजटा धरें गं
 गा जूके तीर ॥ राम लखन दोऊ जाने भये रि

धिनके लू॥८॥ जहाँ एक है तीनोंको लोप
 चारिमें होइ॥ चिंतामनि कवि कहतहै लुप्रा
 काहिये सोइ॥ उपमान लुप्रा॥ चिंतामनि मनु
 जगतमें दूढ़ फिरौ चहु ओर। तोसम तोस
 न मोहनी कौनि तरनि सिर सौर॥९०॥ उप
 मेय लुप्रा॥ सुललित खंजान से चपल वस
 त रहत वैचित॥ तिन परनिवृद्धा वरि करे त
 न मन सब काछु विज॥९१॥ धर्मलुप्रा॥ बदल
 चंद्रसो तरनिकी ओर सुधासे वैन॥ चंदि
 क सी हासी लसे इंदी वरसे नैन॥९२॥ वाच
 का लुप्रा॥ सजल जलद अभि राम तनु त
 डित ललित पट पीति॥ नंद नंदन सुखिचं
 दमुख चौरा चित नव नीत॥९३॥ जितय
 काहिये उपमेय जहंसे उपमान अनेका॥ सोमा
 लोपम जांनिये भिन्न धर्म के एक॥९४॥ अ
 भिन्न धर्ममालोपको उदाहरन॥ वाकित॥ सरद
 तें जलकी ज्यों दिनतें कमल की ज्यों धनतें
 ज्यों थलकी निपट सर साई है॥ धनतें साँव
 नकी ज्यों बोपतें रतनकी ज्यों गुनतें सुजान
 नकी ज्यों परम सुहार्त है॥ चिंतामनि कहे आ
 छे अक्षरनि छंदकी ज्यों निशा गम चंद

की ज्यों दृग सुख दाई है ॥ नगर्तें ज्यों कंचन
 वसंतें ज्यों वनकी यों जोवनतें तनकी नि-
 कार्ड अधिकारि है ॥ १५ ॥ भिन्न धर्म मालोप
 माको उदाहरन क. मालती ज्यों मोदको वटा
 वीत सहज वास सुधा ज्यों जियादूवेकी
 जानन धरति है ॥ चिंतामनि चारों वार वारति उ-
 ज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यों मेरो चित चाडून
 भरति है ॥ करणी ज्यों मंद चारु चलति मय-
 क सुखी मंद राज्यों मोहि महा मोहित व-
 रति है ॥ प्रान ज्यों सुंदरि नेकु हियेते ठरति
 नाहि नाद ज्यों नवेली नैन कोर विह रति है
 १६ ॥ दोहा ॥ इत साधारन धर्म बुध जन द्वै
 भांति गनाइ ॥ वस्तु और प्रति वस्तु सो नाम
 विवोज वनाइ ॥ १७ ॥ एक अर्थ द्वै शब्दों ज
 ह कहिये द्वै वार ॥ काही वस्तु प्रति वस्तु यह
 भावसु बुद्धि विचार ॥ १८ ॥ एक शब्दों अर्थ
 जुग जहां यखान्यो होइ ॥ तहां विंव प्रति विंव
 यह भाव काहै कवि कोइ १९ ॥ वस्तु प्रवस्तु भाव दो-
 निज तनुतें पिय तनु परसि ज्यों सुख अधि-
 क उदीत ॥ आपुनतें पिय पर सुखी अधिका
 प्रेमान्यो होत ॥ २० ॥ विंव प्रति विंव ॥ नाह वचा

र्द विरहते आद् अचानक गेह ॥ द्वा वीचकी
 बाल ज्यो उमड वरस निक्षमेह ॥ २१ ॥ प्रथमहि
 जो उपमेय वह सुनि उपमान जुहोद् ॥ वस्तु औ
 रयो क्रमजु यह रसनो पमहे सोद् ॥ २२ ॥ मति
 सम मूरति मथुर अरु मूरति सरस समाज
 तेजन सहित समात सौ श्री अजेय वृजराज ॥
 २३ ॥ कचन तुलित मन मन तुलित सकल वि
 राजत काल ॥ काजतुलित निरमल सुजस
 सततसाधु शिरताज ॥ २४ ॥ अन्वय को लच्छ
 सा ॥ दोहा ॥ कहिये जो उपमेय अरु वहै जहाँ
 उपमान ॥ ताहि अनन्वय कहतहैं पंडित सु
 कवि सुजान ॥ २५ ॥ हियो हरत अरु करत
 अति चिंतामनि चितचैन ॥ वा सुंदरकोमैल
 ये वाही कैसे नैन ॥ २६ ॥ जहां वरार्य उपमान
 को बढलौ वरन्यो होद् ॥ उपमेयो उमान क
 हि वरनैहै सब कोद् ॥ २७ ॥ नैन कमल सैं क
 मलसे लगत नैनछवि भार ॥ बदन चंदसों
 बदनसों चन्द्र प्रभा विस्तार ॥ २८ ॥ सदृस धर्म
 सो अन्यता संभावन यों होद् ॥ वरार्य भानुका
 छु वस्तुको उषेष्टा कहिसोद् ॥ २९ ॥ उत्प्रेक्षा
 द्वाय्य अरु भय माना और ॥ विनो आ-

दिपदविन गनो प्रतिय माना ठौर ॥३०॥जाति
 क्रिया गुनद्रव्यकी जोहे अर्थ्य वसाड् ॥ताको
 विषय सुतो इहे चोविधदिविध गनाड् ॥* ॥
 ३१॥चौविध चिंतामनि वाहे अर्थ्यवसाड् वना
 ड् ॥क्रमतेदिविध सुजोगर विद्यानाथ गनाड्
 ३२॥ताकेभाव अभाव को वाच्या गम्यो जानि
 हेतु वाच्यता गम्यता वाच्यादिविध बरवानि ॥
 ३३॥...दि सरूपके हेतुहिके फलरूप ॥
 अर्थ्य वसाड् विषयसुयो भेद बहुत जे अरु
 प ॥३५॥वाच्या उत प्रेक्षा विषय हेतुक फ-
 ल जित होड् ॥वाच्यो होड् निमित्त जित ग-
 म्य तहाँ नहि सोड् ॥३६॥जाते वाच्य स्वरूप
 को उत्प्रेक्षाही माह ॥वाच्य गम्यता अर्थको व-
 रनी विद्या नाह ॥३७॥उपात्त गुनि निमित्त जा-
 ति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा ॥दोहा ॥विसद रूप हि
 य रामकृत विलसत वाच उतमंग ॥जनु य
 मुना जल पूर पर भल्लकात गंगतरंग ॥ ३८ ॥
 उपात्त क्रिया निमित्त जाति भाव स्वरूप उ-
 तप्रेक्षा ॥दोहा ॥जघन पुलिन परहीर मनि
 जडित किंकिनी कानि ॥बोलति बोलति मधुर
 जनु कल मराली की मति ॥ ३९ ॥अनु पातर

गुण निमित्त जाति भाव स्वरूपो त्येत्ता ॥ दो
 वदन वंदु समहीर मनि वार सुकात चहु श्री
 रा ॥ सुद्ध विंद सुदर मनो दूदुवाल जुत छोर
 ४० ॥ अनु पाति गुण निमित्त जाति भाव स्व
 रूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ लखे नयन सुदरिनके
 श्री घन स्याम सकाम ॥ विलसति कांचन
 वेलिवन जनु खंजन अभिराम ॥ ४१ ॥ उपा
 त गुण निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येत्ता ॥ दो
 श्री हरि वचन प्रमान जाग की वेधर्म प्रका
 स ॥ यह समभात अव कारत तुम हरवर ज
 वन विनास ॥ ४२ ॥ उपात त्रिया निमित्त जात्य
 भाव स्व रूपो त्येत्ता ॥ दोहा ॥ पंचानन चरचा
 कारत सुनत शंभुको दास ॥ पाष मलम घटा
 मनो पावत भयन विनास ॥ ४३ ॥ अनु यान
 गुण निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येत्ता ॥ विदित
 विभव यह यौ परसु जाके उर निरि हाहि ॥ *
 छत्र चमर आयु धन विन मूपति भूजनु
 नाहि ॥ ४४ ॥ * ॥ * ॥ ४४ ॥ अनु पाति त्रिया
 निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्येत्ता ॥ दोहा ॥ दु
 र्जन दुर्जेन ता प्रगटि सकासन हिये ससोवा
 राम तेज मानो मयो अखिल अवल यहलौ

क॥४५॥जाति हेतू त्प्रेक्षा॥श्री गिरिजा के ध्या
 नते ज्ञान होत मन भरी॥पदनाव विधि अ-
 वलोकित जनु होतु अंध्यागि दूरी॥४६॥जात्य
 भाव हेतू त्प्रेक्षा॥मही महां नहिं कल्प तरु
 यह करि हिये विचार॥जनु सज्जन प्रति पा
 लको कान्ह लियो अव तारु॥४७॥जाति र
 फलो त्प्रेक्षा॥दोहा॥कालिंदी जल गोपिका
 जल मुख छवि अधि वात॥कान्ह भौंन सु
 ख रूप लखि जनु फूलें जल जात॥४८॥
 जात्य भाव फलो त्प्रेक्षा॥दोहा॥चंद्रमुखी यों
 चंद्रिका में कीन्हो अभिसार॥जनु दूरि धि-
 अधि देवता को ध्याधि संचार॥४९॥क्रि-
 या स्वरूपो त्प्रेक्षा॥दोहा॥कुटिल कूवरी आ-
 पने तनमें मन अटकाइ॥जनु चंद्रोवन आ-
 गमन हटवैयो हरिको आइ॥५०॥क्रिया हे-
 तू त्प्रेक्षा॥दो०॥सुंदरि मों है धनुष धर तो मन रं
 वास अनंरा॥लोचन वॉन हनें मनौं ध्याकुल ह
 रिके अंग॥५१॥क्रिया भाव हेतू त्प्रेक्षा॥दो० वा-
 दिनतें मृगलोचनी ललित भई पियराइ॥निज
 छवि अने देखे मनौं वदन कमल कुक्षिलाइ पर
 क्रिया फलो त्प्रेक्षा॥दो०॥करेपो दीन जनु वदन

तेज हीं राम यह नाम ॥ मानोता प्रति पालको तव-
 ही पहुंचे राम ॥ ५३ ॥ क्रिया भाव फलो त्येत्ता ॥ स्व-
 वतार प्रपंच मय आपु आत्मा शुद्ध ॥ कलि प्रपंच
 अन लखन को मनो ध्यान मय बुद्ध ॥ ५४ ॥ गुन स्व-
 रूपो त्येत्ता ॥ दोहा ॥ सांभा धेनु गन इहन की बुद्ध
 रजन गंभीर ॥ खमन नचाइल जानदी मनो
 मुख ध्वनि थीर ॥ ५५ ॥ गुन भाव स्वरूपो त्ये-
 त्ता ॥ दोहा ॥ राम चंद्र की को मुदी की रति विट
 त उदार ॥ स्वत दीप की न्हो मनो यह सिगरी सं-
 सार ॥ ५६ ॥ लाल और के ध्यान जनु कान्ह क-
 हावत लाल ॥ सुंदरि तै जों वस किये सुंदर
 स्याम रसाल ॥ ५७ ॥ गुन भाव हेतू त्येत्ता ॥ दोहा ॥
 श्री नारायण वदन विधु लखि दुष मिटत असेष
 जाते जनु स्व तव परष दग कुबलय अन मेष्ण ॥
 ५८ ॥ गुन फलो त्येत्ता ॥ दोहा ॥ साधु सुदामा को-
 र्दई संपति स्याम निवाहि ॥ उन सेवा की न्हो भ-
 ली मनो इंदू सरिब चाहि ॥ ५९ ॥ गुन भाव फलो
 त्येत्ता ॥ दोहा ॥ देज असाधुन साधु गति यो हरि नाम
 निवाहि ॥ मनो कियो उन की रतन पाप अभावे
 चाहि ॥ ६० ॥ द्रव्य स्वरूपो त्येत्ता ॥ दोहा ॥ चंद्र रिप-
 त रमनीय रूचि सरद विमल नभ स्याम ॥ मनो

दौलत मनि लसति हर उरमें अभिराम ॥ ६१ ॥
 द्रव्य भाव फलो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ उमाड विंदु की
 भांति सौं हरि रवि ससि संचार ॥ तिमिर अच-
 ल कीन्हो मनौं जग अवास संधार ॥ ६१ ॥ २
 द्रव्य हेतू त्येक्षा ॥ दोहा ॥ ओषध पति दुज राज
 धन गनीषम ऊँख समीत ॥ चंद्र करस भौनों
 क्रियों सकल जगत मय सीत ॥ ६३ ॥ द्रव्य भा-
 व हेतू त्येक्षा ॥ दोहा ॥ जल धर मद जल गजन
 जनु किय ससि रूर अभाव ॥ जानैं जात न रा-
 नि दिन प्रावस चरतु परभाव ॥ ६४ ॥ द्रव्य फ-
 लो त्येक्षा ॥ दोहा ॥ यों पैली है चंद्रिका महि अं-
 वर अव गाहि ॥ मानौ उमड्यौ छीर निधि चं-
 द नंद नहि चाहि ॥ ६५ ॥ द्रव्य भाव फलो त्येक्षा
 दोहा ॥ मदन दहन यह जानि यह मदन सहा-
 यक आहि ॥ धरे भुजंगम मह मलय अनि-
 ल विनासहि चाहि ॥ ६६ ॥ यों उत पेक्षा में कि-
 यो विद्यानाथ प्रकार ॥ उपमा हूँ मैं करि सक-
 ल यह क्रम का संचार ॥ ६६ ॥ उत पेक्षा संभा-
 वना वस्तु हेत फल रूप ॥ उक्ता नुक्ता प्रथम
 ये कहत एक कवि भूप ॥ ६७ ॥ सिद्धा सिद्धा-
 स्पद बहु रिथ द्विविध प्रो निरधारि ॥ ६७ ॥ सुभगा कु

वलया नंदमै यहकाल कियौ चित्तारि॥ दिवा सु-
 ता सदा स्वरूपो त्पेत्ता॥ दोहा॥ मुख विधु लखि
 कुचकोक जुग यह विरहारा प्रकास॥ रोमाव-
 लि जनु लई उन दुखन रुधूम उलासा॥ दि० ॥ २
 अचुता सदा हेतु त्पेत्ता॥ दोहा॥ वरसत अंज-
 ननभ मनो तमलीपल जनु अंग॥ स्यामास्या-
 म स्वरूप थरित कौ स्याम कौ संग॥ ७०॥ सि-
 द्धा सदा हेतु त्पेत्ता॥ दोहा॥ सुंदरि भूमि थरेग-
 नो लाल तिहारे पाद॥ मुख समता दूछामनो
 विधु लखि कमल रिसाद॥ ७१॥ सिद्धा सदा व-
 स्तु त्पेत्ता॥ दोहा॥ कुच जीतन कौ हेम गिरि
 शृंगानि सौ संनद्ध॥ भार गहन कौ वानक जनु
 दामन वदनिवद्ध॥ ७२॥ असिद्धा सदा पालो
 त्पेत्ता॥ दोहा॥ सुरज सनमुख जल वसत सह-
 ते सदा दुख कंज॥ सुंदरि पग साजेअप्यको
 करन मनहु तपकंज॥ ७३॥ प्रतीप माँनेत्पे-
 ताको उदा हरन॥ कवित्त॥ अति मनो हर दंप-
 तिके अलिंगन पर वारियत त्रिभुवन सुख-
 मा सुवेखहै॥ चिंतामनि कहै कवि कौहे काहि
 सकै कोऊ अद्भुत कुरूप रचना अलेखहै ॥
 सुवरन लताहै तमाल सुर तह संग धन स्या

म संग थिर दामिनि विसेष है ॥ राधाजूको देषि
 देव वनिता वरवानती हैं ॥ हरि उर निरख परवा
 न हेम रेख है ॥ ७४ ॥ स्मर मरना लंकारको लो
 दोहा ॥ सदृश वस्तु अनेवे सदृश वर त्वत्तरको
 ज्ञान ॥ स्मरन बोलत विबुध जन समभौं सु
 कवि सुज्ञान ॥ ७५ ॥ स्मरना लंकारको उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ दृगन सुधा वरखत सरद रावा
 चंद्र निहारि ॥ सुधि आवत वा वदनकी जाप
 र हौं बलि हारि ॥ ७६ ॥ जहै विषई अस विख
 यको वरन्यौं होइ अभेद ॥ अलंकार रूपक
 तहौं समभौ सुजन अखेद ॥ ७७ ॥ जो अति
 रोहित विषयको उपकारक जो होइ ॥ विष
 र्दसो रूपक वरन यौं वरनत कवि कोइ ॥ ७८
 पुनि दूतसा वयव अस निर्वय वस्तु प्रकार
 द्वै विधि सा वयव पुनि त्रिविधि वरनत वि
 मल विचार ॥ ७९ ॥ सरवधनुष्यक प्रथ
 म वरनत सुकवि विचारि ॥ एक हेस विचर
 न अपर परं परित निरथारि ॥ ८० ॥ निरवय
 वो पुनि द्विविध गन केवल माला रूप ॥ इन
 के देत उदा हरन सुनिये सुजन अनूपा ॥ ८१
 सर्व वस्तु विषयको उदा हरन ॥ कवित्त ॥ को

किल कपोतकीरकुलनि कोकाल काल सारि
 कोला हल दिसि विदिहि में छायेहै ॥ ८१ ॥
 ए राते पातए पताका पाह रात मनि पुहय
 ग थूर अमर उडायो है ॥ भौर साते मान म
 गंजन मतंग छूट मोहन सौं रूखी मत दौल
 मन भायो है ॥ आली महा बली रतिपति म
 हीपति को सोरिह पति सेनापति सेना म
 आयो है ॥ ८२ ॥ रूपक को साधारन उदाहरन ॥
 कविता जाहि मिलि नैन लील कमल रूप
 है कानमुकुत नखत पर वारके विचरै है
 परम मधुर मुखयानि कौ सुदी सौं बडो रु
 खमा गरव वारि जानको विडारै है ॥ नि
 खत सबन कौ सब वरखत को हिये हरखत
 हरि ध्यान निरधारै है ॥ चिंतामनि कहै चर
 कोरन को आनंद मुख चंद्र राधिका सुंदर कौ
 निहारै है ॥ ८३ ॥ एकोदस विवर्ति रूपक को उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ सरद सिंहा सन चमरिवा स
 जल जलज कार अत्र ॥ किरनि माल सुजती
 वली विंधु अनंग सिर छत्र ॥ ८४ ॥ परं परित
 को लछन ॥ दोहा ॥ जहाँ एक आरोप सै आरो
 पान्तर होइ ॥ परं परित रूपक तहाँ चनवि दि

तिहिंकोद् ॥ ८५ ॥ लिख्य विक्षेपेन होइ काह और
 अलि हनिहारि ॥ माला रूपक परं परित रूप-
 क सुभगा विचारि ॥ ८६ ॥ शिल्लह विशेषन प
 रं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ सुंदर नंदन नंद
 को रूप जितो जनु काम ॥ गोपी फूली हेम
 तन वेलि हरिक अलि स्याम ॥ ८७ ॥ शिल्लह
 माला परं परित को उदाहरन ॥ दोहा ॥ जीवन
 दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र ॥ संघ
 रत महरन काला निधि श्री गोविंद विचित्र ॥
 ८८ ॥ अशिल्लह विशेषन माला रूपको उदाह
 रन ॥ वृजजन सुरगत कल्पतरु मन अनंदत
 स वांद ॥ सुरवमा सलिल समुद्र हरि लोचन कु
 वलय चंद ॥ ८९ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ कविता ॥
 मन कुल मंदाकिनि जलक कमल महा राज
 म्हा विमल इकाशित विविधि नय ॥ इंद्रिाव
 न अरविंद नैन दंडु मुख दंडी वर दल दाम सुं
 दर सदा सद्ज ॥ विंतामनि मुनिमन मोरकेन
 वीन धन सीतानैन मीन सुधा समुद्र अनंद
 मयाकौसिल्या कल्प वेलि संभव सुमन राजा
 दशरथ दूध निधि चंद राम चंद जय ॥ ९० ॥ २
 निरवयव को बल रूपको उदाहरन ॥ दोहा ॥ ३

ललित अलका मुख चंद्रपर मनकी यही अगो
 टा ॥ विहरी हैं चंचल नयन भीने अंचल वोटा ॥
 ८१ ॥ निरवय माला रूपके को उदा हरन ॥ ८२ ॥
 दोहा ॥ दर परिसरी वंदर पकी यनकी महज म
 साल ॥ भागिनी की अथि देवता कौन अत्य-
 ही बाल ॥ ८३ ॥ परनामालंकार ॥ दोहा ॥ लखि
 विषई विषयात्मके करत प्रकृति उपलोग
 रूपकाने परनामजो भिन्न कहत कवि लोग ॥
 ८४ ॥ वृज वासिनतें जगत पर और सदा गिन
 जानि ॥ कल्पद्रुम तिनको भयो अप्रापु अ-
 त्मा अनि ॥ ८५ ॥ जहाँ विषे विषई सुभगक
 वि संमत मत लाहि ॥ सो देहास्यद होत है कवि र
 संदेह तहांहि ॥ ८६ ॥ प्रथम कहत निश्चय गर-
 म निश्च यांत पुनि जान ॥ अलंकार संदेह य-
 ह सजन द्विविध मन अंत ॥ ८७ ॥ दर्पन धोयो
 ललित कित ससि थों किते कालंका ॥ अंबुज
 थों विलास यों तिय मुख लखि मनसंका ॥
 ८८ ॥ निश्च यांत को उदा हरन ॥ स्वैय ॥ स्वं ज
 नहं थों उडातन अंबर वांजि है थों थिरता नहि
 चीन्हें ॥ भृंग है ह्यामल स्वतन वदू थों मीन है
 नैनन सों दृशु दीन्हें ॥ कांसे बान थों पांसे २

तुनेहमय अथ याथल दै विन कीन्है ॥ नैनन
 चैन करै निरखें अति नैनीति नैनस जानिजु-
 लीन्है ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ जहां होतुहै प्रकृतिमें अ-
 प्रकृतिहि कौं ज्ञान ॥ भ्रूति मान यासों कहत
 पंडित सुकवि सुजान ॥ ८९ ॥ फटिका महल
 चरि विधु मुरवी देवत श्री नंद नंद ॥ काह्यौ
 सरसीसों हरि चलो ऊपर आयो चंद्र ॥ १०० ॥
 अपन्हुत ॥ विषई को आरोप कौ करि जो वि-
 षय निषेध ॥ ताहि अपन्हुत कहतहैं धर्म-
 हि समुभि सुमेध ॥ १०१ ॥ काविता ॥ वारन मत्त
 विदारयो महा तम देखि महा तमकी अधिका
 र्द ॥ अंकमें मारि गह्यौ वार सायल जानत लो-
 क बालक कारार्द ॥ १०२ ॥ सेवचै मृग लो-
 न्दी कान्ह समीप वसैतौ भलार्द ॥ आवत ऊ-
 पश नंदहि मंद सों दूद नहोपमृगेंद है मारि ॥ १०३ ॥
 उल्लेख को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कहं ग्राहक को
 भेद कहु विषय भेदसा होइ ॥ एकहि को उ-
 ल्लेख वह कहि उल्लेख जुसोइ ॥ १०४ ॥ ग्राम
 भेद उल्लेख को उदा हरन ॥ दोहा ॥ दीन दया र
 जल कौ जलधि सकल कामिनी काम ॥ कहत
 अक ज्ञान कालपतरु रामहि सिपु जम नाम १०५

विषय भेद उल्लेख को उदाहरण ॥ दोहा ॥ कत
 तस्याम को कल्प नरु पूरुन लखितव साध
 दीन दया निधि सव जगत तुरवमा सिंधु अ
 गाध ॥ १०५ ॥ शिल्लु ल्लेख को उदाहरण ॥ दो
 जीवन दायक देखि कौ वृज वासी अत स्याम
 कौन्हि भक्त मुकुंदा नीकहत का भिती का
 म ॥ १०६ ॥ पर नामा उल्लेख ए दोहर रूपका
 मां हि ॥ भिन्न अंस हात रूप तौ संसट करै
 नां हि ॥ १०७ ॥ अति शयोक्त को लहरा ॥ दोहा
 पौढ उक्ति जो कविन की अति शयोक्त है
 इ ॥ भिन्न अलंकार भेदों भिन्न बाही कौ
 इ ॥ १०८ ॥ जहाँ ज्ञान उप भेयको उपलाना
 में होइ ॥ प्रकृति को जो अन्याता कहै वौ
 वि जोइ ॥ १०९ ॥ जो यह वौ तौ होइ जो का
 धि के अभिधान ॥ कारज पहिले ही कौ
 छे कहै निदान ॥ ११० ॥ अति शयोक्ति
 धि मंसट कथन प्रकार करत चिंता मंस
 सुकवि निज मति के अनुसार ॥ १११ ॥ अ
 ति शयोक्ति यथा काम उदाहरण ॥ दोहा
 न मंडल बेलिके मूल लगे अकलंक मय
 कात वौ है ॥ नील लहरा भरे मधु विंदन

सरनारका हृद स्वयैहै ॥ डोलतु है तिल मूज
 के पौतव श्रुकी लखे छवि कौन छवैहै ॥ गो
 हके हृदमैकाहू महा रुच्यती जनको जनु पुन्य
 पवैहै ॥ ११२ ॥ * ॥ डोलनि वो लनि आंन
 काछू लवकै काछू आंन रुभा यहि जोऊ ॥ १
 आंन काछू परिहास विला सहै आंन हसी
 महु सुधि हि सोऊ ॥ आंन काछू दृग कांज चि-
 तौ विहै आंन काछू ह्यति दांतनि होऊ ॥ येहीवै
 वो परहै तममै मान लवै जहाँ करना करहो
 ऊ ॥ ११३ ॥ सरितो समहोन को सारदा सौं का-
 मला मिलिबैस ह्यरूप थै ॥ पुनि ताही स्वरूप
 में चंद्र मुरवी सब चंद्रिका आपनी चंद्रभरे
 मति तापर जोतप कोरि करै पुनि तातप पै
 जो विरंचिदरै ॥ तिहुंलोका की सुंदरता हरिकै
 तवतोली जो वाहि करैतौ करै ॥ ११४ ॥ दोहा
 रोप काशिगिन के मननि लखि छवि धन
 धन ख्याल प्रेम उमग पहिले भद्र पीछे व्या
 यो काम ॥ ११५ ॥ रत्नप विशेष धन बल उदुल
 जो काछू शौकी होइ ॥ याहि समां सो कति
 काह ॥ पंडित नमद कोइ ॥ ११६ ॥ अति पवित्र
 जल दालना सुसुदिन नित अथि काइ ॥ फूली

है पीत देवता दुज पतिको पीत पादा ॥ ११८ ॥
 स्तुति वक्र विशेष वन कहा जायल है ॥ ११९ ॥
 प्रस्तुति गमित समा सोता कोहे र बांदा ॥ १२० ॥
 जोन अलिंग देत धन कुम दिन वीं आनंद
 निसा वदन चुंबन काल उदित भयो जाद चं
 द ॥ १२० ॥ शिलसु विशेषन होत कहें कहें साधा
 रन जानि ॥ उपमावर्धित होत कहें लज्जन
 मममन आनि ॥ २२० ॥ कहा सुदित अतिही
 मई पतिको आगम जानि ॥ प्रगटै चारु सव
 क राचि निसा वदन मुस कजानि ॥ १२१ ॥ जा
 को रूप स्वभाव अरु त्रियाशु जैसी होइ ॥ १२२ ॥
 ताको तैसोई कथन सुख सोदीहि काहि कोइ ॥
 १२२ ॥ काकिता ॥ जसु मति मैया होऊँ मैया बडे
 हैं हैं सदा चिंतामनि वैरिन्दो उर न नैं लालिों
 सर वरषन गोपकुल हरषन लाख लाख वरषन
 वजभूमि प्रति पालिहैं ॥ ललित ललाट परलतवी
 हैं लटैं मानो वंदन कमल परमधुरकार आलिहैं
 देख लाल पलकाकी पाटी को पकारि खरे खेल
 त हंसत किलकत हांस हांसिहैं ॥ १२३ ॥ दूसरो उराह
 रनाकुलही ललित विलसति चरा दो ॥ प्रगटित वस्तु
 छपाइयै जोवनाइ कछु काज ॥ व्याजो की ॥ तहें

दाहृत पंडित सुकवि समाज ॥१२५॥ कौन्हे हिल
 रिव सुलवित कहति कालिंदी तट नारि ॥ ज-
 तानंग सीतल काहौ सजनी वहति वयारि ॥१२५
 तंग अर्थ कोरावू बल द्वेषाचक पद रुका ॥ त-
 हां सहो कति होति है यौ कवि करत विवेका ॥
 १२६ ॥ समुनि हिद्ये पति आगमन उमग्यो अ-
 ति आनंद ॥ लस्यो निरासुर बंदवलि सततत
 यो सुखचंद्र १२७ ॥ जाहौ कछू विन होत कछू र-
 त्य अरभ्य जुवात ॥ पुथ जन मत सो विन उ-
 वात अलंकार कहि जात ॥१२८ ॥ अन्य वि-
 शत विन होति है विद्या विमल अनूप ॥ विन
 केवत को कावित यह ताहि गनत कवि भूप ॥
 १२९ ॥ निहत नृपति विवेक विन चरचा को
 है साध ॥ दान विना सन मानको विना दान
 को दाय ॥१३० ॥ प्रतुति मैं जहं औरसों गुन-
 दः शास्य निहारि ॥ एक रूप तावरनि ये सो
 सान्ध विचारि ॥१३१ ॥ चंद्र लेपन मुकत
 तप अर्यो सुभजन चीरातरनि चंद्रिका मि-
 लि यहै मनौ संख को रवीर ॥१३२ ॥ ८८८८८८
 तज ॥ ७७ ॥ शास्य गुन गहै आनि के कोइ ॥ अ-
 तं वारन जन सुनौ कवि जन संमत होइ ॥०

१३३॥ तिस मंदिर की इंदिरा पति को भाग्य उदो-
 त ॥ तन की दीपति सौध गृह सब सुवरन की
 होत ॥ १३४ ॥ और वस्तु गुन को गहन जहन का
 रे कछु वात ॥ ताहि अंत गुन कहत हैं जो क-
 वि मति अधिकत ॥ १३५ ॥ गंगा जल उक्त-
 ल जमुन जल छवि अंत समेत ॥ दुहें म-
 थ्य मज्जन कारतु हंस सेत को सेत ॥ १३६
 से विराध अवि रुद्र मै जहं विरोध अभि-
 थान ॥ सुतौ जानि गुन क्रिया अरु द्रव्य मा-
 हं स ज्ञान ॥ १३७ ॥ जाति जात्या दिक्कन सों
 गुन गुनादि सों जानि ॥ क्रिया क्रिया अरु
 द्रव्य सों द्रव्य द्रव्य सों मानि ॥ १३८ ॥ यों विरो-
 ध दश भाति सों मंमट गये बरयानि ॥ तिन को
 देत उदा हरन सुकावि लेहु मन मांनि ॥ १३९
 जाति जाति विरोध ॥ दोहा ॥ अभिनद नलि-
 नी दलकमल सेवल मृदुल मृनाल ॥ अन-
 ल भये या बालको विरह तिहारे लाल ॥ १४०
 परवत मै तावन भये मावन मृदु पयान
 ललित पल्लवित वेसिहुम सब फल पू-
 ल निदान ॥ १४१ ॥ जाति गुन सों विरोध ॥ गो-
 पद पुहमी कानक मय शिरि सर घप को मि-

त्ता॥ समुद्र अंबु कन होतु है भयो सखिन के चि
 त्त॥ १४२॥ जाति क्रिया सों विरोध॥ दोहा॥ जे
 जन साथत साथु जन वचन सुधाको पान
 जन्म मरन भय रहित ते सोइ पावत कल्या
 न॥ १४३॥ गुन सो गुन विरोध॥ कहां चढा
 वति है सरखी वंदन चंदन संग॥ सीतल सब
 उपचार सरखजारत मेरे अंग॥ १४४॥ गुन
 सों द्रव्य सों विरोध॥ दोहा॥ प्रेम मगन मुनि
 जन काहत हज्जजने धन्य बनाइ॥ में चका
 रचि परमात्मा लोचन गोचर पाइ॥ १४५॥
 क्रिया क्रिया सों विरोध॥ दोहा॥ लखिते सु
 ख परि सुकोमै निज मुख होत निहाल॥ लोक
 पोल चुंबन कारत निज मुख चुंबत लाल
 १४६॥ क्रिया द्रव्य सों विरोध॥ कवित्त॥ जगत
 विदित न्याय मत परिसु यह छोटे जग म
 ध्य परमान ते नैहै कछु क॥ ताहीके समान
 नरच्यो सबही को मनु ऐसी रची है विरंचि
 तुम रचना काछु अचूक॥ चिंता मनि कहै
 ताहि और भांति कारतु है मे नवल वंत याके
 लाइये रे मुहें लख॥ पीतम के विछुरत मार
 मार वानन सों करतु है मार मेरे मनके हजा

रद्वक॥ द्रव्य द्रव्य सों विरोधा॥ कविता॥ मालती
 के फूल मालतीके फल नहीं मारू फूलनकी
 मारू मीठा मारै सुकुमारीको॥ चिंतामनि कहै
 है वरानहीन अंग अंग औरई वरन होत अ-
 निल चिंतामनि॥ भयेहैं जलज वाल सरको
 जलज वाल गिरि गिरि भूत लमें जाये गिरि
 थारीको॥ भयोहै निसाहूं समै काँन्हके वियोग
 सीत^{वार}मान दस भानकी दुलारीको॥ १४८॥ वि-
 शेषको लहरा॥ दोहा॥ विन प्रसिद्ध आधार जो
 काँन्ह अथेय बखानि॥ स्वाहि की दूक दासो
 थित अनेक थल आनि॥ १४९॥ एक वस्तु के
 कारण जो होइ असंख्यो और॥ त्रिविध विसे-
 ष विचारिके कहत सुकादि सिरमौर॥ १५०॥
 देव लोक वासहु भये जिनको उत्तम बानि ॥
 रहति रसावति सक्त नन सोधन कर विनमा-
 न॥ १५१॥ वह मनमें वह दृगनमें वहे वचनहें
 माह॥ वसत तिहारे वास वह हम पावै वितनो-
 ह॥ १५२॥ स्वत उदार सुचार छवि तोहि चतुर
 सिरमौर॥ नई सिरि रति दूसरी रची सारदा औ-
 र॥ १५३॥ जो आधार अथेय की अन लसता
 नहोइ॥ दोऊ को आधिक्य तम अधिक अ-

लंकात सोद् ॥ १५५ ॥ पृथु अधिका लंकारको
उदा हरन ॥ दोहा ॥ जाहि जसोदा गोदमें ली
न्ह मोद आखंड ॥ तावालकके उदरमें लख्यो
एकल ब्रह्मांड ॥ १५६ ॥ दूसरो उदा हरन ॥ कल्प
प अंत जाके उदर सकल चराचर रूप ॥ नंद
नेहनी रोहमें ताहि सुवावत रूप ॥ १५७ ॥ *
अन्यच्च ॥ दोहा ॥ कल्प अंत जाके वसत जग
त सकल सवि भाग ॥ तोहरि अंग अमात नहि
राधेको अनुराग ॥ १५८ ॥ विभावना अलंका
रको लक्षण ॥ दोहा ॥ कारज उत्पति की जहां
कारनकी प्रति धेध ॥ सोसव वाहत विभावना
पंडित सुकवि सुमेध ॥ १५९ ॥ विभावनाको
उदा हरन ॥ दोहा ॥ वान धनुष सब फूलको
सेना अवला संग ॥ वीन हेतु है जीतिवो जीत
तु जगत अनंग ॥ १६० ॥ विशेष योक्ति को ल
दोहा ॥ जो अखंड कारन मिले कारज कछून
होइ ॥ तासो विशेष कति कहत पंडित सत
कवि कोइ ॥ १६१ ॥ कविज ॥ मंडप मृनाल ज
ल जातनके पातनके सेजहूमें विद्ये जल जा
तनके पातहैं ॥ कवी ॥ १६२ ॥ वदनेनी ॥ १६३ ॥ अ
नूपनदी सिकता कपूर चूर अति अवदातहैं ॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल विरहिनीको सी-
 तल अपार उपचार अधिकांत है ॥ एते पर प्रति
 फल विरह अग्नि पीरे पीरे होते पैन सीरे होत
 गत है ॥ १६२ ॥ असंगति को लक्षण ॥ दोहा ॥ हेतु
 और थल में काहुं काज और थल होइ ॥ अलं-
 कार ज्ञाना कहत होति असंगति सोइ ॥ १६३ ॥
 ॥ १६४ ॥ नैन सर मोपै तकि तकि नौह ॥
 सरवी लखी आचरत यह छिंदे सोति उरमांहा ॥
 १६४ ॥ कहि विचित्र सुविरुद्ध फल पावन कोउ
 होग ॥ अलंकार सुन बीन यह वरतत पंडित २
 लोग ॥ १६५ ॥ मनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत
 विमल सुभाइ ॥ सवते ऊंचे होनकों नवत तिहा
 रे पाइ ॥ १६६ ॥ जहाँ विमल देवात काछु करत २
 परस परकाज ॥ अलंकार अन्यान्य यह वरतत
 सब कवि राज ॥ १६७ ॥ अन्यान्यको उवा हरन दे
 नाहि छया वति चाँदनी सहभा वडो उपकार ॥
 विपुल बारतिहे चाँदनी सुंदरि को अलि सार ॥
 १६८ ॥ जो संजोग देवातको जशा जोग कहि हेत
 इ ॥ विषम अलंकार कहत यह कवि पंडित २
 सब कोइ ॥ १६९ ॥ कर्ती कौन क्रिया फलें सुने
 अनर्थ कह्यु होइ ॥ जो कारज गुरा निशे के कल

और विधि सोइ ॥१७०॥ यों विरह तादेरिबके
 विषम कहंत कविनाह ॥ अलंकार कारनाके
 देख्यो संयन माह ॥१७१॥ प्रः विरम को उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ कितसि रीख कोमल अमल कम
 ल मुखी को अंग ॥ कितकर्स वारह रतन ती
 खत तपत अनंग ॥१७२॥ मदन सिली मुखके
 डरन सेयो वन धन कुज ॥ भये महा दुख दानि
 उत दुगुन सिली मुख पुंज ॥१७३॥ श्री हरिज
 अरसी कुसुम स्याम तिहोर ध्यान ॥ विसद होत
 मन मुनिनके विमल शुद्ध विज्ञान ॥१७४॥ तीस
 विषम को उदा हरन ॥ दोहा ॥ मोतन तापसिरे
 सदा मोतन सीतल संग ॥ तेहीने उपज्यो विरह
 जारत भैरे अंग ॥१७५॥ समको लक्षणा ॥ दोहा ॥
 होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग ॥ द्वि
 विधसु वरनते सत असत जोग कहंत कविलो
 ग ॥१७६॥ संजोग समा लंकारको उदा हरन ॥ *
 सदैया ॥ वैदू नके हिन लेत उसासन ए उनके हि
 त होतिहे पीरी ॥ सुंदरना हरि राधिका की लखि
 औरकी सुंदरना विधि कीरी ॥ वैदूत नंद कुमार
 दूतै वृष भानु कुमारिए रूप गहीरी ॥ जो यह जो
 री मिले सरिब होहिं दूतौ अरिबयां सरिबयां-

नकी सीरी ॥१७७॥ दूसरो उदा हरन ॥ दोहा ॥ प्रग-
 ट भई संसार में निंदा वाही जोग ॥ ताके आदर
 करनको प्रगट भये खल लोग ॥१७८॥ के प्र-
 कृत तिन होइ के अप्रकृत को कोइ ॥ तुल्य ध्य
 र्म इका वारही तुल्य जोगता होइ ॥१७९॥ मंड-
 ल विथ मंदा विंती वष वाहन सब गात ॥ स-
 दा सदा शिव त्वं ससि सेवे वात अव दात १७०
 प्रकृति और अप्रकृति की चृति सवाही वार
 कारक की बहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार ॥
 १८१ ॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदूस धर्म संजो-
 ग ॥ गम्य होइ अगम्य जित तित दीपक बुध
 लोग ॥१८२ ॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन औं
 सुहोइ ॥ दाख सिता मधु सुधा स हरिको भाव
 त नहि ॥१८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु जिय
 जन संग सकाम ॥ साधु सकल श्री रामके ना
 म लहत आराम ॥१८४ ॥ देह तरुनि मन गेरु
 पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु वित्त वादि
 नर नीके लगे प्रसन्न ॥१८५ ॥ पूरव पूरव दने
 जो उत्तर को उप कार ॥ माली दीपक होत नर
 समभौ बुद्धि उदार ॥१८६ ॥ कविज ॥ तूतो अती
 चित वैनन मे मन तो महं जीवन मे यह जांति

ता यह जोवन बीच वनाई अनूपम रूप कला
पहि चानी ॥ ताही अनूपम रूप कलामें मनो
रथ भेन महा सुख दानी ॥ ताते वटो मन मो-
हनको मनतो मिलवेके मनो रथ रानी ॥ १८७
दोहा ॥ आवति दूत पुनि जातिहै ललित दि-
खावति गात ॥ मृग नेनी हेरति हंसति काहति
सधुर कछु वात ॥ १८८ ॥ सदूस धर्म बृत्तक जो
शब्द भेद सो होइ ॥ कवित एकद्वै वात भेप्रति
वस्तूपमे सोइ ॥ १८९ ॥ प्रति वस्तूपमको उदाह-
रला दोहा ॥ जो हरिके हियर लगी तरनि सीस
मनि सोइ ॥ तिय गन ऊपर उरवसी सबनि सरा-
ही कोइ ॥ १९० ॥ माला मयप्रति वस्तूपमा ॥
दोहा ॥ हीरसिनेसेतै सुवान प्रथ दौते कैला-
स ॥ ॥ रक्ते सतको हियो थव लैससिरपर
गात ॥ १९१ ॥ मेसथ कृति ही लुंग विधु सीत-
ल विना उपाइ ॥ सहज समुद्र गंभीर अह सु-
जन सुभाइ गनेइ ॥ १९२ ॥ जहं विंव प्रति विंव-
वो भाव सवन में होइ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
खनहु ताहि संव कोइ ॥ १९३ ॥ जहां मूलित द्वै
वस्तुको शब्द भेद अभि ध्यान ॥ सो विंवप्रति
विंव मय भाव कहत सन्तान ॥ १९४ ॥ अलंकार

रदृष्टांत में रदृष्ट धर्म को होइ ॥ विसे बतहु को हो
 दू पुनि विसेष्य मे सोइ ॥ १८५ ॥ लाल तिहारे
 लारवत ही बात हिथे हुलसात ॥ लहनि लरनि
 अव लोकातहि पदमिनि पदमिनि कात ॥
 १९६ ॥ वैथर्मते दृष्टांत ॥ दोहा ॥ काहूं दंभ दंभी
 नको दूर्यौ न रहत निदान ॥ क्षय साक्षही
 होतु है प्रगट वक्रात को ध्यान ॥ १९७ ॥ अन
 होनी जग वस्तुको कछु संबध्य जु होइ ॥ उ
 पमा पर कल्पक दूते निदर्सनावाहीह सोइ
 १९८ ॥ कित अवला हम अल्प मीत कितय
 हु जोग अगाध ॥ कौंकर कौरे पपील का अ
 चल उचावन साथ ॥ १९९ ॥ अलि अंजन
 वंधूका दूति अधर अधर लखि लाल ॥ धरी
 नई दूति दूंदुकी कांत वदन में बाल ॥ २०० ॥
 अपने अपने हतुको जोजा संबध्य ज्ञान ॥ हो
 तक्रियाते निदर्सना ताहू वाहत रुजान ॥ २०१
 कविन ॥ उज्जल स्वक्ष रुदत प्रभाति धरे
 गुन वंत अनूप मजौ है पाइवै उन्नत सोपद उ
 त्तम सोहत है निरखे मन सो है ॥ सो यह बात
 विचारि कौ है म न देख्यो विचारि मतो सबवै है
 मंजुल जो सुकाता हल हार सो नारिके उंचे उ

रंजन सोहे ॥२०२॥ दोहा ॥ अधिक जहां उप-
स्य काँव बटवर नत उप मान ॥ तहं विलरे-
का वनाइ वौ वरनत सुकावि सुजान ॥२०३॥*

काविता ॥ उपमेय गत उत कार्य अस अपक
र्ये जहं उपमानको ॥ जहं होत है इन सुहुनको
दूत काथन सुकावि सुजानको ॥ काहुं काथन
होइ दूहुन काहुं सवाही को जानिये ॥ काहुं धन
व्रते काहुं अर्थते आधिपते काहुं मानिये ॥*

२०४ ॥ दोहा ॥ ए-चारि चारि सुत होत बारह चा-
रि को दिखेखसों ॥ सब मेह स वित रेकायो मनि
जानि लेहु विसेखसों ॥२०५॥ विविधिहाव भाव

ना सहित अति सुंदर जग माहि ॥ सजगि लिहा-
री चंद्रज्यौं बदन कालंकी नाहि ॥२०६॥ रदुं
वाहा प्रवालज्यौं अमल कमलज्यौं नैन ॥ वौं

काहिये कुचदोकाज्यौं कारत वाहा चित चैन
२०७ ॥ सुंदरी तुव अकलंक मुख जिन्यो कालं-
की चंद्र ॥ दृगन जि ते खंजन कमल जनुकी-

लेखि संद ॥२०८॥ निमी अरि कचिहे सदा जी-
ती विजुरी बाल ॥ चिते तिहारे सुजनहें कांजनि
वर्जित सुनाल ॥२०९॥ लकल चासता सहित

मुख क्यौं ससिज्यौं काहि जाइ ॥ देखे कारकार

होत है विद्याल ससंकावलाद् ॥ २१० ॥ एक वाक्यने
 होत है जायन अर्थ अलका ॥ ताको अर्थ सलेख
 काहि कावि जन कारत विवेका ॥ २११ ॥ दृग लखि
 मन सुख होत अति लव लस दुख मिटि जात
 जह दीपति दुति हेवता दरसन पाये पात ॥
 २१२ ॥ साभिप्राय विरो वनन कथन सुपर्यार
 जान ॥ याको दंत उदा हरन सुपादि लेखु लन
 आन ॥ २१३ ॥ वाकित ॥ होतौ हों अनाथ तुम
 अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन वंश नाम
 निजु कीन्हो है ॥ होतौ हों पतित तुम पतित
 पावन वेद पुरान वषानो कछु कहौ जिनकी हो है ॥
 वाव वारी सेवा जो हों काहीं मेरी सेवा रीते आ-
 पहीते आपनो के चिंता मनि लीनो है ॥ अब
 तुम्हें मेरी रक्षा करिबे ही परी राम लखे ही मो-
 हि निजु नातो जोरि दीन्हो है ॥ २१४ ॥ जहं विशेष
 स अमि ध्यानकी दूषण दाथन निवेद्य ॥ चिंताम-
 नि कावि कहत है सो आदिषु पनि लेख ॥ २१५ ॥
 बह मान विषय निवेद्य को उदा हरत ॥ देहा ॥
 काहों न काहू निडर सों हों काहू की बात ॥ विन
 विचार कर वाज अद मरो जू मरिहो पात ॥
 २१६ ॥ उक्ति विषय निवेद्य आदिषु को उदा ह

रत्न ॥ दोहा ॥ प्रेम तिहारे चंद्रिका चंदन कामल
 मृनाल ॥ अनल भये वा वालको कथून क-
 हिये लाल ॥ २१७ ॥ स्तुति निंद मिमिकोर अ-
 स्तुति निंद होइ ॥ चिंता मनि कविकहत है
 व्याज स्तुति है सोइ ॥ २१८ ॥ कविज ॥ जाको क-
 था कोरे ताको संसारे छडावै कोहै चिंतामनि भां-
 ति यह भली मन भाई है ॥ पापी सुकृती नसेसे
 संके गति कोरे इन्है जानै को कहंति भगवौ न-
 थों बडाई है ॥ माया मोहै स्वही को रह्ये व्या-
 थ गनिकाये कीरति सकल जग ऐसी क-
 छू गाई है ॥ रूप जाति गुन कहावै जगत पति
 जगत की प्रभुता थौ कौन गुन पाई है ॥ २१९ ॥
 अस्तुति मिस निंदा मानस तो लीजि वनु पर-
 षि स्वभाव लषि तुम पिय सज्जन सिरोमन
 प्रकास है ॥ जिनके हू चुगयो मन मानिक ति-
 हये सो बहे नष दुति हिये पावतहु लास है ॥
 चिंतामनि कोहै कांटेर काच उर बीच ताही तुम
 लंबे निसिगाटे भुज पास है ॥ नाको सुखमा-
 नि लेत कांठ लौ भलाई कांठों से से स्यास सु-
 हू कथ्ये के निवास है ॥ २२० ॥ अप्रस्तुति
 प्रसंसा को लक्षण ॥ दोहा ॥ अप्रस्तुति के कथ-

न विनु प्रस्तुति जान्यो जाइ ॥ अप्रस्तुति पर
संससो सज्जन सुनो वनाइ ॥ २२१ ॥ कारज के
प्रस्ताव मे कारज को अभिधान ॥ कारन के प्र
स्ताव मे कारज कथन सुजान ॥ २२२ ॥ अप्र-
स्तुति सामान्य जो तहं विशेष कहि जाइ ॥ वा
हुं विशेष प्रस्तुति कहें सामान्यो जु वनाइ ॥
२२३ ॥ कहूं सहस्र प्रस्ताव मै हो प्रस्तुत अभिधा
न ॥ अप्रस्तुति संकार के यंच भेद इतिजा
न ॥ २२४ ॥ ॥ यथा जाम उदा हरन ॥ दोह ॥ सक
नतजी कुल कानि हज लखि गुर लाजा समा
ज ॥ सबै ठगी हरि मुख निरखि सदन तज्यो रह
काज ॥ २२५ ॥ इहां प्रस्तुत वयो रुडी दियो गडी
है वैदी है तोहि कछु सुधि नाही रह काज प्रस्ता
व मे हरिमुख दरसन को कारन कह्यो कारन
के प्रस्ताव मे कारन कल अथर दिव दरनत रहे
लाल उवाति कारि कोन अस्तु ललकि दरन्यो
चहत रहत लाल गहि मोन ॥ २२६ ॥ इहां सखी
मंडल मे नवोदा के अथर दिवा स्वादन नायक
कियो यह प्रस्ताव मे दिवा खादते लौकिकानु
भाव वरन्यो नाही जात बुद्धि साध भयो यह का
ज कह्यो सामान्य के प्रस्ताव मे विशेष के क्षयन

के.ना.का.ह.५४ विपात में उत सन सुकुला
 मान का.ना.का.ह.५४ लीन जल सो.वत काहि
 विजु.हर्नन ॥ २२५ ॥ विशेषको प्रस्ताव में सामा-
 न्य को कायत ॥ दोहा ॥ जासों आपन मित्रकी प्रि-
 या जाइ उषकाव वह कुलीन यहै छती वझे ध-
 न्य संताह ॥ २२६ ॥ जहां लक्ष्य अभि धान तहं
 लीन प्रकार विशेष ॥ अनेय दसासी कमि आ-
 पर समता जह कलैव ॥ २२७ ॥ अनेय सुलाया
 को उदाहरन ॥ दोहा ॥ काहि लीन अधिका समे-
 ह कर कौं साथ क्रिधि कोइ ॥ काहुं प्रकासत
 जगत में दिन गुन दिया नहीवू ॥ २२८ ॥ समा-
 लीता मूलका को उदाहरन ॥ दोहा ॥ दसा
 जी कबलों नहीं होतुन आरु मेह ॥ दसा ज-
 में जाहीप में सबै करत है नेह ॥ २२९ ॥ सदस्य प्र-
 स्ताव में सदस्य कायन ॥ दोहा ॥ जित तित ललि-
 त बसंत में फूली लता अतल्ल ॥ फूल नहीं
 अलि के हिये दिना मालती फूल ॥ २३० ॥
 वाच्य वाचक भाव की रीत तजे कुछ सु-
 त्ति ॥ पेच लिये सो सब कहत पर्या योवात
 जति ॥ २३१ ॥ साम अर्थ जो विजना सो प्रताप
 हित दोइ ॥ पर्या यो कतिताहि को कहत विबुध

सब कोइ ॥ २३५ ॥ निरीखि कान्दो जइ नहि रस
 जीकास की पीति ॥ सुंदर का लत कहे ॥ एव रस
 मन सुथ बुथ नीति ॥ २३५ ॥ प्रकृति सावका नि
 जइह प्रसूति ककारन शान ॥ यजो योय नि कान्
 तयों विद्या नाथ सुजान ॥ २३६ ॥ इत की अंति
 वा मल गजी हारी अति चिन चैन अस्त नो
 हैं से ललित हैं आलु लजो हैं तेन ॥ २३७ ॥ य
 ह रचिती कौ सु रचे ॥ एही कोह वाछु वाच ॥
 शुभा हो परुष मान को लोपती ए कीति नाच ॥
 २३८ ॥ उप मानो उप लेय यह कौरे अनादु ना
 ज ॥ इहां प्रलीपे काहन है पंडित सब वापि रान
 २३९ ॥ रचि मधुराई अथर की सुंदर कान्दना
 ॥ सुधा सुधा निधि कौं रचि पिपि वि अवे क
 व पादू ॥ २४० ॥ गरम भरत मन जानि हो बक
 लरनि सिर मोर ॥ रस वली अति जगत में लो
 सी रति है और ॥ २४१ ॥ जइह साध्य साधन वा
 ठिन शैवर नन अस्तु मान ॥ तर्क न्यास क व्रथा
 ॥ इहे अलंकार लक्षण ॥ २४२ ॥ अंति है नहि मने
 तिय कौरे तहीं परति है वान ॥ प्रजो को काम र
 मदन लीन्ह वान कामान ॥ २४३ ॥ वैद्य वाद्य
 को अर्थ के अर्थ पदन को हैइ ॥ वाचु लित

तासो कहत हेतु बखानत कोइ ॥२४४॥ हरि
 उर निर्मल नील मनि दरपत सिला समान ॥
 प्रीति विवतइत शथिका कामला कोति निधा-
 न ॥२४५॥ पदार्थ को हेतु ताको उदा हरन ॥ *
 दोहा ॥ अशु अशु नदी बढी पारन पावत
 लाल ॥ दे अशु लंबन कुच कलस जस अशो-
 ल से बाल ॥२४६॥ नील बसन पावस निसा
 चली जहां नंद नंद ॥ नेक कहू मगल प्रवति है
 कछु उधार मुख चंद ॥२४७॥ श्लेष मूल को
 उदा हरन ॥ दोहा ॥ पाप मतंग थदान तिन भ-
 नरनगे निय रहि ॥ चिंता मनि जिनके वसत
 पंचालन उर माहि ॥२४८॥ कारत परस परसो
 मथन जो सामान्य विशेष ॥ सो अर्थो तरन्या-
 स कहि लखि पंडित मन लेष ॥२४९॥ विसे-
 ष परि मान को उदा हरन ॥ दोहा ॥ मूदन की
 मति मंद ता तियन साधु कारि लेत ॥ लावत
 सरपति कामलिनी मथुपन को मथु देत ॥
 २५०॥ रीभानिखीभानि बूभा विन बूभाहु लेत
 रिभाइ ॥ नीके कौनी को लगे सब विधि स-
 वै सुभाइ ॥२५१॥ क्रम कान को अन्वय जहां
 बरन्यो क्रम क्रम होइ ॥ यथासांख्य सो अलं-

कृत सुमति काहत सबकोइ ॥२५२॥ अथ वदन
 कच वाच ललित सुभावेन अरुनेन ॥ विंद चंद
 तम कोक जुरा अमी कमल से सेन ॥२५३॥ स
 का वस्तु के भसते और भई जो होइ ॥ ताको का
 लिये यह काहा अर्या पतिह कोइ ॥२५४॥ सुंदरी
 की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक
 की जीती काहा चंप कली की जोति ॥२५५॥ स
 का वस्तु जो अनेक थल प्रापत एक हिवार ॥
 नियमित कीजे एक थल पर संध्या लंकार ॥
 २५६॥ एक वस्तु जो एक ही ठौर नेम जो होइ ॥ पर
 संख्या तामों काहत कवि पंडित सबकोइ ॥२५७
 पुन पूर्व जो एक पुनि ताते भिन्न जु और ॥ परि सं
 ख्या द्वैविध पृथक काहत सुमति सिर मोर ॥२५८
 वर्जनीय दूत जो काधू काहु शब्द गत होइ ॥ क
 हु अर्थ बल पादुयै यह विधि दोऊ दोइ ॥२५९
 पूछ्यो अन पूछ्यो कथन काधू वस्तु को होइ ॥
 ऐसे और न हेत यह परि संख्या काहि सोइ ॥२६०
 परि संख्या लंकार में काहत शब्द गत होइ ॥ क
 हु अर्थ बल पादुयै जो सम नाही कोइ ॥२६१॥
 मंमट आ चासु इहां से सो विद्या विवेक ॥ प
 रि संख्या लंकार को समुझौ पंडित एक ॥२६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदाहर
 न ॥ दोहा ॥ कौन सुखी जो राम को नहि संप
 रस लीन ॥ कौन सुखी जो रामते विमुखन स
 पति हीन ॥ २६३ ॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि
 का परि संख्या ॥ दोहा ॥ कहा से दूयै पुरुष को
 सब दिन सज्जन संग ॥ कहा थैयये कहत म
 निव्यापक ब्रह्म असंग ॥ २६४ ॥ शब्द गत वर्ज
 नीया प्रश्न पूर्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ भूष
 न की रति नहि रतन धन विद्या नहि वित्त ॥
 लोचन सुमतिन नैन जुग समभत सज्जन
 चित्त ॥ २६५ ॥ अर्थ गति वर्जनीया प्रश्न पू
 र्विका परि संख्या ॥ दोहा ॥ कुटिल लार्दे तेरे कुचन
 कर फग बोढन राग ॥ नैननि चलिता कटिन
 ता कुचनि भाल मे भाग ॥ २६६ ॥ शब्द गत व
 र्जनीया प्रश्न पूर्विका श्लेष मूल परि संख्या ॥
 दोहा ॥ कौन नैह विन द्योसके दीपन सुजन स
 माज ॥ कौन मंद स्न वार नहि मनुज राम के
 राज ॥ २६६ ॥ प्रश्न पूर्विका अर्थ गत वर्जनीय
 श्लेष मूल परि संख्या ॥ दोहा ॥ कोविन गुन र
 ति हार विन जो ती को सुबुचंद ॥ कौन मंद गति
 अवधमें वात वाल सा नंद ॥ २६७ ॥ शब्द गत व

जी नीया अप्रश्नपूर्विका श्लेषपरि संख्या दोहा।
 तिथि छवार मंगल विना वेषों कहिये कर कोइ
 विसंमप रस नहि खल वयन जित हरि चर-
 चा होइ ॥ २६८ ॥ अर्थ गत वर्जनीया पूर्विका
 श्लेष मूलक परि संख्या ॥ दोहा ॥ मति मरीच
 मय हरिका हरि नगरी अवदात ॥ सुनीत्रिगु-
 न वर वाहि मे जामे तमकी बात ॥ २७० ॥ उत्त-
 र सुनिजहं प्रश्न को अटक रही ते ज्ञान ॥ वा-
 हु पिशा उत्तर काथन प्रथमोत्तर सज्ञान २७१
 वसन कहौ कैसे पथिक पति मेरो पर देस ॥
 सासु अंध बहिरी ननंद बडे कालं काक लेस
 २७२ ॥ काविज ॥ सुंदर क्यों मन मोह जूइत वैठी
 हो वैठी कहौ सवजीकी ॥ बात कहे सुनि हो
 कहि सपति की बतियां सुखशायदा लीकी ॥ अ-
 वौ दूते मिलि आर सी देखिये हैं हृदय जीके कि
 हो तुम नीकी ॥ नीकी भई जु जो हो तो कहलुम
 कैसे कौ होंहि वरा वर पीकी ॥ २७३ ॥ दोहा ॥ सि-
 खवन पठये तुम जु दूत ऊथौ सब गुन धामो ॥
 निरागुन कुविजा सगतें कौ सुत बल सो स्याम
 २७४ ॥ एक सिद्ध कर संग मिलि औरौ साधक
 होय ॥ होइ अनेक समुच्च या अलं कार यह २

वीरु ॥ २७५ ॥ कविता ॥ दुलारे भा वायके सका-
 लगुन थाम राम महा राज कुमार ललित रूप
 खानि है ॥ जीवन को आगमन मंदिर पूरन थ-
 न जगत निहाल कारवे को हाथ खानि है ॥ सी-
 नाजू ललित अंग सहित सुरों को संग सखी जे-
 सिखाई सब सकल कलानि है ॥ कौन वाहे चिं-
 ता मनि मनि मय मंदिरनि आप जोतिरूप जे-
 से खिले कथू आनि है ॥ २७६ ॥ विरहिनी को
 असत वस्तु को जोग ॥ कविता ॥ चिंता मनि थ-
 न बन वीथिनि बोलत मोरते सिंये रही है थरा
 धनकी उने उने ॥ तैसिये भई है लाल भूमि दूद
 वधुन सौ वधुन पहारी लाल चूनी चुने चुने
 सीरी सीरी तैसिये वादवन की वासुलैल था-
 य वहे लह लही बेलिनि दुने दुने भांकि के भा-
 रोखे मुरभाति वाम थरी थरी हरी हरी पेषि अ-
 वुरनकी मुने मुने ॥ २७७ ॥ सदस जोग समुच्च-
 य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ रूप हीन अह आरसी
 देवि देवि मुसक्पात ॥ मूरख भूगटे चातुरी बडी
 हंसी की बात ॥ २७८ ॥ गुन गुन जोग समुच्चय
 को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वृत्तनपालक को सखी
 व्यापक वृत्त असंग ॥ थरे अंग दुक संग ही सु-

अस्याम हैरंग ॥२७६॥ क्रिया क्रिया जोग स-
 मुच्यु को उदा हरन ॥ होहा ॥ ओथ नगरते
 निवारि कारि वन वसि रथुकुल राज ॥ स-
 त्प पिताको वचन अरु प्रियो देव गन वाज
 २७० ॥ दूजे कारन के मिले वाजु जु हरवर होइ
 सा समाथ दरनत विवुथ समभत सज्जन
 कोइ ॥२७१॥ हरि चाहो परापरन को मान
 चर्ता लखि वाम ॥ भई तडित यन स्याम मै
 निरखितडित यन स्याम ॥ जहं करिये परत-
 क्ष सम भावी भूत जुवात ॥ अलं कार कारता वा
 हत स्वाभा विक कहि जात ॥२७३॥ दियो हुल्यो
 जावक जुयो पराट देखिये पाइ ॥ अंग भूष वैह
 सेवे भूषित लगे वनाइ ॥२७४॥ जा उपाय काह
 करी काछु जु अन्यथा वात ॥ ता उपाइ जोते रि-
 ये करे कुंयो व्याघात ॥२७५॥ ज्यावति हे लिय
 नैनही नैनजु ज्यो यों काम ॥ जी तलि विचल
 किलोकननि वाम लोचनी वाम ॥२७६॥ जनक
 म एक अनेक मे एकाहु माह अनेका ॥ हे प्रया
 र पर्जाय यों सत कवि कारत विवेका ॥२७७॥
 संवेया ॥ छेाडि दई तनु ताजु नितै वाहे ताको वा
 हा सेवेन खाव्यो ॥ पाइ न चंचल ताजु तजो अ-

वता परनेन जगै अनु राख्यो ॥ मंद सुभावलि यो
 गति जो मृग लोचनी की मति को तजि भाष्ये
 अंग न के गुनको बदल्यो करि को तिवके तन
 जोवन जाग्यो २८० ॥ कविता ॥ देखी वाम भयो
 सुखहसी वाम भयो दुखजाको सुख पूरन सर-
 दरितुको ससी ॥ चिंता भनि देख्यो मन मोह-
 नज् अये वाके वाके चाह्यो वोर चंद्रिका रु-
 चिरहे लसी ॥ रात्यो दिन थर वासी रहति थर
 वासी मेरे कोहे कोसे रसी अवे द्वारे लगनि का-
 सी ॥ नैननि मे वसी रूप आजु सेज बीच उर व-
 सी जानी लाग उर वसी ॥ २८१ ॥ संवैया ॥ नाह
 ज नाहर लागतु है वाछु द्योसन मे उन मान
 ल्यो ॥ भयो भीत सुभावहिलाल थटे दिनह
 दिन ज्यो उन नेह वयो ॥ बहुयो वडे प्यार को दो-
 र भयो सजनी सुखदायक रूप नयो ॥ अवजा-
 के छुटे छन को जि ज्यो सखि पीतम पान स्व-
 रूप भयो ॥ २८२ ॥ दोहा ॥ पूरव पूरव अर्थ जा-
 हं उत्तर उत्तर हेतु ॥ कारन माला होतु सो सुने
 वटे चित चेतु ॥ २८३ ॥ विद्याते उपजे विने वि-
 नय जगत वस होत ॥ जगत भये वस धन मि-
 ले धनते धर्म उदेत ॥ २८४ ॥ कैथ पियै कै दूषि-

वै किये विधि बन भाउ ॥ यथा पथम पर फेरि
 कहि एका बली गनाउ ॥ २७५ ॥ थाम वामजु
 त वामजो रूप बंत बहु रूप ॥ सहित क्लाम
 क्लाम जो मनमथ वान अनूप ॥ २७६ ॥ नज
 लु जहां नहि कंज नहि कंज जहां नमिलंद
 नाहि मिलंदक सरवन जो रवनन जित आने
 द ॥ २७७ ॥ जहं समास सम अर्थ को बदलो
 वरन्यो होइ ॥ चिंतामनि पर वृत्त वह वरनत
 है कवि लोइ ॥ २७८ ॥ वासु दियो तन जो वनहि
 जोवन तनको जोति ॥ उप कारन उत्तमनकी
 रिति परस्पर हीति ॥ २७९ ॥ कहा कहां हों
 कौन सों आर्द्र हों उह काइ ॥ सुधि बुधि ह
 रि सब हरि लोइ दीन्ही विरह बलाइ ॥ ३०० ॥
 जाइ लियो नहि बैरु जहं परसौ प्रवल विधा
 रि ॥ एकैको अपकार जो पुत्य नीक निरथा
 रि ॥ ३०१ ॥ रूपदु पहरीतुम हसौ वह तुम
 सों अकसैन ॥ जोतिय चाहति है तमै ताहि देत दु
 खमैन ॥ ३०२ ॥ होइ जू कौनो अर्थतें सूक्ष्म अर्थ
 प्रकास ॥ सूक्ष्म नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु
 खवास ॥ ३०३ ॥ कवित ॥ कहु किंसुक फूल फा
 लानिसो पूजतु प्रभु लखे वृष भान द्यो ॥ सुसवा

ति कच्छू मनि डोढि रखीको सुवाल उरो जन-
 वीच परी ॥ चं सुवान बिलोचन पूरि रही सु-
 वि स्तरनि सी कच्छु आथ थरी ॥ तव कौल क-
 ली सेदु औ कर जोरि तिया नति संकर धार
 करी ॥ ३०५ ॥ दोहा ॥ जहां कौनह बातमें कच्छू
 वनिये सार ॥ सो उत्तर उक्तर्ये यों सुनिये सार
 विचार ॥ ३०५ ॥ सुहु मीसी वारा नसी तामे पंडि
 तसार ॥ बहुरि पंडितन में समुभि सार सुबह्म
 विचार ॥ ३०६ ॥ जहां तहां संपति कथन सो उ-
 दार मन आनि ॥ जो उप लहन वडेन को क-
 हो वहे पहि चानि ॥ ३०७ ॥ कविज ॥ लालन की
 सीलनि को ललित पटाउ लाल जटित दिवा-
 लन की चोक चहू वार की ॥ लाल बहु भूमिहे
 महल खंड खंड लाल खंभनि खुलनि छवि वृंद
 के भकोर की ॥ चिंता मनि मनि में भरो खन-
 की बैठ कन गान मृदु घुमर मृदंग थन धोर की
 सुंदर रत्न मय सुंदरि सुंदरी संग बिलन ललि
 त लाल लसनि किसेर की ॥ ३०८ ॥ दोहा ॥ सो
 यह वृंदावन जहां रच्यो रासनंद लाल ॥ सुस्ली
 मधुर वजादूकै मोही सब वृज वाला ॥ ३०८ ॥
 एक कवित्त में अलं कृत भासे भिन्न अनेक

कुकुक्त-द्वय

के निषिद्ध्यज्ज परस्पर रहे संश्लिष्ट विवेक ॥३१०॥
 प्राब्द लंकार अनुप्रास यमकी यत्कीष्ट ॥ दोहा
 शिव गिरिपरगज मुख मुदित गरजत गिरिजा
 पौर ॥ एक विनायक कारत है एक विनायक
 सौर ॥३११॥ चाप मुकुट पद तडित वरा पांति
 मुकत मनि दाम ॥ कनकलता लखिऊन यो
 आइ दूते धन स्याम ॥३१२॥ संकार पुनि इनकी
 दूते अंग गिता बखानि ॥ आपुहि को विश्राम
 को पावत जे नहि आनि ॥३१३॥ कनकलता
 इह अति सयोक्त संबोधन मै तको उपमा वा-
 रि उपस्था पित जो अर्थ सो याको उपजीव्य-
 है यति अर्था लंकार को संकार है ॥ दोहा ॥ व-
 हुत अलं कृत मै जहां अर्थन निश्चित होइ ॥ को-
 है मै संकार बहो बरनत है सब कोइ ॥३१४॥ क-
 वित्त ॥ हों तो तुम्हें पहि चानति हों बल वातन
 के बहु पंच वने हो ॥ औरके माल भयो छति
 यां कुच कुकुम छाप छपा यन रहो ॥ याह
 सों ऐसि ही बोलहुगे मनि पीतम जकि चरे
 जब जे हो ॥ मोहनी मंत्रसे वैनि मोहि को मो-
 हन मोहि कहा वहं के हो ॥३१५॥ * ॥ यामे
 मोहनी मंत्र तुलित जे वचन है तिनकर मोहि-

वो कारन ताहै यह कारनते विद्य मान ताहू
 वह करि की वेषों सलाहते अर्था लंकार की सृ
 र्ष्टि हे या कविज की वस्तु से यामे मोहनी मंत्र
 तुलित जे वचन हैं तिन कर मेहि वी कारनता
 हे यह कारन के विद्य मान ताहू वह करि की
 वेषों सलाहते अर्था लंकार की सृष्टि हे या क
 वित्त की वस्तु से कविज प्रथम ॥ तरे कपोल से
 हो इन सोरुजु कंचु की की करि आरसी वोंपे
 अंग प्रमाण अनूपम नैन वधू को सदा ही गुमान नि
 लोपे ॥ याद सन घृति चंदिका लालची चाहे
 चकोर भये दृग तोपे ॥ वारक तो विधु वंधु मुखी
 हसि नैकु विलेकि विलाहिनि मोपे ॥ ३१६ ॥
 इहा पदार्थाति शक्ति प्रथम चरन मे ॥ वितरे वा
 दूरी चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ रूपक
 चोये चरन मे वा सत है ॥ दोहा ॥ सग के दोऊ
 जनि हे नहि करतु अनंग ॥ प्रति विं वित आ
 पुनि लघत ए दोऊ दुहु अंग ॥ ३१७ ॥ * ॥ * ॥
 श्री राधाकृष्ण की रक्ता साध्य है अरु एक अं
 ग मे उभया व लोकान हेतु हे याते साध्या साध
 न अनु मान है वै अनंग करत विचारते अंग
 ते भिन्न करत तात पर्य यह माया प्रति विं वित

चैतन्य उभयत्र है आपु आत्मा एकै है माया सं-
 वकी छोडे शुद्ध चैतन्य है आपु आत्मा एकै-
 है माया सबकी छोडे शुद्ध चैतन्य है महाश्ले-
 ष है सो उभयत्र एकत्व साधक है ताते अनु-
 माना लंकार है अरुया शब्द में औरों अलं-
 कार संभवित है अन्या अन्या दिवायते ए-
 कको निश्चय नाही ताते संकार है ॥ दोहा ॥
 कधुन सुपरि मा मृदुलता विसद्वरन जल पू-
 लै ॥ जूपेच मेलिहि तकात अलि सब बेलिन
 की तूल ॥ ३०८ ॥ * ॥ इहां विशेषणगत समासे-
 त्त है के अप्रस्तुति प्रसंसा है ताको निश्चय ना-
 ही ताते संकार है ॥ दोहा ॥ अस्याटि जो रफ हि
 विषय पद अर्था लंकार ल है व्यवस्था सो अनुनि
 संकार समुभविचार क मोर किरीट ल से चपला
 पट नील बला हक रंग हरे है ॥ गोपके बांध
 थरे भुज दंड अनूप विलास कलानि थरे है ॥
 वान थरे नव मंजरी मंजुल बंजुल कुंचन ते
 निकरे है ॥ सुंदर मार हुते सुकुमार सो बेलवि
 नंद कुमार खरे है ॥ ३१० ॥ दोहा ॥ अवि अलया
 ति तन सहज की लापर रहित विलास ॥ युंदा
 न पर सुंदर लगत ज्यों मनि हंद बुकास ॥ ३११ ॥

प्रहो उपमा लंकार को कति अनुपास को संवर
 है ॥ द्विती श्रीचिंतामनि विरचिते कवि कुल क
 ल्यतरो नाम अर्था लंकार निरूपनं त्रितीयं पु
 कार्णमा ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रसको जू दूत देखि
 परै अप कर्ष ॥ दोष बहत है ताहि को सुने अ
 दत्तं हे हर्ष ॥ * ॥ १ ॥ श्रुति कदु च्युत जो संस
 कृत अर्थ जूक्ति अस मर्थ ॥ निहता रथ अनु
 चित अर्थ ओ रजु हीदू तिरर्थ ॥ २ ॥ ओर
 अवाचक त्रिविधि पुनि इत अश्लील विचा
 रि ॥ सं दिग्धो अपतीति पुनि गामने वार्थ
 निहारि ॥ ३ ॥ क्लिष्टो बहुरिवलानिये विसद्व
 मति काम जानि ॥ शब्दन के र दोष है सज्जन
 लेहु मन आनि ॥ ४ ॥ कानन को जौ कदु लगे
 श्रुति कदु दोष सुजान ॥ संस कार च्युत होइ
 सो च्युत संस कृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सत
 कर्षिन काची भाषा जान ॥ मथुरा मंडल गवारि
 ये की परिपक बखान ॥ ६ ॥ श्रुति कदु को उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ धन्य भयो कृत कृत्य हों संपाल
 भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारे पाइ को हिये भई सु
 स्य द्रोष्ट ॥ ७ ॥ काची भाषा को उदा हरन ॥ दोहा ॥
 काची स्वति जाव ही सो भूहि लागी नीकि ॥ क

है वसति है चिन्तमे और नई सुधि देकि ॥६॥
 मथुरा मंडल गवारि यर की सुर बानी कोइ ॥
 जोन प्रयोगी सत । कविन अप्र युक्तिहे सोइ
 छे ॥ अप्र युक्ति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जवते दे-
 री भावती तवते सुख चर चान ॥ भिन्न भिन्न त-
 नु जादिहे मो कंदर पकवान ॥ १० ॥ असर्थ को-
 उदा हरन ॥ दोहा ॥ वनमे सोहत कमल अर
 राजत सारस हंस ॥ सरमे अति सुंदर लसत
 सरद बाल अव तंस ॥ ११ ॥ द्वै वाचक पद मेज-
 हां अप्रकृतिहि को बोध ॥ सो निह तारथ कह
 तहे चिन्ता मनि मन सोध ॥ १२ ॥ निह तारथ
 को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लो डून ललित विला-
 सहे रकत रूपहे हाथ ॥ वात कहत काधु मंदग-
 ति चली सीकिन के साथ ॥ १३ ॥ अनु चिता को ल-
 हन ॥ दोहा ॥ होइ अनु चिता अरथ तहं उचि-
 न वरनन होइ ॥ ताहि अनुक्तिारथ कहत पंडित
 सत कवि कोइ ॥ १४ ॥ मानति नाही मे गर्द हवि-
 ज् वारक आठ ॥ बोलति नाही सेंठ के बैठ रही
 है काठ ॥ १५ ॥ निरर्थ को लहन ॥ दोहा ॥ छंदे
 पूरन को जु पद होइ निरर्थक सोइपको वाचक
 पदन जो वहे अवा चक होइ ॥ १६ ॥ बोलति है

यह को किला सो पुनि तहं तू पिष ॥ रिसहा प-
 र्सीहे सखी चुही बोल पुनि लेष ॥ १७ ॥ अम्ली
 को उदा हरन ॥ दोहा ॥ वि मारग देखति उहा पा-
 द परी हैं आइ ॥ तू तव कैसी करहि जो विर-
 ह पीउ मरिजाइ ॥ १८ ॥ सं दिग्ध को लक्षण ॥
 दोहा ॥ जहा हेतु सं देह है सो सं दिग्ध बखानि
 शास्त्र हीन मे जो कह्यो अप्रतीति सो मानि ॥
 १९ ॥ सं दिग्ध को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कू दत
 जाके होतु है ये विरहै मनु लाइ ॥ अति सुंद-
 र सुंदर वन्यो हरि देख्यो किन आइ ॥ २० ॥ अ-
 प्रतीति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ ता चितु मे चितु
 है महा तू क्यों वैठी रूठि ॥ तै निजु मान कि-
 यो भद ज्यौं मरु कट की मूठि ॥ २१ ॥ नाम्य को
 लक्षण ॥ दोहा ॥ होत गंवारी यह जहां नाम्य
 कहत हैं ताहि ॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-
 वि तजत हैं वाहि ॥ २२ ॥ नाम्य को उदा हरन ॥
 दोहा ॥ चुची जभीरी सी बनी गोल लाल है गा-
 ल ॥ जाके नैन विशाल वह गरे लगे कव बाल
 २३ ॥ नै आर्य को लक्षण ॥ जहा निधि धि की ल-
 क्षणा सो देख्यो अर्थ बखानि ॥ चंदहि हनत चपेट
 सो तेरो मुख मृदु बानि ॥ २४ ॥ व्रिष्ट को उदा हरन

जाको अर्थ कहि विना जान्योई नहि जाइ ॥ कै-
 वेलिस ते जानिये सोहे क्लिष्ट बनाइ ॥ २५ ॥ द्र-
 व्य नाम दगा हीन पद आसन रिपु परगासा ॥
 पूल खान ताको सुहृद तीन्यो दूखत्तास ॥ २६ ॥
 रई ॥ विरुद्ध मत कृत को लक्षण ॥ दोहा ॥ सो वि-
 रुद्ध मत कृत जहां जान्यो जाइ विरुद्ध ॥ रोसो
 कावितन की जिये है यहु निपट अगाइ ॥ २७ ॥
 विरुद्ध मति कृत को उदाहरन ॥ दोहा ॥ वडे प्र-
 वीन सुबुद्धि है सदा अका रथ भिन्न ॥ वाहा ओ-
 र संसार में ऐसो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अब
 वाक्य दोष गाना लिखें हैं ॥ दोहा ॥ प्रति कूला
 चर होत है अरु हंत वृत्ति बखानि ॥ अरु अधि-
 क पद काथित पद प्रतत प्रकीर्षो मान ॥ २९ ॥
 पुनि समाप्त पुनि रात कहि चरनां तर पद हो-
 इ ॥ पुनि अभवन्मत लोग कहि अका थित वा-
 च्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अर्थन रूप पद संकी-
 र्णो निहारि ॥ गार्भित और प्ररिद्ध हत भंगा च-
 म निरधारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमत अपारथो
 वाक्य दोष ए मानि ॥ कवि चिंता मनि काहत
 है सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ प्रति कूला चर
 को लक्षण ॥ दोहा ॥ अक्षरस अनकूल नहि प्र-

ति कूलाक्षर सोइ ॥ कहत विबुध हत वृत्ति सो
 छंदो भंगहि जोइ ॥ ३३ ॥ कट्टत वट्ट विषट्ट कु
 च सुट्टियट्टिय मार ॥ दंपत लुट्टिय लुट्टि सुख
 छुट्टिय पट्टिय वार ॥ ३४ ॥ हत वृत्तः ॥ दोहा ॥
 रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नै
 न ॥ चले जात हो वा गली देत हंसत सखि सै
 न ॥ ३५ ॥ जोइ कर सजा छंदमें भलो जो उत्तम
 होइ ॥ जो जाके प्रति कूल है योहुं कहत स
 व कोइ ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ धरनी थसि पातालहि
 पैठी ॥ थूरि इंदुके महलन वैठी ॥ सेस नाग फा
 न सहस नावाथी ॥ साजि सैन जव भूपति था
 यो ॥ दोहा ॥ सर्व लक्षनन कार अहित सुनत न
 नीको होइ ॥ यहो कहत हत वृत्त हैं जे सज्जन
 कविलोइ ॥ ३७ ॥ कमीन लागत चंद है जामे
 कांति कमीन ॥ ऐसो सुंदर वदन है वचन स
 मान अमीन ॥ ३८ ॥ न्यूनपदको लक्षण ॥ *
 दोहा ॥ जहां वरन के करत है न्यून्या दिक् प
 द होइ ॥ चिंता मनि कविकहत है न्यून ॥ धि
 क पद सोइ ॥ ३९ ॥ वाकी अद्भुत रीति है वैया
 काहू सो जाबि ॥ है सब वप लनि लख्यो परत
 जही तही है अनि ॥ ४१ ॥ कनक लता दामिनि

किथो अद्भि चंपा दास ॥ एक लदी वह व्यापि
 नी दूती मल मय काम ॥ ४२ ॥ दांजल पद ॥ *
 दोहा ॥ जो पद दीन्हे है शायु वहे बहुरि हो ॥
 होत कायित पद है तही दादी नान लुनहुं वनाइ
 ४३ ॥ जो लिल मुज बह कायल हो तिखल नैन सि
 ल हल ॥ गिरी की मल देह है लोहत ललित र
 विलास ॥ ४४ ॥ प्रजाति प्रकाशेन लक्षण ॥ ईहा ॥
 जो अनादर अरु मिये लैसे जो निव देन ॥ चिंता
 मनि कायि काहर है पुजात कर्ष हो ये न ॥ ४५ ॥
 चार चूनी चपल चव चौका चमकन चार
 चतुर चंद्र वदनी चली गरे पहिरि कै हार ॥ ४६ ॥
 समाप्त पुनर्हि ॥ दोहा ॥ यह वावपार्थ समाप्त
 है बहुरि विसवै देह ॥ एते समाप्त पुनर्हि है
 जानिसंजाने लेह ॥ ४७ ॥ उडे बार लोहन के
 श्रीनी दरि वर नारि ॥ दक्षिणा दिसि गे लपरी
 वह होहात सुकुमारि ॥ ४८ ॥ जह जो उत्तर अरु
 पद पूरव अन्वित होइ ॥ अर्थो तरगत पद सुयो
 दूषित भाषा कौइ ॥ ४९ ॥ लामि अन्वय वनत
 लहिं हो अमत् नमत जोवा ॥ चिंता मनि कवि
 काहत यों सुशक्ति कौ सुयोग ॥ ५० ॥ वि बन
 मोहन ए इते रची सत्य सो भादि ॥ जो वह

जोरी सखि मिलि वैन नैन सिय राहि ॥५२॥ *
 अनुक्त कथनीय ॥ दोहा ॥ जो अवश्य कथनी
 य सो कह्यो जहं नहिं होय ॥ इत अनुक्त का
 थनीय यह दोष कहत है कोइ ॥५३॥ जो पा
 ई नहिं मैनि का पाई काम बधून ॥ सो बहला
 ल लटू निरखि तूकत लखत भटून ॥५४॥ ज
 हं डोइ संकीर्ण पद सो संकीर्ण बखानि ॥
 एक वाक्य मे और जहं सो गर्भित पहि चा
 नि ॥५५॥ पीजे पान नखाइ ये पानी बेली
 पानि ॥ पिय हिय ठाऊं रावे सुखहि मिला
 ऊं आनि ॥५६॥ गर्भित ॥ दोहा ॥ और के अ
 पकार ले खलसों कहूं मिलाप ॥ तुम्हहि सि
 खाऊं करहु जनि कि ये परम संताप ॥५७॥
 जो पद जाथल चाहिये सो नहिं जाथल होइ
 दूषन अस्था नस्थ पद कहत सुखावि जन
 कोइ ॥५८॥ तूकत लखत भटून यह नकार
 अस्थानस्थ पदादौ ॥ जो पद अस्थानस्थ पद
 योंही अस्थ समास ॥ जो न बुद्धकी उक्ति मे
 काविकी उक्ति प्रकास ॥५९॥ मेरे आगम मा
 नयों कहि यत पिक थुनि वंत ॥ अलि हुंकि
 त हुंकिव कलित आयौ अली वसंत ॥६०॥

प्रसिद्ध हत कोलः॥ दोहा॥ धुनि ख आदि प्रसि
 द्ध जहं तहं हीजिये सोदू॥ और भांति योंगिभि
 ये तो प्रसिद्ध हत होदू॥ ६१॥ वा मृग नैनी को
 सुनत नूपुर को निधवान॥ पंच वान अभि
 मान सों ताने वाने कामान॥ ६२॥ पूर्व मनु वा
 देन प्रसूय मानो दयः पश्चा दन्पत्र विधितः।
 प्रजुज्य मान प्रति निर्देस्य॥ ६३॥ ॥ उद्देस्य प्रति
 निर्देस थल मै प्रथम ही जों हीजिये॥ पुनि जा
 व है कहिये परे तो वहे ताथल लीजिये॥
 जा काथित पद की भांति ते पजाय पद तित
 कीजिये॥ तो होदू पुत्राम भंग दोषसु सत्य जा
 न पती जिये॥ ६३॥ असन उदित रवि होत है
 असने अथवत आइ॥ संपति विपति बडेन
 को एके क्रम लावि जाइ॥ ६४॥ असन उदर वि
 करत है लाले अथवत आइ॥ ऐसे जो करि
 ये सुतो पुत्राम भंगहि जाइ॥ ६५॥ जिन विरंच
 जगती रची तिन नरची तू वाम॥ और लटक
 औरै ठवनि औरै दुति अभि राम॥ ६६॥ *
 और लटक औरै ठवनि ऐसे न करिये सोह
 नमत दूसरो औरै जहं अमत परा रथ होइ
 चिंता मनि कवि कावित है रचेन सत वायिको

यहै गहे पर हार है पर पीतले सुहाइ ॥ सब थ
 ल देखौ मेन है ऐसी लती सुभाइ ॥ ६८ ॥ वा
 का दोष ॥ अर्थ दोषगाना अर्थ अपुष्टुव
 वृ पुनि व्याहृत अत पुनरुक्त ॥ अनामी संस
 यित पुनि जीन होत संयुक्त ॥ ६९ ॥ अथ प्रसि
 द्ध विरुद्ध पुनि अनवी कत मन गन्य ॥ निम
 अनेम विहीन पुनि विन विशेष सामान्य ॥
 ७० ॥ साकी ओ पद जुक्ति पुनि सह चर भि
 न्न विचारि ॥ कहिय प्रकाम विरुद्ध पुनि चि
 ता मनि निरधारि ॥ ७१ ॥ ल्यक्त पुनः स्वीकृ
 त कह्यो पुनि अहील वखानि ॥ अर्थ दोष याभां
 तिके अपने मन में आनि ॥ ७२ ॥ अति विमती
 रन समुद्र को पार उत्तरि किनि जाइ ॥ परि नर
 वर तव गुन कथन कियो न जाइ वनाइ ॥ ७३ ॥
 कषार्थ ॥ दोहा ॥ कारन दियो है सूरके यादिन
 जात विहात ॥ तेग त्यागति मिदल नहि सांची
 बोलत वात ॥ ७४ ॥ व्याहृत ॥ दोहा ॥ सुधिन ज
 हां निज कथन की तो व्याहृत न जान जोनि
 रित कहिये प्रथम सोई पुनि हय मान ७५
 तेरे सम होना तको चन्द मुखी यह चंद ॥
 कामल नयन तो नयन लखि कमला गति

हुति मंद ॥७६॥ पुन रुत्तार्थ ॥ दोहा ॥ काहू को
 वर बन करत होइ विरह प्रवासा नाको सोई
 कहत है जाको मन पर गाम ॥७७॥ मोहि
 चहत दिल्ली तुनीह रत तर वार नेरु ॥ का
 हत न श्रितिको समुद्र सो कित मानो सं-
 दस ॥७८॥ जांभे विधि अरु वाद को कथन
 न नीको होइ विध्यनु वाद अयुक्त सो कह
 त विबुध सब कोइ ॥७९॥ य्यो अय्यो परदे
 सेते सरुइ समूह अधिकात ॥ अति पुज्य वे
 धित सर्वा संवेगी तुम प्रात ॥८०॥ उप संह
 त करि वाक्य को बहुरि करे अभि ध्यान ॥

त्यक्त पुनः स्वीकृततहांकविजन कारत वला
 न ॥८१॥ कालि अली नद लाल को रूप नि
 शिब अभि राम ॥ हों मोही सुधिवुधि गई मा
 रत तीर न काम ॥८२॥ अश्लील ॥ दोहा ॥ हों
 कोटार माहो चहत छिद्र तके जो योइ ॥ र
 ताको हर दर पात ज्यो उन्नत है नहि होइ
 ८३ ॥ रस दोष ॥ दोहा ॥ संचारी थार्इ रते श
 व्द कथित जो होइ ॥ अरु अन्न भातकी भाये
 व्यक्त कथते होइ ॥८४॥ प्रीतपूलदि भाग
 दि को रहस अज्ञ सम उक्ति ॥ मुरत को अ-

नु संधान नहि अंगहि की बहु जुक्ति ॥८५॥
 प्रकृतिनि को पुनि विपुर्तय अनु कित
 वर नन जानि ॥ चिंता मनि कावि काहत हे
 प्रस देव ववानि ॥८६॥ शब्द काथित सं-
 चारी अस्पार्द रस ॥ दोहा ॥ संका दुर्जन
 के हिये याके हिये उछाह ॥ अरिन सरा-
 हत वीर रस अनुरागी नरनाह ॥८७॥ *
 विभाव की क्लेसते व्यक्ति ॥ वाकी सब सु-
 धि बुधि गर्द वाहिन कहुं विश्राम ॥ निसि
 वामर रेवात रहति कछून भावे काम ८८
 प्रति कूलोक्ति ॥ दोहा ॥ * ॥ प्यारी हंसि कै
 वात काहि डारि गरे मे वाहि ॥ रोस छोड म-
 ति मान करि जोवन धन की छाहि ॥ ८९
 अलिषोक्ति ॥ दोहा ॥ भली भई बहुते अ-
 ली लागी घर मे आगि ॥ मेरे कर की गागरी
 लीन्ही साजन मागि ॥ ९० ॥ मुख्या नन सं-
 धान ॥ दोहा ॥ मे चौपर खेलन लगी निसा
 सों मे मे आजु ॥ वैठी सरवी समाज मे भूलि
 गर वृजराज ॥ ९१ ॥ अंगको विश्वास ॥ दोहा
 कालिंदी सुंदर नदी सुंदर पुलिन सरूप ॥
 वृंदावन धन छांह तकि कुंजनि रूप अन

प॥ ८२॥ प्रकृत विपर्ययाः ॥ ॥ दोहा ॥ निरुद
 त नैन सहस्र सों सुंदरता सवि सेय ॥ वंभा
 की मधवा दुखित लागत होत निसेय ॥ ८३
 अनु चित वर्ननं ॥ दोहा ॥ विरहिनि नैननिसे
 सुझमि काजर लंसे नवीन ॥ विन देव पिपवे
 रहे मनौ स्याम मुख कीन ॥ कहूं कर्न आवतंन
 इत याहि पदन को दान ॥ सं निधान दुल्यादि-
 के बोध हेत सज्ञान ॥ ८४ ॥ जहां हेत पर सिद्ध
 है तहं नरहे तन दोख ॥ सव अदुष्ट अनुवा
 न में इनते नही अतोख ॥ ८५ ॥ चिंता मनि
 गोपाल को वर्नन करे वनाड ॥ वक्ता रिदश्री-
 चिंत्यते दोषो गुन है जाड ॥ ८६ ॥ इति श्री
 चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प जग
 दोष निरूपणां नाम चतुर्थे प्रकाशे ॥ * ॥ ८७
 दोहा ॥ पद वाच्यक अरु ला हारि क व्यंजक
 विविध बखान ॥ वाच्य लक्ष्य अरु व्यंज्य पुनि
 अर्थो तीन प्रमान ॥ १ ॥ विन अंतर जा शब्द
 कर जावो होत बखान ॥ सो वाच्यक पद होत-
 है कहत सुकवि परमान ॥ २ ॥ लक्षक ताको
 कहत जो होत लक्षणा जुक्त ॥ चिंता मनि दा
 वि कहत है यह प्रमान है उक्त ॥ ३ ॥ मुख्या र

यके वाथ अस जोग लक्ष्मी होइ ॥ होत प्र-
 योजन पादुके काहं रूढ हिल सोइ ॥ ४ ॥ गंगा
 योयक है तहां होत तीरको बोध ॥ सीतलता
 कथवित्रता तहां प्रयोजन सोथ ॥ ५ ॥ तहां वि-
 जना वृत्ति वह होत लक्ष्मी मूल ॥ जहां प्रयो-
 जन जानिये कहत मथ अनु कूल ॥ ६ ॥ *
 जहं अभिधा अस लक्ष्मी अति कछु भि-
 न्न प्रकार ॥ होइ अर्थको बोध तहं कवि व्यं-
 जक व्यापार ॥ ७ ॥ शब्द अनेकारथ वरनि अ-
 तिकछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संजोगा दिक्
 गनन दूत अवाच्य कोसार ॥ ८ ॥ तहां व्यंज-
 ना वृत्ति दूत यह मं मट तत्व है ॥ चिंतामनिनि
 ज्ञानस्यमे कवि दूत वरनन आजि ॥ ९ ॥ संजोगा
 दिक् जोगाने प्रथम एकसो जोग ॥ चिंतामनि क-
 वि कहत दूत वरने बहुरि विजोग ॥ १० ॥ अर्थो
 प्रकारन चिन्ह सुनि ॥ दोहा ॥ * ॥ ज्ञानसु दूत
 चिन्ह सुनि ज्ञान शब्द कल संग ॥ सामर्थ्यो ज्ञे-
 दित्य ओरे सममे पर संग ॥ ११ ॥ ओर ज्ञान भवन
 आदि ते प्राप्ति निमं चित्त रीति ॥ एक
 अर्थ मे ओरकी व्यंजन ते पर तीति ॥ १२ ॥
 शब्द चक्र जूत हरि तजो शब्द चक्रा करि अणि

राम लक्ष्मण हनुमत् तनय ताह चर्यते जानि
 १३॥ रावार्जुन तिन दुहुन को परस राम दु
 त जानि॥ महस बाहु अरु तनि बाहे दुश्रो
 विरोधि त जानि॥ १४॥ मकार श्वज इहि चि
 हले गनत कंदरुप लोहि॥ देव पुरारितु अ
 नपर जीगतु को पेशि॥ १५॥ मधु सत्या को
 इलरितु राज सामर्थ उर जानि॥ रत्ना सुंदरि
 सनमुषता ओचियो पहिचानि॥ १६॥ इत
 राजत परमे शूरे यह रज धानी देस॥ चिंत
 मनि कवि जानि ये तहां नृपति को देस १७
 राजे दिन निशि अमन रवि चिद्र भानते
 लेखि॥ इतनी बालक बड भयो यह अभि
 नते पेखि॥ १८॥ व्यंजन व्यंजन जुक्त पद
 विज्ञ सुता को अर्थ॥ वाच्या वाच्या लक्ष
 निक को कहिलस्य समर्थ॥ १९॥ ओ अर्थी
 व्यंजक वरनि शब्द संगते होइ॥ व्यंजलक्ष
 ना मूल यह तहां सुनी कवि कोइ॥ २०॥ *
 लक्षना मूल व्यंग को उदा हरन॥ दोहा॥ म
 र्व अनूपम चोपतनु प्रफुलित नैननिचैन
 अंकुस दे फेसो हियो वाला पन ते मैन॥
 २१॥ कविता॥ जेवनके आगमने दोसे मकार

ध्वजके नीकीलगी लगन सखी की रस वतियां
 चिंता मनि पल पल पर प्यार चढो उपज्यो
 वियोग व्यापी विथा दिन रतियां ॥ मोह ही-
 ते जहां तहां पियको देखन लागी हंखि रे-
 लि वौलि सहां लहो है सुख तियां ॥ याही
 समे आये वेदु संचे आपु आपुही ते नक्ला
 लपकुलागी लालन की छतियां ॥ २२ ॥ अ-
 र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ सारखी है सखि
 यां सैंवे अवहो भई अचेत ॥ मै मनु हीन्हो आ-
 पनो वै दूत पाउ नदेत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंजक ॥
 वर्तिष्य मान सुरति गोपना ॥ कविज्ञ ग्रीष
 म मे वापी कूप सरवर सुखे सब जल नदी
 भिरनति आवतु नगर मे ॥ जहां जात आवत
 लगत कांठ भारन के होन जैहो हींही पानी
 पीवति हों थर मे ॥ अति दूर हीते भरी गागरि
 लो आवति हों छूटत पसीना वीपे अंग थर थर
 मे ॥ कहति हों पुनि सारखलन देखु वैन मोपे
 जाउंगी तो अऊगी भरि दुप हर मे ॥ २४ ॥ इति
 श्री चिंता मनि विरचिते कवि कुलकल्पतरो
 प्राद्वार्थ निरूपण नाम पंचम प्रकारण ५
 दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम ए त्रिविध कवि-

न पहिचानि ॥ तिनको लक्षणा उदाहरन हेत
 लेहु मन ग्रानि ॥१॥ वाक् अर्थते कहत मनि
 व्यंग अर्थक जहं होइ ॥ सो जन उत्तम क-
 वित यह जानत काविकोइ ॥२॥ उत्तम व्यंग
 प्रधान गन अप्रधानु गन व्यंग ॥ सो मध्यम
 पुनि अधम गन त्रिविध चित्र अव्यंग ॥३॥
 वाच्य लक्षते भिन्न जे कवितु सुनौते अर्थ
 भासेते सब व्यंग काहि वरनत सुकवि समर्थ
 ॥४॥ उत्तम काव्यको उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखि
 निसि ते पतिहो जित्ती रति रन मदन प्रसाद ॥
 सुंदरि जय दुंदुभि सज्यो काल किंकिनी निनाद
 ५ ॥ कवित्त ॥ कीन्हो मधु पान सुधि कथु वैल
 रही मन भाई की अंबर स्याम बोधो चितवा
 इको ॥ चिंता मनि कोहे लाल लोचन ललित
 सोहे लाल भाप कोहे रस जौहे अल लारिके
 हमसो अरी कर्म राएते काहि आवन सो दी-
 न्हो मन भावन दरस भोर आइके ॥ रहो नव
 ल नायक रसि कानिसि चांदनी की ऐसे हा-
 ल आर म्याल वाल को सुवायके ॥ ६ ॥ * ॥
 दोहा ॥ एक विवक्षित वाच्य ध्वनि रदु विव-
 क्षित वाच्य ॥ हो विधि उत्तम वाच्य यह सरक-

वि पंडित राक्ष ॥ ७ ॥ वचन को ब्रह्म न जहं
 वाच्य अर्थमें होइ ॥ सो अवि बलिबत वाच्य है
 कहत सकल कविलेइ ॥ ८ ॥ अत्यंतति रस हा
 त वाच्य अर्थ संज्ञामिते वाच्य द्विविध भू-
 ल ध्वनि बरनते अवि बलिबत वाच्य ॥ अत्यं
 त तिरस हात वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥
 सज्जनता प्रग दित करी कियो बहुत उप
 कार ॥ ऐसो काजु करी सह जीवो बर्य हजा
 र ॥ ८ ॥ अन्यार्थ संज्ञामित वाच्य ॥ दोहा ॥ तो
 सो पर हम बाहत हैं रसूल संगति मति जा
 हि ॥ कीजे काम विचारि कै भलो आपनो
 चाहि ॥ १० ॥ वाच्य अर्थ सुवि बलिबत वाच्य
 द्विविध पहि चानि ॥ लब्ध अलब्ध ज्ञानानि
 सो व्यंग्य सुमन नै अनि ॥ ११ ॥ प्रति शब्द
 हात लब्ध ज्ञान व्यंग्य सुद्विविध बखानि ॥
 शब्द अर्थ जगु सति भव इति ध्वनि भेद
 लुजानि ॥ १२ ॥ शब्द सति उद भव व्यंग ॥ *
 दोहा ॥ अलं कार की बहनु जहं व्यंजि शब्द
 ति होइ ॥ शब्द सति उद भव सु बहु बरन ल
 है कवि कोइ ॥ १३ ॥ शब्द सति मूल व्यंज
 ना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मथु मोहित

अति मंजरी मंजु यौलिछदि जाल॥पद्म

राम पुल्लव ललित दाम ललितरसात् १४

इहां नायक अरु आभूयो उमसा नोपमे

वले उपमा लंकार व्यंग्य है ॥ शब्दप्रतिभ

ल व्यंग्य वस्तु को उदाहरण ॥ दोहा ॥ चोप

खिलत है काहा चूगहै जीनि सुभाय ॥ ला

ल जातहै हाथते अरी चुकी यह दाय १६

इहां शब्दप्रतिभे नायक अनु न योति

है है जीतन चलयह व्यंग्य ॥ दोहा ॥ दोऊ

पदगत वाक्य नत जो जनि आदि चकार ॥

अर्थ सति भव भेदो कारत दिव्य विस्तार ॥

१७ ॥ अर्थ प्रति उदमद अति भेद ॥ अ

दोहा ॥ खत लंमदी सुवाणि की प्रोठ उनि

पर सिद्धि ॥ वाविनि बहु वतते हुकी प्रोठ उ

ति पर सिद्धि ॥ १८ ॥ विविध अर्थ व्यंग्य वा

क्यविधि वस्तु अंत कित हर ॥ व्यंग्य व्यं

ग्वल्ल भेदों हाइस भेद अन्वय ॥ १९ ॥ मरी

जातनि अज्ञु उन हियो वगत अविदति ॥

सुनत तिहारो नाम जो नुह दानी लुव वाधि

२० ॥ इहां नाम अत्र नंतर तुल्यवर्गानि रूपव

स्तुकारितुमै वह चहति है मिले गी अथ वस्तु ॥

व्यंग्य होति है काहू देखेकाहू काहू वाह्यो का-
 न्ह वैसेकाहू काहू काहू काहू कौर यों लगन
 अधि कार्दसों ॥ वाही के विकल तुम्हें कध
 परवाहि नाही भलेहो गुपाल जू निपट नि-
 दुगर्दसों ॥ चिंता मति कहै तुम कोंहो निह
 चिंत बैठे कहा जाइ कहोंगी विरह ताप तई-
 सों ॥ वाकी यह दशा भई तुम तौ नसुधि लई
 जानि कौरे दई कोऊ नेहु निरदई सों ॥ २१ ॥
 यह ऐसी अनु राग वती निदुरजे तुम तिनमें
 असक्त भई याते विषमालंकार व्यंग्य है ॥
 वाक्ताही धन तही धन तोही में हरिको मनुते
 रेही रिभाइ वेकी रीति में प्रवीन हैं ॥ चिंता
 मनि चिंतानित तेरी रहै तेरी ही विरह धिन
 धिन होत धीन हैं ॥ हीन चुनकी जैह काराय
 निवृत्त काहू छहोइ हों तौ वृत्त लखु आधीन
 हैं ॥ तहै पौके नैन अरविंदन की कूटि आपी-
 वोनैन तैर तहू यनि यदौ सीन हैं ॥ २२ ॥ इहां प-
 रं परित रूपक करि अहं नायकाकी और अव-
 लेखिनी नाहीं तति और अलंकार नाहीं वस्तु
 व्यंग्य है हे आवति दिग अदिति न तनु हंसति दगं
 तनिहारि छुरकायल मनि नरु कद चुकी चुकी-

लीनारि ॥ २३ ॥ दुहां स्वभाव उक्ति कारि मोपर स-
 कामं हे इह वस्तु द्योति त होति हे ॥ स्वतः संभवी अ-
 लंकार कारि अलंकार को उदाहरन दो ॥ को वस्त्रे उन दु-
 हुन को कौन थरा वै थीर ॥ दोऊ प्यासे जेठ के
 दोऊ सीरे नीर ॥ २४ ॥ दुहां नायका अरु नाय-
 क को अस्य संजेठ मास पिपा सित अरु जेठ
 मास को सीतल जल दून सौम्य भेदन रूप
 न निरूप अलंकार कारि दोऊ परस पर निर-
 वधि प्रेम पात्र हैं ताते समालंकार द्योति होत
 हैं ॥ कवि न ॥ कर वास गिरि को मल कमल
 करते उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
 है जीवै गो सेही वै जो मरे गो बहु मरे मोसे
 कैसे निरुज वालक को झेस देख्यो जात है
 मेरी कही वासना तो निकसि मारेगी कहि-
 चली जहां कारिका सिलान को निपात है ॥
 जहां कौंटे गोपी गोप गन संग नंद रानी तहां
 रस की वकी अचल अधि कात है ॥ २५ ॥ २६
 कवि न ॥ दोऊ जन दुहु को अनूप रूप निर-
 खत पावत कहूं छवि सागर को छैरें ॥ चि-
 ता मनि केलि के कालानि के विलासनि सों रं-
 ऊ जने दोहन के चितन के चोर हैं ॥ दोऊ ज-

ने मंद मुसक्यानि सुधावरसत होऊ जनेछ
 के मोद मद् दुह वीरहें ॥ सीता जबे नैनराम
 चंद्रके चकोर राम चंद्र नैन सीता मुख चंद्र
 के चकोरहें ॥ २६ ॥ राम चंद्र केनेत्र चकोर
 सीताको मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीताकेने
 त्र चकोर यह पर रूप कारि होऊ सम प्रेम
 जुताहें ताने समा कार व्यंग्यहै ॥ इहां कवि प्रो
 ता वस्तु कारि अचलको अथि कादू वोकौ
 जो वरनन ही श्री लक्ष्मीकी दृष्टीमें सब सा
 मर्थ्यहै यह अर्थ द्योतितहै ॥ कवित्त ॥ वाजिज
 ववाजे महा मधुरनगरवीचनगरिनिनिदिलल
 लकनि अकु लाईहै ॥ चिंता मनि कौहै अति
 परम ललित रूप अथा पर दूलह विलोकन
 को आईहै फौली महलनि मनि मेखलामान
 वा महा मनि नूपुरनकी निनादनकी भाईहै
 पहिले उज्यारी तन भूषन मयूषनकी पोथ
 ते मयंक मुखी भरोखन आईहै ॥ २७ ॥ इहां
 चंद्र प्रद प्रदीपा दिवाजे लहादवातेजस पादा
 र्थ तिनके आशामनिते पहिले ही जैसे ही प्रपे
 लतिहै तैसे उनके मुखादि अंगनकी अरु
 तन की दीप्ति फोलतिहै पहिले उज्यारी तन

भूषण मयूर के पीछे ते मयंक मुखी भारो ख
 नि आई है ॥ यह कवि प्रौढोक्ति शब्द वस्तु का
 रि इन सों चंद्र प्रदीपा दिक् तिन सौ उपमान
 उ उपमेय भावे है याते उपमा लंकार व्याप है
 २५ ॥ कविता ॥ परम अपार भवसागर उतावै एक
 एक नामकी सकाति उमहति है ॥ चिंतामनि
 कौ है राम भगति अगिनि तेरी कोटि कोटि मह
 पाप पुंजनि दहति है ॥ वचन अगोचर जो म
 हि माति हारी ताहि कहि कोसकत जाहि खुतो
 ना कहति है ॥ आपनी साहिबी सब देते निजु से
 वकान जु सेवकानि सहिबी अनंत है सो वै सि
 ये रहति है ॥ २६ ॥ इहां कवि प्रौढोक्ति ॥ सिद्धि र
 ता और प्रभुते औदार्य अ अधिक वरनन में
 व्यतिरेका लंकार परमै श्रव्य संपन्न रामसे रा
 मे और नाही याते अनन्व या लंकार व्यंग है ॥ क
 अत्रकी आचनि असंख्य अरि जोधा जारे प्र
 गटी ये विक्रम की रचना विशाल ही ॥ चिंताम
 नि कौ है खड्ग परसु दंड वर व्योम छिति भरी छ
 तज आगार गन लाल ही ॥ जरा सिंधु नृप च
 तूरंग चमू अगनित निकरी रुधिर धारितेज
 अगिज्वालासी कान्ह धनु मंडलते कटी सर

जाति प्रले चंड कर मंडलते चंड कर माल सी।
 २८॥ इहां कवि प्रोदोक्ति उपमा लंकारक प्रले
 कालिका सूर्य मंडल ताले निकारि कि रमि
 मंडल जैसे जाति को संहार करत है ऐसे
 मंडलित श्रीकृष्णके धनुषते सरवंदनिकारि
 करि जरा मिथकी सेनाको प्रले कीन्हो यह
 वस्तु द्योतित होति है कविनिवद्ध वक्ति प्रोदो
 क्ति सिद्धि वस्तुकारि ॥ वस्तु व्यंग्य धुनि को उदा
 हरन ॥ दोहा ॥ मैं समुद्यो यह आच्छही है अंत
 क चल वत ॥ मो सुत मासो इंद्र जित जिति व-
 ल भवन अनंत ॥ ३० ॥ अंतका बलवंत है यह
 कायन रूप वस्तु करि रावन को अंत काह को
 भय नाही यह वस्तु द्योतित होति है ॥ कविनि
 वद्ध प्रोदोक्ति सिद्ध वस्तुकारि ॥ अलंकार व्यंग्य
 धुनि को उदा हरन ॥ कवि ज ॥ जवते आपुन २
 ल्याये जानुकी लंका बीच भये ताही दिनते भ-
 यंकार निमित्त है ॥ परी सेना समुद्र के तट मै अ-
 संख्य कपि रीछनके वाटका बढत उत निज-
 है ॥ जोलों राम लखन तावे तेज वानन सों
 भये लंका पुरी के न भट भित्त भित्त है ॥
 तोलों रघुनाथ दिग जानुकी पठाइ दीजे ऐसे

भरे उन्नत विचार होत चित्त है ॥११॥ वहां या-
 वि पैदोत्त सिद्ध जो अलंकार असंदासनाको
 बढियो सो तुम्हारे दिनशाको उपरि कृत न-
 यो है जो सीता रामके निकट प्रठाइ देखीये
 शका विना सु न होइ ॥ कविता ॥ वारिदो शैली
 जवोले वृज धर प्रलय वारिद पदाग्र वृजानि
 समुभाइ है ॥ चिंता मनि आशुरी वैरवि
 धरषि गोपी गोप गैधन को गानको पत्रा
 है ॥ * ॥ दूरके गुप्तन वर्षा को भला भेष
 नको शाली महा मधुका को रोदन कावली
 बाही के हजार रका लोचन के आसुन रोव
 दर सुरंदर के मंदिर बहाइ है ॥ ३१ ॥ इहां पर-
 स पर कार्यकारि बोसो अन्यो न्या लंकार क-
 हावे कार्य वह मनी होइके ॥ असत होइके
 द असत कार्य कीन्हो वृजके धरनी वि-
 सकारीवो प्रलेखालीन भेषन को वर्षाको गु-
 मान जैसे दूर होइ ये सो वृद्धके सहेइ के
 नके आसु वरसाइ की मंदिर बहाइ नावन
 को बदलो हो कविनि बद्ध कता पैदोत्तार
 सिद्ध अन्योन्या लंकार वारि आपनो परि प्र-
 री श्रव्य अरु वृजको समा धान वह विधि

वस्तु अभी व्यक्त होती है ॥ ३३ ॥ कवि निवद्ध
 वक्ता ॥ दोहा ॥ सिद्धि अलंकार ध्वनि को उ
 दाहरन ॥ कविता ॥ अमल अमोल मुक्ता
 हलको हारते सौंह सनि अमोल मुक्ता हल
 के हारसी ॥ चिंता मनि चारु चीर खुल्यो छी
 र फेन सम सरद जुनै या सुख सुखमा के
 सारसी ॥ जगत हमारी पर रीभिंह हमारी ॥
 री राधा रिभा वारि सारदा को अवतारसी ॥
 धवल पुलिन मध्य जमुना की धार ध
 सी दुरद रदन धर पर जानु आरसी ॥ ३३ ॥ इ
 हांगन पर वृत्त श्री कृष्ण को देखि प्रनय को
 प करि अप्रसन्न हृदय श्री राधा को समु
 भा श्री कृष्ण उनके मन उदास को स्तुति
 कीन्ही सर स्वती अवतार की साम्य दे सा
 भि प्राय विशेषन काहे की प्यारी हमारी रा
 धा रिभा वारि रीभिंहै सवाते सुनि रीभि
 वेकी उन मुख भई सोई उन जूति कही
 धवल पुलिन पर धना की धार धसी
 दुरद रदन धर पर मानो आरसी ॥ यह उत्प
 दा संकार कहौ प्रसाद को और हेतु कहौ
 ताते समाधि सुकर कार्य कारणं तर जो वात

यह समाधको लहन है ताते। श्री राधाजू प्र
 सन्न भई अधर सुधा रसुधा प्रसाद दीन्हो
 ताते अलंकार व्यंग्य है ॥ यह स्वतः संभवी
 को उदा हरन में जानिबो ॥ दूसरो कविता ॥ उम
 डि थुम डि धन अंवर अंडंवर लौकाहं लग प्रले
 धन घटा चोर थिरि है ॥ चिंता मनि को है चि
 त चिंता जिनि करी कोऊ काहा लों विचा
 रो थों विचारो दूद चिरि है ॥ एककी काहो है
 कोटि धरा धर धरे रहो जौ लौं कोटि विधि-
 की उपज फिरि फिरि है ॥ जानौ जानि बडे
 परमान भारी गिरि है सो मेरे कार पर परमान है
 न गिरि है ॥ ३४ ॥ इहां परत इव्य परमान र
 कारि दिखायो यह विरोधा लंकार कारि नंद
 पुत्रजे आपु तिन काहा अधटन घटना प
 टी यत्व साधारन धर्म कारि आपनो गगो-
 ना नारायण साम्य व्यक्ति कारत भये हैं ॥ दो
 अर्थ शक्ति उद्भव अर्थ वारह भेद विचा-
 र ॥ सोपद वाक्य प्रबंध गत छंति समां ति-
 निहारि ॥ ३५ ॥ सिद्ध कहत सब सकल फल
 देत तुरंत ज्यो नाम ॥ व्यापक अरु गुन अूप
 जसु धवल कियो श्री राम ॥ ३६ ॥ इहां व्याप

का निर्गुन आत्म स्वरूप सों व्यापक थवल
 जसुकीन्ही निर्गुनते सर्गुन कीन्ही यह वि
 रोध करिये सो कार्य करिवो सामर्थ्य रामही
 मेहे और मे नाही ताते रामसे राम यह क
 वि निबंध वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार क
 रि अलंकार व्यंग्य है ॥ पद गत संभवी वस्तु
 करि वस्तु को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लोका ज
 गत है काज पर धरत नामको नेम ॥ तू अ
 ब करि हरि साह जि क दीन बंधु सों प्रेम
 ३७ ॥ साह जि क दीन बंधु पदके अर्थ विना
 प्रयोजन दीन बंधु हैं यह स्वतः संभवी व
 स्तु करि परमेश्वर परम दयाल है स्वतः संभवी
 वस्तु द्योतित होत है ॥ प्रबंध सक्ति उद भव
 को उदाहरन ॥ संवेया ॥ व्याकुल दौरि कै
 दौरु जने उठलै उत आइन जानकी देखी
 दिव्य अपोलक लाल गयो गिरि आश्रम
 भूमि अगु ठिके लेखी ॥ दुकब पयेधि अ
 गाथ बह्यो गति दीन कहू रघुनाथ की पे
 खी ॥ मानै अरन्य भई अमरावति सेमी
 अरन्य की भांति विदेखी ॥ ३८ ॥ * ॥ राम
 कह्यो सुनु सीत कदंबजु तेरे लरे संगामेरे

हेवेली ॥ तेलें फूल रची जिनमात गुलें सति से
 रिये कांठमें मेली ॥ माल देहें भुमदे दुहयो जिनकी
 यह हास विलास की केली ॥ मोहि वताइ अ
 केली किंतै वह पूरन वंदु मुखी असवेली
 ३८ ॥ सवैया ॥ वेलसे चाह उरोजन वेलीके ल
 रवी काहू जाकी लगे रतिचेटी ॥ सीत असोक
 विलोकी काहं जिनहै जग रूपकी राति समे
 टी ॥ पीत दुकूल लसे पट भूषनश्री मिथिला
 महिपालकी बेटी ॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि
 नि राजत दामिनि दाम लपेटी ॥ ४० ॥ तें मृग
 देखी काहूं मृग लोचनी बोलि किंतै अत्र जा
 इ छपीहै ॥ छछाडि छवीली यने परिहासन
 छाती विछोह के ताप तपीहै ॥ तें नहि जान
 ततेरे छुटे पलु तैरी जीव नसोह तपीहै ॥ दो
 लितै दूरि कौ याको गुमान जो कौ बिल वंजन
 में जल पीहै ॥ ४१ ॥ ऐ से सवै वनके दूम जं
 मुन पूछत जानकी जीकी पुकारै ॥ व्याकु
 लहै मुरभाइ गिरे उछलै मनि नैनन नीर
 की धारै ॥ दुख सहे दधिकी लहरें जनु मर
 छा आवति जाति अपारै ॥ लहरा के उपचा
 रजगे मुख भाई को दीननिहारि सन्दारै ॥ ४२

मेरी भई यह भांति दसा दूत रैन छपी जो अ
 जो नहि आई ॥ रामजू सेसे कही कवल
 न सीताजू सेसी करी निठुराई ॥ वाघन बीच
 मृगीसी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा
 पाई ॥ मै जिनको अपराध कियो तिनरा
 कस दंडन घेरि कै खाई ॥ ४३ ॥ इहां दूसरे क
 विजते अंत को कविज छोड़ौ प्रबंध को ऊ
 न माद व्यंग्य है ॥ उभय समुद्भव को उदाहर
 न ॥ दोहा ॥ लसे हारके मध्य सखि सोभोथ
 रे विसाल ॥ हिये सखि वो योग्य है यहु मनि
 नायक लाल ॥ ४४ ॥ इहां वाच्य अरु व्यंग्य
 अर्थ के उपमानो प मेय ॥ भावते उपमा
 लंकार व्यंग्य है सलक्ष्य भेद्यों कहे एक चा
 लीसि ॥ दोहा ॥ असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
 अनिरसा दिक् चित्त ॥ दूतै आदि पद लभ्य
 जे तिनै गनावत मित्त ॥ ४५ ॥ प्रथम हिरस पु
 नि भाव गनि तिनके पुनि आभास ॥ भावसां
 लि अन भाव को उदै वखानि प्रकास ॥ ४६ ॥ भा
 वसंधि पुनि सबलता भावन की मन अनि ॥
 असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनके भेद वखा
 नि ॥ ४७ ॥ अशी तर रस स्वर रूप निरूपने ॥ *

गनि विभाव अनु भाव अल संचारी ननि ल्वा
३॥ जित थार्द है भाव जो तिन रूपा लता
४८॥ कथुव यथा चास अविद्य यह तीन
हु को काम कोदु ॥ अंजन जोन लये फे
तो अलक्ष चास हैदु ॥ ४९॥ भाव लक्षण ॥
दोहा ॥ मन विकार कहि आवसों व रूपा ल
नारुपा ॥ विविध मंथ वादता कहत ताका रू
प अलक्ष ॥ ५०॥ जो नहि जाति विजाति री
होइ निरस वृत्त रूपा ॥ चद रूपा नह तए ल
ग रुचिर थार्द भाव अलक्ष ॥ ५१॥ वादों
हित रामाहि सुख दुख अल अल ज्ञाता ॥ मन
विकार संचारि तजि यह थार्द फिर पात
पावै ल्यावै आपने रूपहि और अरे ल
विकारु ह भाव ननि रहि विछे पदा देवा ॥
५४॥ सो थार्द है समुद्र सो जल लरि ॥ सो
स्वात ॥ तव लता यह नह रूपा जो
वि दात ॥ ५५॥ पुण लहि मति अल लक्ष ॥
नि बहु रि सो क गन नोथ ॥ पुनि उत लक्ष
जु गुप्त पुनि विस्मय लक्ष लक्ष ॥ ५६॥
यह थार्द नव भेद जो ताको जु है निदान ॥
कार ज सद्र कारी जगत वाधि तामे वाहि आव

५७॥मनि विभाव अनु भाव पुनि संचारीय
 ह नाम॥ विभाव नादि अवलोकिके व्यापा
 रन अमि राम ॥ ५८॥ जिन तिहुके अवलो-
 किके करि व्यापार गनाइ ॥ विभावना अनु
 भावना संचार ना वनाइ ॥ ५९॥ सब जन सा
 धारन त्रिविध व्यापारन सो तीन ॥ सुहृद
 य हिय चिर भावको व्यजन धरम नवीन ॥
 ६०॥ साधारन व्यापार बल सब साधारन हो
 इ ॥ नियत प्रभातहि मै यदपितहां अपर मि
 त होइ ॥ ६१॥ महा नंद उल्लास वह सुहृती
 सेवन कोइ ॥ सज्जन सुरवदजु मंथ मै रस
 नि रूपना होइ ॥ ६२॥ रत्या हिक के हेतु जेका
 न जौंर सह चारि ॥ जगामे तेई तकात मै आ
 न नाम निर धारि ॥ ६३॥ विभाव नादि को
 हो ॥ किक व्यापारानि सुमिना ॥ ते विभाव अनुभाव अर
 संचारी धरि चित्त ॥ ६४॥ साधारन व्यापार
 तें सब साधारन जानि ॥ ते विभाव अनुभा
 व अरु पुनि संचारि बरवानि ॥ ६५॥ थार्इ सा
 भायह कहिय कसत वासना रूप ॥ व्यक्त वि-
 भवा दिकनि मिलि रसहै कसत अनूप ६६
 प्रथम बाहत शृंगार के विभा वादिइत आ

नि॥ आगे सिंगरे सवन के कीहिनो सिंगरे जा-
 नि॥ ६७॥ थाइ हेतु जग मध्य जो कवित म-
 ध्य सुवि भाव॥ आलंबन उद्दीप नो द्विवि-
 ध प्रसिद्ध गनाव॥ ६८॥ नायका ल॥ देहा
 आलंबन शृंगार को तिष्ठ नायका वरखानि
 कालनि पृथीन विला सिनी सुंदर तादी द्वा-
 नि॥ ६९॥ कवित॥ वदन में दिधि पर्तान जो
 रीकी नजाली जाति गौर गाल दोहि तारि के
 सरिके रंघकी॥ चिंतामनि कोहे चार दीव्या
 सी हाही लसे निसि नख तावली मुकान पी-
 ति मंग की॥ मानो ग्रेस पुंदलाल दिव पर वि-
 ल सत अथर की आभामुवाता हल के सं-
 गकी॥ यग परको सरंग अंगन अनूप जोय
 अंगन में ढाढी मानो अंगना अनंग जो ७०
 दोहा॥ दिव्य अदिव्य कोहे सुकादि दिव्या दि-
 व्य विचारि॥ त्रिविध नायका जगत में सं-
 थन बहु निहारि॥ ७१॥ दिव्य देव तिव्य वर्ण
 ये नारि अदिव्य वरखानि॥ अमर नारि भुव
 अव तरी दिव्या दिव्य सुजानि॥ ७२॥ नखते
 दिव्य तिया वरन सिखते विबुध अदिव्य ॥
 नखते सिखते वरिषे जोतिय दिव्या दिव्य ७३

हानव सिद्ध वर्णनं जानवी ॥ दोहा ॥ प्रथम २
 त्वकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि
 सामान्या समुभियै यों कवि लसत बखानि ॥
 ७४ ॥ स्वकीया लहन ॥ दोहा ॥ जो अनेही पुरु
 षमें पीत वंत निर धारि ॥ कहत स्वकीया ना
 यका लखन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सु
 धार्द्र लाज जुत गुरुजन सुकवि विचारि ॥ प्रि
 तम को चित्त जनिहो काही स्वकीया नारि ॥ ७६
 कविता ॥ चिंता मनि सखी कौरु सीख हेति
 कहै जब समता को जानिहो पीतम सी जायसो
 जीवको बरने बाहि बरज्यो चहै लजाइ कहि
 पेन सखी बरहु लह चरी तियासो ॥ गुरुजन २
 लंमत सकल अत्यरन बानी बरलत होत २
 जाह चाहिय सै ॥ पीठ जानि गुरुजन हमे नवा
 ल जानि गुरुजन जानि काहा बोलि जानि पिथ
 सो ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ सुधा मध्या पुरालभा
 तीन भेद निर धारि ॥ सुभग स्वकीया नारिके
 लत कवि मंथ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जीवन अं
 कु वित सो दुष्ठा बर नारि ॥ दुहु बहि काम सं
 धिमें लव व्य संधिनिहारि ॥ ७८ ॥ डवन चह
 त जीवन ससौ सुंदरि कला निवेत ॥ मंद् मधु

र मुसक्यनिमुख विद्यो जज्ञेह्या खेत ॥०८॥ :-
 कादि न ॥ राधाजूको अंश रंश रचि ल्यो कृति
 र वास्तु गुलादनको रंश रचि मी र गालि रंश
 भिरी ॥ चितहि चुरावति सुको विल कीन
 नी लगी कानन चितौति प्रेम नदकी मनो
 भिरी ॥ चिंता मनि सोही है रसाल मोरेकु
 जनि से अखिल के पुंजान सुकानो मनि आ
 चिरी ॥ बातन के कीच तसनाई आदि सिद्धि
 रंशे माघ सुदी पंचमी मै ज्यो बसंत वीहि
 शी ॥ ८० ॥ दोहा ॥ मुराण आवि दित जोर दना
 अविहित कामा पेलि ॥ विहित मनो मव जोवना
 बहु रिन दोहा लेखि ॥ ८१ ॥ पुनि विप्र ध्व न
 बौद गानि कोमल कोपा जानि ॥ चिंता मनि
 कानि कहत है बट विधि मुखामानि ॥ ८२ ॥
 अवि दित जोवना ॥ संदैया ॥ वांकी भई
 भूबादी विन कारन लोचन कानन अपानि
 रहे है ॥ छशती कछु उचकी विन ठोर वंकी
 चितवै इक भाउ लहै है ॥ पाइ उठाइ धरे
 गदग मनि बैन सकौच न जात कहै है ॥
 भान्हि मोन विचारि कौं नैर अमानि दो
 न सुभाव लहै है ॥ ८३ ॥ अविहित कामा ॥ को

किल वृक सुनै उमरौ मनि और सुभाउ भ
 यो अवहीको ॥ फूलीलता दूम कुंज सुहात
 लगे अलि गुंजत भावत जीको ॥ कारन को
 न भयो जजनी यहु खेलु लगे गुडियान
 को पीको ॥ काहेते सावरो अंग छवीलौ ल
 गौ दिन दैकते नैननि नीको ॥ ८४ ॥ विदित जो
 वनी काहूको पूरव पुन्यलता सुतौ बेलि
 अपूरव तू उलही है ॥ सोने सो जाको खरू
 प सबै वार पल्लव कांति कहा उमही है ॥
 फूल हंसी पालहैं कुच जाहि के हाथ लगे
 सुघ्राती सो सही है ॥ आली कियो सुनिके
 बतियां मुख क्या दूतिया मुख नाइ रही है ॥
 ८५ ॥ विदित काम ॥ कवित्त ॥ काम कालानि
 की चोप चढ़ी चित अंग अनूपम दोप भ
 र्द है ॥ केसरि सो थो सुहान लग्यो मनि चं
 दन बेलि वनाइ दई है ॥ भौंह उचाइन चा
 इक बैन कछू सुरिके मुख कयानि लई है
 ओहन सें ठि लगी अठिलानि सो वैसु नी
 की ठौनि नई है ॥ ८६ ॥ वेसरि वारहि वार
 उलान्त केसरि अंग लगावनि लागी ॥ अदि
 है नैननि चंचलता दृग अंचल वाम छपा

बनलागी ॥ दूल्ह के अवलोकन दो दाम्प
 टानि भारी खुनि आवति लागी ॥ श्रीमदोता
 नकले बतिया मन भावनकी लन भावन
 लागी ॥ ८७ ॥ नबोदा लक्ष्मी ॥ दोहा ॥ जोल
 जा भय परा धीनरति होनिब बोदा नोद ॥ २
 हिमें पतिहि पत्याइ कछु विप्र अत वान्ता र
 होइ ॥ ८८ ॥ नोल बधुदा रति संसे लखा अ
 ति अधिकाइ ॥ अति लख दायका होति त
 व जब कछु पतिहि पत्याइ ॥ ८९ ॥ सेवया ॥
 रासतिजो नहि सामुहे तेन सुवेन काहापि
 यसा मिलि भाखै ॥ याह गौह सिमिककानि
 भजे पकोरे करसों दम नीरति नांदै ॥ यौन
 नबोदा बधुद सकी वेवो सो अयेने तनेम
 अभिलारै ॥ एक छिनी अरिवा अरिज्यो
 जल विंदु पुरेनि के घात में रहै ॥ ९० ॥ दा
 लके मिलन आस राय चिद लाल लाल
 लल वात पल रावा अरिज नददरे ॥ नरदी
 सब ल्याई नदलाकी छल बल करिद छवी
 लो छवीली के सबल अंग हरे ॥ दारे लो
 वरी प्यारी सखी मेज ऊपर सु आखिन वोल
 पर है आमू यों दर हरे ॥ चारु कोस मध्यम

धुकर अकुलाने मानो छलकी रही जन
 के ऊपर है लहरे ॥८१॥ विप्र अब न बोला ॥
 सबैया ॥ लालकी दीठि बचाइ के बालकि
 यो चहे हरि प्रदीप की दाती ॥ पीके हिये छ
 ख पुंज बढौ सुतौ पूछत ही कहु वात
 सुहाती ॥ लागत ही तल नै पतिको कर चं
 द मुखी चित चौकि सकाती ॥ सोई है आ
 ईके पीतम साथै सुहर हाथ छपाइ के
 छाती ॥८२॥ सोईके मेरी प्रतीति ले देखो
 हो भाजिन जाउगी योंही डरो जिन ॥ नेकु
 दया करौ काहे खि भावत राति की भांति
 सो अंग भरो जिन साथ तिहारे हों पैटि
 रहीं पर छातीके ऊपर हाथ धरो जिन ॥
 जो कहु की कसो बालि परौ प्रिय पायु प
 रो कहु आजु करौ जिन ॥८३॥ कोमलके
 पा ॥ सबैया ॥ और तियाकी छुई छुटिया
 प्रिय नौल बधू सो कहूं लखि घाई ॥ भां
 दि भारोखे ह्वे अंचल द्रोह दगंचल ताकि
 के भौंह चढाई ॥ अंवर द्रोह छपाइके अं
 नन पैटि रही पलका रिसवाई ॥ मेरी तू प्या
 रो है पानहुते मुंह चूनि लडाइयो कांठ लगा

ई॥८४॥मध्या लक्ष्मण॥दोहा॥जानिय के त्रिय
 होतुंहे लाज मनोज स स्यात॥ताको मध्या द्रा
 हत है सिंगर सुकवि सुजान॥८५॥सर्वेया॥
 पैल्यो चैहै पियको त्रिलोद वनेन काछू वि
 न छूयट खोलै॥भावेन संग छुट्या पतिको
 सकु चैनकोरे काछू काम कालै॥चाहति र
 वात दाह्योन दाह्यो पर जातरह्योन रहे अन
 वोलै॥भूलतुंहे मन प्रान पियारी को लाज म
 नोजके बीच हिडलै॥८६॥दोहा॥काहि आ
 रूदो जोवना आरूदे मदना जानि॥पुनि विचि
 त्त सुरता कछू पगलभा वचना मानि॥८७॥
 अरूद जोवना मद उदा हरन॥सर्वेया॥मन
 नैन विमाल रसाल चितौन पैलाज सुभाव
 लए अपनौ॥काचलावेलचै कुच भारसों लं
 कासैव तन कांचन रंगगनौ॥पगपैजन औ वि
 छिया भालकैं कल किंकिनिने वरनादचनौ
 यह पूरन जोवन चंद्र मुखी चली आर्वात लं
 द गयंद मनौ॥८८॥अरूद मदना मध्या॥
 कावित्त॥अवलोकनि मै पलवौन लंगें पल
 वौ अवलोकि विना ललकैं॥पतिके परिपूर
 न प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगेन लवै॥ति

यदी विहरी ही विलोकनि मै मनि आनंद आख
 नियों अलकै ॥ सवत कविजन को रसु ज्यों अ
 रद रानको ऊपर है छलकै ॥ ८८ ॥ कविन ॥
 चेतकी चांदनी को थों चंद अवलोकन ते छीर-
 निधि छीरको पूरन पूर उमगे ॥ चिंता मनि
 कोहे मन आनंद मगन है को विहरति दंपती
 रस प्रेमहो पगे ॥ अथ खुली अस्त्रियां सुरति
 सुरन रसवस मानो भोर अथ खुले कामल-
 नि ले खगे ॥ प्यारी के सकल तन अमजल
 बिंद सोहे कनकलता में मुकता फल मनो
 लगे ॥ १०० ॥ प्रगल भा जोवना मध्या ॥ सवेया ॥
 सहे प्रवीन महा सिगरी परि हास केलहन ल-
 हगुने गी ॥ मोसों सवा रिहि वेलनको चतुराई
 को वैन विचारि चुनेगी ॥ नेक रहो मति बेलो
 आवे जनि पावन पैजनि भान उनेगी ॥ जानती
 हैं सगरी सस्त्रियां मेरे नेवर की भान कार सुने-
 गी ॥ प्रौढ़ा को ल ॥ दोहा ॥ कोलिकला में चतुर
 अति प्रीतम सों अति प्रीति ॥ लाजत जेव्हे मद्-
 नवस प्रौढ़ा की यह रीति ॥ * ॥ प्रौढ़ा भेद ॥
 दोहा ॥ प्रौढ़ा जोवन प्रगल भा मदन मत्त पुनि
 जानि ॥ केहि पति प्रीति मली सुरति मोद परखसा

मानि ॥१०३॥ प्रौढजोवना प्रमत्ता ॥ संवेद्या ॥
 कोटि विलास कटाक्ष कालील वदोवे ह्लास
 न प्रीतम ही तर ॥ यों कनि यों अन्नपम रूप
 जो मैनका मैन वधू जाहि द्वैतरा सुदोह साग
 सुपेद मै सोहत यों छवि उंचे उरो जन की तर ॥
 जोवन मत्त गयंद के कुंभलसे जनु गंगा तरंगनि
 भीतर ॥१०४॥ आरिखनि सुदिवेके भिसि आनि
 अचानक पीठि उरोज लगावे ॥ केहू कहूँ मुस
 क्यादू चितै अगरादू अन्नपम अग्रा दिखावे ॥
 नाह छुर्दछल सों छतियां हंसि भौह चढादू
 अनंद वदावे ॥ जोवन के भद मत्त तिया हित
 सों पतिको नित चित्त चुरावे ॥१०५॥ गति प्री
 ति मती को उदा हरन ॥ संवेद्या ॥ लीनसी ह्वै त
 न प्रीतम के सुभरै अति अनन सों जियको ॥
 मनि आपुहिते मुख चुवन दो सुहरे मन मोह
 न के हियको ॥ छन मान वितावति है छन वै
 सुछना छन है सुख यों पियको ॥ रति योलि वि
 लासिनि छेडि ली ज्यैर नभावे दाछू नरनी ति
 यको ॥१०६॥ रत्या नंद परवसा ॥ संवेद्या ॥ प्रीतम
 को रति रंग सभै सुमनो रसको वरसा उन्नव वै ॥
 ऐसे भुजा भरि भौंटे रही जनु है तन की कीरि

कलई है ॥ सुंदरि मोहन के मुखसों मुख लाइ अ-
 नंद में लान भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
 अंगन बीच विलाइ गई है ॥ १०७ ॥ होह ॥ मध्या
 प्रोहा मान में कावि मानि त्रिविध बरखानि ॥ थी
 रा प्रौर अधीर तिय धारी थीर मानि ॥ १०८ ॥ व्यं-
 ग कोप प्रगटे ज्युति मध्या थीर होइ ॥ को-
 प वचन बोलत प्रगट मध्य अधीर होइ ॥
 १०९ ॥ मध्या थीर ॥ सर्वेया ॥ सांभते चंद्र का-
 लंका उच्यो मन मेरो लै साथ रहे तुम न्यारि ॥ विदि
 वची मनि मंदिर बीच लगे सब दीप प्रकास
 अध्यारि ॥ प्रातहि पाइ सुधा मय पार नानेन
 चकी रन मोहन प्यारि ॥ बंधान अनूप काला प्रग-
 टो अकलंक कलानिधि मोहन प्यारि ॥ ११० ॥ म-
 ध्या थीर ॥ कावित्त ॥ कहां जागे रेन आस निपट
 उनीदे हो चू सोइ रहौ प्यारि विधौ आछे पर
 चंको है ॥ रबेलत हैं चांदनी में ग्वालन के संग काहू
 ग्वालन को नाम लीकहा कछु संको है ॥ योही भले
 मान सैल गावती कलंक हो को देख्यो कहूं चिंताम
 निरतिहू के अंको है ॥ पीतरंग अंबर सुनील रंग भयो
 लाल भूठी हो गुपाल तुम्हें काहे को कलंको है ॥ १११
 दोहा ॥ वचन सुदित के संग काहि कोप प्रकासे नारि

मध्याधीर अधीर तिय कर्तव्य जल कस्तु विचारि
११२॥ उदाहरन ॥ सवेया ॥ नाति रहे मन्त्रि लाल काहं
रमि इहां दुखु बाल विद्यो राले हं ॥ आर्य शरै अरुना
इय होत सरोस तिया नून देन कोहें ॥ लाल
भये लग को रनि अतिवो यो अंलु दाव दो वं
हरहे हें ॥ चोचन चोप यतो लिघिले दिचख
जन दाडिम बीज गहें हें ॥ ११३ ॥ होहा ॥ प्रीदा
धीरा नेकु नहि कोपै करै प्रकास ॥ पति को
अति आदर करै रतिते हं उहास ॥ ११४ ॥ सा
वहि त्या को उहा हरन ॥ सवेया ॥ दोलति काहे
न बोल सुने मधुरी कतियां लल सोहत भारेवं
बोलै काहा काहु चित्त मेहें दुख पित्त वदेकावु
लागती हारें ॥ दाहे हें लाल दिलो दो नवाल
बैपों तेरी विलो कानि को अंभलारें ॥ लाल म
ई विन काजहि आजु संदेसैं काहा मेरी दुख
ती आरें ॥ ११५ ॥ साहर धीरा ॥ सवेया ॥ आजु
वों पलकाते थरो पुहमी पर साथे हमारे न
पावु थरो ॥ काह बोलौ सरवीन सों संभ्रम सों हं
सि बोलि हमारे न ताप हरो ॥ कित जात हो पान
न आन को माल सों आन शुजा भरि अंकभरो
दुख देत समे दिन वाहर ज्यो यह आहर आप

नो दूरि करौ ॥ ११६ ॥ रत्यु हास थीरा ॥ सर्वेया ॥
 वेलौगी वैनतो वानन चैनन वेलौगी वैन
 नंद भईहौ अंचल सीं मुख मूँदि रहों तव ध्या
 नमै जो धरि चित्त लईहौ ॥ वैठति काहे न
 हौ दिग सुंदरि मोको हई सुख रास हईहौ ॥
 मोहि गनौ निजु हास मनौ तुमको विन काज
 उदास भईहौ ॥ ११७ ॥ जावक रंजित माल २
 विधे मन भावन भावती गेह सिधारे ॥ दूरिले
 भौं हकमान चढ़ादुके सुंदर नैन कटाक्ष लेडा
 रे ॥ आदुके बालम बांह गही दिग चंद्र भुखी
 भुगिके भामकारे ॥ चंपक मालसी कोम
 ल बाल सुलाल चमेली की मालसों मारे
 ११८ ॥ दोहा ॥ प्रौढ़ थीरा थीर तिय वेलै थी
 र अथीर ॥ चिंता मनि कवि कहत है समु भा
 त बुद्धि गंभीर ॥ ११९ ॥ कविता ॥ मेरी कहा च
 लीहौ न आपनी कहति बात वही भली करौ कथ
 काहूसौ निवाहिजौ ॥ मोहि जजिगर जादू वासों
 सुकरम कियो यह कौन धर्म तजल अवाहिजौ ॥
 चिंता मनि कहै क्यों नवाकी सुधिलेत जादू जाको
 मनको अवाहति हिंसे ॥ जापैरति मानि
 प्यारे आस हौ हमारे घर सको धरि करौ वाकी

प्रीति को मुलाहिजी ॥ १२० ॥ दोहा ॥ जहां हंति
 हैं दैतिया तहीं रीति यह जानि ॥ पुरुष अ-
 धिक चह्ये प्यारे ते ज्येयु कानिया जानि ॥ १२१ ॥
 वाविज * ॥ मका पलका पै वैठी सुंदरि सलोनी
 होऊ चाहिबो द्युपीली लाल आयो रतिवेलि
 धर ॥ चिंता मनि कहै दिग बट्यो अनिपीतम
 पै काहू सों कछून कहि सवात दुहू के डर ॥
 सुख के मनाइवे को एक को दिखायो नाह
 विपरीति रतिको सुरूप लखि चित्र पर ॥ जो
 लों सज्जुचन वह आरेखें मूदि रही तौलों पान
 प्यारे प्यारी को कुचन पर रख्यो कर ॥ १२२ ॥ प-
 रकीया को लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रीति करै पर पुरु-
 ष सों परकीया सो नारि ॥ उंठ्य और अनूढ
 गति सोहै भांति विचारि ॥ १२३ ॥ ऊढा होइ वि-
 वाहिता अविवाहिता अनूढ ॥ परकीया है भां-
 ति की जानत जगत अनूढ ॥ १२४ ॥ ऊढा को उ-
 ढा हरन ॥ सवेया ॥ अति सासु भाके ननदी स-
 त रातलखै कुल कानकी हानपरी ॥ घरवाहि-
 रसों वलि वैर वट्यो सु अजौ तुमको नहि जा-
 नपरी ॥ मनि मांभ गली तुम वांछ गही सु-
 तौ कौन अही यह वान परी ॥ वह बात वाही

हुती कानन में सुती कानन कानन आन परी
 १२५॥ दोहा ॥ सुरत गीपना चतुर काहि कुल-
 टा वहुरि वखान ॥ काहत लखिता सुकाविजन
 अन्नुसेना उर आन ॥ १२६ ॥ सुरत गीपना को
 उदा हरन ॥ काविज ॥ गीखम में वापी कूप स-
 रवर सरवे सव जल नदी भिर नाले आवत
 नगर में ॥ तहां जात आवत लगत कांटे भर-
 न के होन जैहों होंही पानी पीवत हों घर में ॥
 अति दूर हीते भारी गागरि लिआ एकै सो
 छूट पसीना अंग कां पै घर घर में ॥ कहति
 हों पुनि सासु ननद भुकेन मोपे जाऊंगी
 तो आऊं में भर दुपहर में ॥ १२७ ॥ दोहा ॥ वर-
 नत सुकाविजु नायका द्विविध चतुर भिर मो-
 रा ॥ वचन चतुर काहि एक पुनि क्रिया चतुर
 पुनि और ॥ १२८ ॥ वचन चतुर को उदा हरन ॥
 काविज ॥ एहो तुम कौही नेकु धरै क्यों रहौ दे-
 खौ चिंता मनि वागन में को पै लहलही है ॥ तु-
 मको धरम है है देव अरचन काज सुंदर चमे-
 ली की काली कछू कचही है ॥ वाग में अध्या-
 री इस लागतु है जात उत ताते हों काहति वहां
 जो लोग और नहीं है ॥ कैमें करि जाउं फूलले

नहों अकेली इहांतो आछे आछे फूलनकी
 वेली फूल रहीहैं ॥१२८॥ क्रिया चतुरको उ
 हाहरन ॥ संवैया ॥ कैसेहु देव वधुनमे कोउजु
 होइतौताकी बराबरीवाछे ॥ सोहतिहें नखते
 सिखलौं मनि अंग अनूप गिंगारनवाँछे ॥
 सीलबदाइ जनाइ विने चक्षे सामु अैनद
 जिठानीके पाँछे ॥ नैनके सैननि मोहनके
 मुरिके सुसवयाइ विलोकति आँछे ॥
 १३० ॥ दोहा ॥ जहां प्रीति परपुरुषकी प्रा
 दितजगमे होइ ॥ ताहिलहिता बाहतहै
 चिंता मनि कवि लोइ ॥१३१॥ संवैया ॥ लोना
 कीलाजसों काज कहा मन मोहनते काल
 कानि दुगीहैं ॥ दोलें कहा हम बादरीहैं यह
 सावरी सरति देखि ठगीहैं ॥ जानति नंदजि
 ठानी औ सामु चहूं दिसि मेरे द्वारे जगीहैं
 जाने सौकोऊ हजारकहो हम नंदकुमार
 के प्रेम पगीहैं ॥१३३॥ दोहा ॥ बहु पुरखनि
 कीकेलिकी जाके मन अभिलाख ॥ कालदा
 तासों बाहतहैं सब सज्जनवाविलाख ॥१३४
 संवैया ॥ छैलनिगैलमें आवत देखिदोभां
 किभरोखनि रीभि रिभावे ॥ चंचल अंचल

डारे रहे अग्राड अनूपम रूप दिखावे ॥ ला-
 दूद की गति नैनन की निरखे निरखे किन
 चैनन पावे ॥ जोवनके मद मत्त तिया तजि
 काम की बेलिसु औरन भावे ॥ १३४ ॥ अ-
 नु हैना ॥ दोहा ॥ संकेत स्थलके नमत भावि
 स्थान अभाव ॥ मीत राये हों ना गर्द जो पोछ
 रीछ ताव ॥ १३५ ॥ हेतु अनु सैना त्रिविध
 विधि बरलत सबका वि राड ॥ कामते देत उ-
 हा हवल लव सज्जनन सुनाड ॥ १३७ ॥ प्रथम
 कावित ॥ एहेहे सजीव को उकाछे गोड नकेहे
 त अथर मलैत कौन टाट स टाटत है ॥ सिगरे
 कसई है इनके काहा सुभाड औरनके तो हाड
 हाड हियरा फाटत है ॥ चिंतासनि सज्जन इहां है
 तिन्हें पूछे देखे आगे न्याउ लै है वैली इनको डाट-
 त है ॥ हेरे इहि देस आलीखे निरदई लोरा हरे
 हरे सब अहरको काटत है ॥ १३८ ॥ दूसरी सेवेया
 आरी अटारी चौबारे त्यों मंदिर वैट्का सून सुहावन
 जीके ॥ खेलन को तुमको थन ठोर है जैसे उ-
 ले सुख पावे गी नीके ॥ हैमनि सुंदर लोग उ-
 जा गर नागर नेह पगे परतीके ॥ ज्यों दूहां
 त्यों ससुरारि तिहारी में वाग बडे दिग हैं ॥

खिरकीके ॥१३८॥ तीसरी ॥ सर्वेया ॥ अथपं सी
 त परोसी सों सुंदरि सने चौवार सहै त वरला
 नी ॥ हूं उन बोलि कपोत की वान अमा पर
 आनि दूसरत ठानी ॥ जागतुहे भरत यहज
 नि मनोजके वान लगे यह रानी ॥ अइ म
 यों तनमे परसे दपरी पति संगखरी अबु
 लानी ॥१४०॥ मुदिता ॥ सर्वेया ॥ द्वै दिन दो
 पथ तीरथ न्हानको लोग चल्यो मिहिदो
 सिग रोडू ॥ सासु वह सों कह्यो यों रहो य
 और रहै नहि राखिय कोइ ॥ सुंदरि अणन
 सों उमगी यह चार्हात ही लुभयो अइ दोइ ॥ एम
 सों पूरन दोऊ जने घर आपु रही की न हो
 नन दोइ ॥१४१॥ दोहा ॥ परकीया कानि प
 ता सुते अनूटा नारि ॥ सब मंथनको किलो
 कावि मन कहत विचारि ॥१४२॥ अने दोहा
 जांमे कछू मनि सोचु स कोचन जाहि से
 सोतो कछू लरवाइ ॥ आवत हीं हन किंवा
 रस मोहन के वसिको लल चार्ड ॥ दिरे दि
 ना कल नेकु नहीं अरु देखै तो गोदुन वां
 च वाइ ॥ जांमे हंसे हू कालक लगे यह डो
 थों वैस विस्वा सिनि आइ ॥१४३॥ दोहा ॥

कहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जाजा
 नि ॥ बहुरि विरह उन्नकांठिता विपुलव्य सु
 निमानि ॥ १४४ ॥ पुनि खंडिता वरवानि ये
 कालहं तरिता नाम ॥ पुनि कहि प्रोषित
 भर्तृका अभिसारिका सुवाम ॥ १४५ ॥ सौस
 व भेद तिहून के भेदन हू के होत ॥ जे जैसे
 संभवतते तैसे लहत उहोत ॥ १४६ ॥ सो स्वाधी
 न प्रिया कही जाके नाह अधीन ॥ सुतो सदा
 आनंद मय वरनत सुकवि प्रवीन ॥ १४७ ॥
 सुग्धा स्वाधीन पतिका उदा हरन ॥ संवेया ॥
 जोसो छवि मोहि दिखाइ भारोखेवै सोछ
 वि पाइ कही सुर अंगनि ॥ चलि नौलवधू
 मनि नैन चकोर सज्याये काहा है सुधारस
 सींचनि ॥ अंबर लाल मै यों मुख ज्यों प्रतिविं
 वत चंद्र सरस्वति वीचनि ॥ मानो उदै गिरिकं
 दरा अंदर दंडुरन्यो कुर विर मरी चनि ॥ *
 १४८ ॥ मध्या स्वाधीन पतिका ॥ संवेया ॥ फू
 ल्यो फाल्यो मृदुवाग वन्यो मनि मंदिरकी ग
 तित्यो चटकीली ॥ प्यारे यों प्रेमकी खानि खु
 ली अरि वयां विलसैं मुसक्यानि रसीली ॥ कां
 चनके रंग अंगलसैं पिय ते रेही रंग रगी

वै रंगीली ॥ मे रेही संग थिहा करिदे अव
 लाजसों काजु कछून छर्दीली ॥ १५० ॥ २
 प्रौढ़स्वाधीन पतिका ॥ संवेया ॥ आपुही पा
 हुन देत महा उर पेनी गुहे अरु बेनी डरुनि
 आपुही वीरी वनाइ खदावे अनेका विला
 सनि रीभा रिभावे ॥ तेरी सखी मनि आपन
 मित्र सों ते रेही प्रेमकी वार्ता बलावे ॥ तोते
 त्रिलोक मे को बड भागिनि लौतिय वीपिय
 को बस पावे ॥ १५० ॥ देवेन वेषी सुख मान
 धनो मनि जासुख मानको सोर भयो है ॥
 सांदरो सुंदर जोसिगरी वृजु नारिन वंग पि
 त जोरिलयो है ॥ आपने आइ अटायें बड
 चन घोरि चदानको मोर भयो है ॥ नंद वि
 सोर भारो खेकी वोर सुतो सुख चंद चंद
 भयो है ॥ सामान्या स्वाधीन पतिका ॥ देका
 या पर नेह निवाह तू है यह निपट लकात
 लन धन मन सब तोहिदे लुटी अरु यद दान
 १५२ ॥ पियको आगम जातिले अंग रिखा
 रै वाम ॥ सौध सेज सुंदर रेषे वासक मज्जा
 नाम ॥ १५३ ॥ सुधा वासक रज्जा ॥ सुवेना ॥
 मंदिर सुंदर धूपे सुधा मय जो नुकी जोति

जहां अधिकाली ॥ प्यारी सिंगारी पवीन स
 खी मनि मोतिन की सुखमा सर सानी ॥ से
 ज रची पय फोन सीखी पिय आगम बेरी
 जेते निथ रानी ॥ हेरी अली सों चली हंसि
 नौल बधू मुखकी लन बाडूल जानी ॥ १५४ ॥
 अध्यावाः ॥ सवेया ॥ मंदिर थूप कोरे से से मं
 दिर इंद्रिया देवी पुतन्नु निहारति ॥ सेज सं
 वारे इकंत में आपु इकंतहि आपुन अंग
 सिंगारति ॥ फूलनि हार सुगंध रच्यो जन
 मेरेसे और सबी को सुधारति ॥ इंदु मुखी
 पिय आगम ओसर योंरति केलि की साज
 संवारीत ॥ १५५ ॥ पोढावाः ॥ सवेया ॥ चंदन
 लीप्यो मनोहर मोनसों थूप्यो थले अगरो
 इव थूपनि ॥ इंदु कला रित सेज रची पिय
 आगम सुंदरि सेदू सरूपनि ॥ अंत सिंगार
 थरे लहने जेवने मुकता मनि इंदु अन्त पनि
 दास में सेसो रवुल्यो वह मंदिर मंदिर मा
 नो रवुल्यो रस रूपनि ॥ १५६ ॥ पर कीया वा
 सक सज्जा ॥ सवेया ॥ सेज रची मनि मंजु प
 सूननि आवत ही सुख पाइ है जोपी ॥ देरवत
 सो भग वास वनी जिन वास वधू की दीपति

तिलोपी ॥ बाहिर चंद्रकी चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका
 ख चंद्रकी चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका चंद्रिका
 जवालादू अमी कके हुंकार विराजत गोपी
 १५७ ॥ सामान्या वा ॥ संवेया ॥ खंभ समे न
 खते सिरखलीं लनि इंदनि मुंजल अंग सिं
 गारि ॥ नेकु चितै मुसक्यादू कावाह सुरंगना
 रूप गुमान निदर्श ॥ कोर सुहाली चाको वार
 वधू मुकता पाल इंदन वार संवारे ॥ सीस
 थरे तम लोरे लकी पति अमान लाने अमी
 के बुलारे ॥ १५८ ॥ दोहा ॥ नायक के आगम
 समै सुंदरि अंग सिंघार ॥ विलोचनि हे अ
 भरन पहिरि सुदित बर नारि ॥ १५९ ॥ बृ
 ग्धा विर होलकंठला ॥ संवेया ॥ बाल मती
 पहिले पतिसें उर सुंदरी लोचन क
 न घटाई ॥ नेकु उई लिलि केन काला दु
 दूह की यह लारी सुहाई ॥ दूसरे होर
 त्रिजाम लो बाहिर वातमें बालम वार विला
 वोलि सकै न सह लिह सौ चित चंद्रमुखी
 के भई बुचि लार्ई ॥ १६० ॥ खेडिको उदा हर
 संवेया ॥ जामिनि की पहिले जव जास वि
 तीत भयो पिय गेइल जायो ॥ लोचन के

सके नसर्वानसों वामको कामहिमो अकुला
 यो जो मन बीच विचार करै उनको हून मोहि
 वियोग दिखायो ॥ ज्ञानति हौं न कहा गति हे
 मेरे प्रानन को पति कै विल भायो ॥ १६१ ॥
 पौढा विःउ० ॥ सवेया ॥ आरु विलंब भई
 काछु काज में औरै ये प्यारे को चित्तन जैह
 को कपटी बहु जाति वडी तुम पीउ तुम्हा
 रो प्रभात में सै है ॥ आनंद वैहै रीको काउरे
 जन नैन सरोजन सीं सुख पैहै ॥ तेरो क
 ह्यो सब वैहै सरखी यह पूरु चंद्र जो जीव
 न वैहै ॥ १६२ ॥ जीवति क्यों अब भारत मा
 र वडे दुख जा मिनि काम दिताई ॥ देखे वि
 ना जग सों पल जातु सुजानि को प्यारे
 हों त्यों तल फाई ॥ हौं लखि हों मुस क्यात
 मनो हर श्री मुख चंद्र कवै सुख दाई ॥ आ
 इ पर्यो थों कहा गुर काज जो बालम आ
 र विलंब लगाई ॥ १६३ ॥ परकीया विःउ
 सवेया ॥ इंदु उदै पहिले ही संकेत में आ
 रोही छूती यदै ठह रायो ॥ नागरि आइनि
 कुचके भीतर नागर नेकु विलंब लगायो ॥
 तौ लग वाकें हजार विचार भए अतिवाही

कोमल जगायो ॥ चंद्रिका लीला चली नभसे
 प्रभु गोकुल चंद्र किले विल मायो ॥ १६४
 सलान्या विःउ ॥ सवैया ॥ जाइ रसवी चलि
 ल्याइ उहे वह दोलवो ताहि लते तजिह्य
 हि ॥ आगम तेरो सुमेरु हे मेरो हों चाइति
 एक तिहारे मिला पहि ॥ लाजवो मोहि उ-
 ताल मिलाउ कहातु ऐजे उपचार अमाप
 हि ॥ मोतिन हार मनोहर ह्यो बहु सेटे गो
 मेरे वियोग सता यहि ॥ १६५ ॥ विप्रलः ॥ ल-
 क्षणा ॥ दोहा ॥ जाहि वोलि संकेत पियजा
 य आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धावधु
 कहि कवि करहि प्रकास ॥ १६६ ॥ मुग्धा
 विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि ल-
 खी निजपेलिके मंदिर केलि पठार्इ ॥ पंउ
 गयो गृह मध्य छपे मग और पेडुं दु सुखी
 इत आइ ॥ जोवन चंदकी चांदनि मे मग प्रे-
 म को चाहि हिये अकुलार्इ ॥ तेज निहारि
 के सुनी सरूप गुमानके भंगकी भीति द्दि
 १६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा दोहा
 ॥ सवैया ॥

इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनिकारु गुर सेवनहीं

मैं विलाई ॥ पाद निदेशनि वासीहि आइ साखी
 सुखदे यहु नेह पठाई ॥ सोधके ऊपर खंड
 सिधाइ जहां रति मंदिर सेज सुहाई ॥ नाह
 निहा खोन द्वैसिगरी सुख दायक सेज भ
 र्द दुख हाई ॥ १६८ ॥ प्रौढा विप्र लब्धा ॥ संवै-
 या ॥ कांति कापूरन चंद्रकि चंद्रनि पूरन छी
 रथकी छवि छीनी ॥ सुनो विलोकि विहार
 को मंदिर वेषों करि जीवैगी प्रेम प्रवीनी ॥ वा
 हि बुलाइ हों औरपे जात सुवैसे वने यह व
 त प्रवीनी ॥ वंचन मेरो कियो सजनी यह
 रंचन प्यारे ह्या मन कीनी ॥ १६९ ॥ परकी
 या विप्रलब्धा ॥ संवैया ॥ आइ मनोरथ मेच
 द्विके दूत वाके थके सुकु मारथकी है ॥ २
 कौन संवै रहि और नि कुंजन खोजन ह
 कौन जाइ सकी है ॥ पूल प्रसूनके खान हजा
 रन मारन कारन मारतकी है ॥ गोन भुलानी
 मृगीसी विलोकाति सुनेनि कुंजकी चाहि चकी
 है ॥ १७० ॥ सामान्या विप्रलब्धा ॥ कावित्त ॥ सु
 दरि थनिक नव योवन निरखि बौ ऊ
 सुंदरी सुगंधले गावन को लगी है ॥ बोली सु
 सुखाइ नेकु वैठिये हमारे गेह दून काही स

नमुख छवि जगमगी है ॥ चमेलिनकी
 काली रों रचना अनूप रची मंदिर से चंद
 की उदोत जोति जगी है ॥ यह तो अध पूरे
 फूल हंसत है याहि जानु जग की ठगनी
 काहू भले ठग ठगी है ॥ १७१ ॥ खंडिता लल
 न ॥ दोहा ॥ आन वधू रति चिन्ह धरे आ
 यो जावो पीउ ॥ प्रात धरे सो खंडिता यह
 रसिकान की जीव ॥ १७२ ॥ मुरधा खंडिता ॥
 सवेया ॥ आन वधू रति चिन्ह धरे इत प्रात
 हि प्रीतम आगम कीन्हो ॥ आलीके हाथ में
 आरसी दे मनि नोल वधू भजि भीतर ली
 न्हो ॥ बोली सखी यह रूपकी रेख काहां य
 ह वेष उप द्रव कीन्हो ॥ यामूंम नैनी पत्मा
 नी मगी को काहा चित्तलाल को काइल
 कीन्हो ॥ १७३ ॥ उत्तमा ॥ कवित्त ॥ जोपे प्रा
 प्यारे चितचाहन तिहारे काहो तुमही थों
 काहा गति मेरी तो विहारी है ॥ नेह रस भरे
 डीठि राखिये अधीन हों मैस्याम रुचि प
 रजात काम रुचि दारी है ॥ चिंता मनि तों
 लों लह लहे जो लों सींच यतु अनसीची
 कुम्हिलानी मालती निहारी है ॥ ऐसी पा

कड़ाई भरजा उगी बारने जाउजी वनि हमारी
 दंभि बोलनि तिहारी है ॥ १७४ ॥ मध्याखंडि
 ता ॥ कुंकाम लेपसों कीन्होसवै तनु लाल हो
 दीपति पुंज उज्यारे ॥ दुकव हरे हम सीं चक
 इन के फूले एलोचन बोल विचारे ॥ वाहि
 र आइते नारिनि की खुली नीविनकेहोबंधा
 वन वारे ॥ आइ प्रभात दिखाई हई तुमली
 जिय मित्र ए प्रान हमारे ॥ १७५ ॥ प्रौढारं-
 जावित ॥ आन अंगना के अंग संग चिन्ह
 अरे आयो पीउ जीउ दूरिवत जो अ राध दो
 बसै ॥ कोष सुंद राई पर वीपसी चढ़ाई भ
 यो मोहन कोमनु प्रेम कोरी भितो समै ॥ रै
 नि बग देखि जगी पीतम पै आइ परी नीर
 यरी अरिबयां अरुन अति रोसमै ॥ ऊपर दे
 आइ जल लहरि आइ कालमलेअलि सानौ
 कोकानद को समै ॥ १७६ ॥ पर कीया खंडिता
 दोहा ॥ ए सपने वौ रंका निधि समुभिआ
 च्छु पछिताहि भली करति इनसों सरवी जो
 न पितवति नाहि ॥ सामान्यारं ॥ दोहा ॥
 आन चिन्ह लखि कंठले लीन्हो हार उतारि
 लाल नैन कारि हाथ सों गमन वतायेनारि

१७० ॥ शिखरं पिय अपमान करि पुनि पी
 छे पियस्यहं बालहं तरिता वाहत है नाही
 सौं नदिराजू ॥ १७० ॥ लुधा कलः ॥ सवैया ॥
 लाजने मे पहिलानिबो मे पुनि हों पहिले
 पियको न बखानी ॥ ऐच सों आलिन दी
 न्हे मिलायु अर्द्ध लन प्यारे के ऐस विदा
 नी ॥ आदि अकेलिये सेल में सोईने आये
 न बखो बाछू मे लवानी ॥ प्रात पिय हें म
 जीहो पहते सुरसि गयो उडिही पछितान
 १७० ॥ लुधा कलहं तरिता ॥ सवैया ॥ द्वाज
 ररेख लरली अञ्ज पर प्यारेको प्रातमे प्रात
 बखानी ॥ काहु दिलोबयो विभाति बधूको है
 सोरुनि को लरली मुखवानी ॥ नाथके हा
 थ दई उन जासनी वैहो लजाने सुमे यह
 जानी ॥ पीठ गए उडिंको लदते तनु तापनि
 ते अतिही अकुलानी ॥ १७१ ॥ पौढादा ॥ वादिन
 मृग लद चंन सहति जंग अदि विदो प्रा
 न प्यारे तेरे सोल गोन मेरे अनेरी ॥ ताको
 आन बधू अंगरुम परल ललाने त्र वियो
 काहल सब लहो बड अनेरी ॥ तोहि रुसी
 जानि आसने उडि रयो पीठ काहाथों कर

तजो आये कहं जागेरी ॥ अक्वैयोंन भौहेता
 नि मानि करि वैठी कत लागी पछितान
 मन मैन वान लागेरी ॥ १८२ ॥ परकीयाक
 दोहा ॥ प्रेम कियो कुल कानि तजि पठयो
 रिसन रुसाइ ॥ गयो लाल मो हाथते कहा
 लेउं पछिताइ ॥ १८३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ कलहं तमि
 ता ॥ दोहा ॥ भद्र विपुल धन वंत हों जाके
 पाइन सेइ ॥ तारों रिसि अनुताप यह
 मोहि महा दुख होइ ॥ १८४ ॥ प्रोषित भर्तृ
 का कोलक्षणा ॥ शृंगार मंजरी यथा ॥ प्रोषि
 त यह भावर्थ द्या निततिहं कालप्रवासहि
 कहत आन ॥ सो जामै सो प्रोषित विचार
 यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान ॥ १८५ ॥
 * ॥ * प्रवत्स्यत भर्तृका और जानि ॥ प्रव
 त्स्यत प्रिया पुनि और मानि ॥ प्रोषित भर्तृ
 का और सब ॥ योंतीनि भांति यावो विवेक
 १६६ ॥ वडे साहिव अपने ग्रंथ माह ॥ निर्णय
 कीन्हो कवि बुडि नाह ॥ १८७ ॥ दोहा ॥ प्रिया
 वासके हेतु कहि ताप धरेयों होइ ॥ कही
 सो प्रोषित भर्तृका समुझ लेहु सबकोइ
 १८८ ॥ याके भेद कहत ॥ दोहा ॥ प्रथम प्रव

तस्य प्रिया पुनि प्रवत्स्यत पतिका जानि ॥ पुनि
 पोषित पतिका कहीतीनि भांति यों मानि
 ॥ १८६ ॥ प्रवत्स्यत पतिका को लहरा ॥ * ॥
 दोहा ॥ प्रिय विदेस को गौनको उद्यम ल
 खि दुख पाइ ॥ होति प्रवत्स्यत प्रिया तिय
 व्याकुल चित्त बनाइ ॥ १८७ ॥ सु प्र उदा ॥
 सवैया ॥ जानै अजौ दुल हीन कछु ग्रह
 आजु मिलापते रातिहै सातें ॥ दुलहकी दु
 लही बनि भूलै कहा जुरहीहै संकोचि स
 मातें ॥ हौं दुख सागर मै सखि बूडति आ
 नि कही कातते चरचातें ॥ दंपति के पहि
 चानि समै कछु नीकी रपीके पयान कीवा
 तें ॥ १८८ ॥ मध्य प्रः उदा हरन ॥ सवैया ॥ * ॥
 ॥ प्रीतम मारयो विदेसनि देस सुने तिय
 के विरहा गिनि जागी ॥ नैननि मै असुवा
 भलवै तियके हियते सिगरी सुधि भागी
 सुंदरि सीस नवाइ रही सुभद्र मतिहै अति
 ही दुख पागी ॥ यों निरख्यो मनो जीवसो
 पीवके संग सिधारिवो वृभान लागी ॥ १८९ ॥
 पगलभा प्रवत्स्यत पतिका ॥ सवैया ॥ नाह विदे
 शकी चाह सुनी वह साहस काज विचार

कायोंहै॥ चिद्रलिखी सी हली न चली वपुमा
 नो कलिलन सौं अकरीहै॥ जैवे कोलाल १
 अलिराम कीन्हो सुवाल दुह भुजसों जक
 सौंहै॥ ब्रह्म ब्रह्मपयो निधिभै पियको २
 तिष्यन्ती गौं फलसौंहै॥ १८३॥ परबीया
 प्रवश्यत पतिका॥ दोहा॥ लोगन वृक्षति
 लाल वह पुरीकितौ धौं दरि॥ तिया कह्यो
 सरिव अहहें चंद्र आजुही पूरि॥ १८४॥ २
 दामान्या प्रवः॥ दोहा॥ सरबी वारन तमको
 उचित सुवन हीके पत्र॥ सुंदरि बहुत ग
 दाइके पुनि कहै सवात्र॥ १८५॥ वादत पी
 उ पर इसको अपने आखिन देखि॥ प्रव
 ल्यत पतिका नाम कहि नयो भेद यह ले
 खि॥ १८६॥ सुग्धा प्रवः॥ दोहा॥ यह सुग्धा
 अन सुमुझ को राखे अंजलि जोरि॥ नि
 छुर होत सवार यह नई दुलहि याछोरा॥
 १८७॥ सुग्धा प्रवः॥ सवैया॥ लाल बिदेस
 की सज्ज सजी सब सुंदरिहें हियेर अकु
 लानी॥ चाहै कह्यो अहो प्यारे रहो तव ला
 जन तेनकादी मुख बानीतौ लगि यों अस
 वार भयो गुर काज भयो गुरता अधिका

नी ॥ नैननि है जल पूर वढ्यो दृग लोचनी ।
दुख समुद्र समानी ॥ २०० ॥ प्रवालसा प्रव-
त्स्यत ॥ सवैया ॥ मंगल साज पवान को रो
हते प्यारे दियो पहिलो पम मूपर ॥ देखत
लाल अलक्ष भयो निकटै सह आनन
को जैसे कूपर ॥ ता सम व्याकुल सुंदरिद्वै
असुवां परे दृटि उरोज दुहं पर ॥ प्यो अव
ओट चढावै मनौ दृग मोतिन बाल मह
शके ऊपर ॥ २०१ ॥ पर कीया प्रवत्सा सवै
या ॥ सुंदरि मंदिर के दिग मंदिर सुंदर को
प्रस्थान बनायो ॥ भांकि भारोदे है नारिन
देस पठायो वही यह हेत पठायो ॥ वाकी
लगी ते छिटी जु लई उन वांचि प्रवास उद्योत
जो पायो ॥ आपनो आनन चंद्र सुखी पद
द्यौसको आनन चंद्र दिरवायो ॥ २०२ ॥ सा
मान्या प्रवत्स्यत पति का ॥ दिहा ॥ लाल
लत सरिव लाल उर बोली तिय सुजि को
अपनी प्रतिमा लाल यह लाल निसानी
देहु ॥ २०३ ॥ जाको पति परदेस को वाट्यो
सु सुखित नारि ॥ प्रोषित पति का होति है
पंडित कहत दिचारि ॥ २०४ ॥ मुग्धा प्रोषि

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज कदे उ
 रमे तजि लाजनि बाल मसों अनुरागी
 सेमे मै पीउ विदेस गयो यह जानि नही
 तौ महा दुख पागी ॥ पूनोंको चंद काला
 सी मनेज कालान बंदेगी जु जोवनजा
 गी ॥ * ॥ पूनों लौ याके जो आवे चरै
 पति दूँपति तौ गानि वै बड भांगी ॥ २०५ ॥
 मध्या प्रोः ॥ कविच ॥ मोसों बूमिमली भं
 ति समा धान कस्यो तेरो कितनो वियोग
 ताहि सुभक्त ॥ प्रदे ॥ सुनु सखी सपनो
 मे सख्यो आजु नीको आप चित्र रूपवो
 ल्यो भगवान जो छगुन है ॥ तिहारी सखी
 को कंत या वसंत पंचमी को आवत वसंत
 त्याको भयो सुभगुन है ॥ पूजैगे कवै धों
 मेरे मन अभि खारव यह छपिकौ छवी-
 ली काहा पूछत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढा प्रो
 थित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथवि
 देस गयो हम जीवति हैं विरहा गिनि र
 हागी ॥ तेरति यां काल पंत भई पियके संग
 जे निमिरदे समजागी ॥ मोपर आपने
 प्यारेको प्यारे काहीजे अनूप कथा रस पागी

जो छतियां लगीं वै वतियां सुनिंते छति-
 यां अत्र सालन लागीं ॥२०७॥ परकीया।
 प्रोषित पतिका ॥ दोहा ॥ इतह होत पति-
 को काछू ललित दिखा वतिवात ॥ काव-
 रें है प्यारौ सरवी मोहि काछू न सोहात २०८
 सामान्या प्रोषित पतिका को उदा हरन ॥
 दोहा ॥ रोडू कहति है आइ है मेरो थन मोपा-
 स ॥ सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो दाय-
 निवास ॥ २०९ ॥ अभिसारिका लक्षण ॥ दोहा
 सुभ वेख धरि जोन्ह मै करै जूतिय अभि-
 सार ॥ सो जो लना अभिसारिका सकल र-
 मिक रचि सार ॥ २१० ॥ कवित्त ॥ तन सदा
 सुवरन दूरपन समता मैमै न अधि लखई
 जो गुराई महिराई है ॥ तामह पू चंद्रिका स-
 लक सौंही सारी सेत सुखमा समूह स-
 सार है ॥ अभिरन जोडे मुकुता पाल दिख-
 दुति अंग अंग तारागन तेई जनु अदि-
 चली इंद्रु मुखी उत इंद्रु अधि देवता रं ॥
 सुकृती तिहारो कोऊ दरसन पाई है ॥ २११
 तयोभिसास्यामवेवधरितन समय चलै जू पि-
 यपै नारि ॥ वह कहियतु अभिसारिका स-

ज्ञानलेहु विचारि ॥ २१२ ॥ सेवैया ॥ मेचकरंग
 के अंगकांरा कुंरंग मद दूवदां किउज्यारी ॥
 चोवके रंग रगी परिग्या पहिरे तन नील
 अनूपस सारी ॥ हे खिरकी मग हे निकरी
 सु अंध्यारी जौवे हुलसी अतिकारी ॥ वागमे
 अनि रमी मन मोहनप्योके संग मनोह
 र नारी ॥ २१३ ॥ दिवा भिसारिका ॥ दोहा ॥ व्या
 ज प्रगट अभि सारजो चौस कोरे वर नारि ॥
 सो काह दिवा भिसारिका सज्जन लेहु विच
 रि ॥ २१४ ॥ तन सिंगार आईजु करि वागवि
 लोकान काज ॥ पिय मिलाप लहि आपयह
 सफली भयो सब काज ॥ २१५ ॥ दिवा भिसारि
 का ॥ सेवैया ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान
 वादी तिव संग सखी मन भाई ॥ नहाडूकेनी
 के सिंगार के अंगनि वाग विलोकानिकाज
 सिधाई ॥ कुंजडू कान्तमै मित्र मिल्यो थनिमा
 नि उलै दिन राति वढाई ॥ लोग मिले मेरेनेह
 रके चर वातमै आई यों वात वताई ॥ २१६ ॥
 उन्नत मध्यम नीच ए तीनि भांति करिजा
 नि ॥ दूनके लक्षणा ॥ उदा हरगा कहत लेहु मन
 आनि ॥ २१७ ॥ जौपे प्राणप्ये कछु चाहिनति

हरे कविज पीछे खिरये है ॥ प्रिय कृत हि
 त अरु अहित मे करे हित हित नारि ॥ क
 वि चिंता मनि वाहत है सो मध्यमा विचारि
 २१६ ॥ खैया ॥ पाछे जो पीति करी मान
 री अव अनिपरी नुम्हे औरन की इव ॥ हे
 मनरीति नई सी लई तुम ऐसी करी श्री
 काई वाहो वाव ॥ कोविन काज करे वक
 वाद हो जैसी हुती सुतौ तैसी हुती तव ॥ अजु
 राजु कारो बलि जाउ सो वाज वाहो हम सो तम सो
 अव ॥ २१७ ॥ दोहा ॥ हितो वारत लखि नाह को अ
 हित करे जो नारि सो अथमा है नाइका इज
 न काहत विचारि ॥ २२० ॥ कविज ॥ चिंता म
 नि होइ कोऊ नीकी की अनैसी खोभा री
 पावै जामे पीति पति की उदोति है ॥ तूही को
 विचारि दूरि करि मोती हार गहे पहिरे तौ
 कहा छवि पावति योति है ॥ कहा कोसिक
 लु तूहै पीके उर वसी नतौ बोली है व चिंते
 उर वसी कैसी जोति है ॥ कौनै नु निवाइ तें
 ठ वैठी मुख नायको री नायक रिभाइ तें
 निवाइ नीकी होति है ॥ २२१ ॥ कविज ॥ अ
 म सर सिज अंग गले सर सिज नायक

रञ्जो शिरपर चनस्याम रंग खनेरग ॥ चिंताम
 निवहै मानौ वदन कामल पर मधुकार पुंजमा
 नौ प्रादत परभाग ॥ पीठपर वैठी तन सहज
 लुगंधलोभ मानौ अलि अचलि विस्मरि कौ
 चमेली वाग ॥ वेनी सुगनेनी कौ यों मंडित सु
 मानि रूपनिधि की रची है मनौ दहामनिथ
 रनाग ॥ २२२ ॥ स्यामा ज्जके सनेह की स्यामता
 मेरी भो स्यामता मे सवरी भि रद्वोजगु है ॥ चिं
 तामनि कहै जु और वचन की दौर में ऐसो
 काछू सुखमा को समूह अदगु है ॥ पाटी है सि
 गार खन अटन के बीचै मधुष सीस फूल
 वाल रविलाल नगु है ॥ सेंदुर सुभग तिय सांग
 राग भरे अलि मानौ पिथमलु के गमागम को
 अगु है ॥ २२३ ॥ स्यामा ज्जके सुंदर स्वकाल अंग
 यो ख स्यामनि पायो ससि सैन में को अतंक
 है ॥ द्रव्यमान नंदनी के नैननिहारि हपरि मानिम
 हा दुवखन पुरंग भयो रंको है ॥ चिंतामनि कहै
 लालमनि वैदी भाल लयोन अलंकृत की न्हो
 परजंको है ॥ दीपति बितान मङ्गा मंगल निधानम
 नौ संग मिलत दगर अठेको मयंको है ॥ २२४ ॥
 प्रतिप्रफुलित यहि देखि रई दिखाऊरी हो केलि

सरवर अर विंद जो अनि दुहे ॥ यों कछु है
 वाते अलि लधुर अधिका अवि काव चि
 ता मनि जेयो नरन रिंदु है ॥ सरद की पुने
 की निसाको महा नीको काहा पीको सो
 लगतु याके आगे अहु वंदु है ॥ सुंदरि जम
 हरिके सुंदर बदन आगे सुंदर लगत हम
 दंद नार विंदु है ॥ २२५ ॥ याही की लै सुभ देख
 कारत है गंध बंध ऐसो बासै साह जिवा रौ
 रम चमेली को ॥ अंग मनौ नाना रंग पूरत
 नि की रासि उन अंगन मै विमल विलस
 स अल देली को ॥ चिंता मनि चंपक ह
 सुम दोय अभि राम दिव्य रूप काल काल
 आनंद के कली को ॥ जाके अद लोको लल
 हरि होत दुख सो है नैननि को सुख साह
 कामल नवेली को ॥ २२६ ॥ लोहन मोहन
 मंत्र देवता विराजे रथा यासों देव दनु संके
 कैसे अक सतु है ॥ सुख विधु विंद पर लव
 नारची विरंचि जाये वडौ सुख पर लव
 सर सतु है ॥ चिंता मनि सु ललित अल न
 काला है लसे भाल पर मृग मूढ विंदु विपु
 तु है ॥ वृष आन गहनी की सो है अन सो है

ऐसे अरु गुविंद जाके वस मैं वसतु है ॥
 २२७ ॥ जाकी नासिका मैं तिल फूल भाव
 प्रकासक तिलख्यो विधियों जोतिलो र
 तमामा सोभा घर ॥ तेरी छवि देखि वाकी
 ऐसी छवि छीन होति मुख दुति दीन जे
 सो प्रभात को सुधा कर ॥ चिंता मनि कहै
 कहा चंपक सुमन बनलं कृत कीन्हो मु
 काता हल प्रभानि भर ॥ कहा अति रिजु र
 नील नायक रिभायो रीभी नाक नाय
 की है तेरी नाककी निकाई पर ॥ २२८ ॥ अम
 ल कपोल प्रतिविंबन सहित मनि जटित
 ताटक चारि चारु छवि धाम है ॥ चिंता म
 नि वदन मयंकर थ रचि रुचि मीन नहे
 संजुल द्वै महा रथी काम है ॥ सारी जरता
 शी हेम पंजर मैं खंज मुख सुखमा सरो व
 रको हरसिज स्याम है ॥ चाहे नैन नैन जानै
 जैसे चैन होत वैन काहा लों काहेगे जैसे
 नैन अभि लम है ॥ २२९ ॥ चिंता मनि का
 है तारा इंद्र नील आसननि सदा विलस
 ति प्रति विंबित विहंगम है ॥ सो है नैन मैं न
 वान खंजन सपच्छ मानौ संजुल अंजन गु

नरगुफित निहारीहै ॥ मोद मंदिरन किम
 नावली की छुञ्जनकी छवि अवलो क
 नि रुचिर रुचि हारीहै ॥ दूरान मैलागीम
 न मृगकी दावरि मनौ यनी वाकी वरुनी रा
 तरुनी तिहारीहै ॥ २३० ॥ सोहै अंग चिंताम
 नि नगन जटित दिव्य कंचनकी वेली के
 से सुंदर नवेली के ॥ सुवाल जगत पररुका
 सुकली हो तुम नायकानवल रंगी नाय
 का नवेली के ॥ एक ठौर देखौ छवि आप
 नी नहूकी प्रति विंदित है आरु रूप आन
 दके केलीके ॥ सुवरन आरसी से अमल
 अमोल कहि गौर गौर गोलहै कपोन अ
 ल वेलीके ॥ २३१ ॥ अह निस् चरचा सखि
 न संग स्यामा जूकी स्याम सुमिरन ओद
 काज सब नारखेहैं ॥ वरु भान नंदनी दोला
 ह नद नंदन पै चिंता मनि नेह काहा लोहो
 जात भारखेहैं ॥ गोविंद के चरित अठार हो
 पुरा नन मै सुनि हियो भरि सुनि अति सु
 खेहैं ॥ सुवरन रेख नव अंक दुहू कानन मे
 दुगु नित दुग्ध निधिसानौ लिख राखे हें
 २३२ ॥ केसरि सौ अंग नाग वेसरि की छवि

यह हरति सुवीली अप्र सरन को चेतु है ॥
 चिंता मनि काहे अल बेली अप्रक लंक सु
 रवी सरद सयंक अप्रिब यन सुखु देतु है ॥
 ललित कानक मय कालप लतामै लमयो
 सुधा मय विंद फाल सुख मा निकेतु है ॥
 लाल यों काहत धन्य जीवन मुकतये ध
 न्यो मथुर ऐसे अधर को लेतु है ॥ २३३ ॥ ह
 व भान नंदनी की हलनि की कांति कवि
 चिंता मनि काहे ऐसे काहां ते पवीनो है ॥
 सुंदर जी जलो वासरचना रची विरंच या
 ते उन विरंच वधु संग लीनो है ॥ हरि गुन
 सुनिवालो आपने समीप जी भजन पाको सु
 मन सुललित धरु दीन्हो है ॥ सुललित दं
 दिराके मंदिर के द्वार कातर कुविंद राज आ
 वरन कीनो है ॥ २३४ ॥ सबैया ॥ ज्ञाबु भयो ज
 वते लबते तिय एक लखी मनि आजु अर
 लमे ॥ इति मति ज्यों जसुना प्रवि विवित यों भा
 लको तनु नील दू झल मे ॥ देवत ही सुख दोष
 विना दुख जाइ परी कितते उत भूल मे ॥ ठो
 ही मे स्यामल विंदु रुपाल मनो अप्रलि वा
 ल गुलाव ले शूल मे ॥ २३५ ॥ सारी सुपेत प

बाह मनीं सित फेज रहौ तनु जेनेके सुप्र-
 साचोरी सुरे चवाई चवाका सनो यो नानिप्रा-
 जतहै कुच ऊपर ॥ वांढते ऊपर आनन की
 कृति यो वरने वा विरोक कहें जग ॥ दिव्य धुनी
 सधुनी सीधे वांवन कंतु लसे कसु वांहु-
 को ऊपर ॥ २३६ ॥ ३६ ॥ श्री नंद वंदन कीजे
 लियां गुर खाजा पहार हज्जारन पोलकी ॥ वा
 न्ह कासोटी के सोने की रेखसी सेचवा चंगा-
 न ऊपर मेलिकी ॥ मैन महा धन साथन से
 हाति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी ॥ पं
 न विलासिनि वाहु लसे सुदु सारदा सनो व-
 ज वांचन बोलिकी ॥ २३७ ॥ दूरते दीपात देव-
 तही प्रति पद्म वधून के होत राजा हैं ॥ दास न-
 योदघटान के बीच सनो विजय रीको जरे अ-
 नुजा हैं ॥ दिंछ विमो अग्रि कांत सनो हर
 राधिक की अग राति मुजा हैं ॥ का वल्लो दो-
 न अलंकार अंकित मैन की सनो विजे की
 धुजा हैं ॥ मेरुके अंगते गंग की चर चरकी
 है सुभ हार धसे हैं ॥ चंदकी चरि जे से विज-
 है जनु यो सित वांचुकी बीच चरें हैं ॥ बीच न-
 हीं विव नारी के तारको यो नति पीन उजग

लसेहैं ॥ तो उर सौं उर नाह धसे वैधसे कुच
 आपु समाह धसेहैं ॥ २३८ ॥ बाल पन की
 निकाली भई बल बाके अयान दे आदि २
 सुठार ॥ जीवन को विधराजु दियो उन २
 आन किये सब बाज सुठार ॥ चूचकामे
 चक वै मनि छत्रन के कालसा वारि कात
 नुठार ॥ देवता है रति मै नके वैकुच सोने
 के है मट मानो उठार ॥ २४० ॥ कविज ॥ दृ
 ष भान नंदनी के नेन निहारि हारि मानि
 कहा सब सुनारि हं हजनके ॥ चिंता मनि लाल
 दरसन हेत लल कात सुवरन संभु जुग
 सोहत सुलज्ज के ॥ मै न रति मंगलके सुव
 रन कुंभ कैथी कैथी कुंभ कुच जगुल जोवन म
 द गज्ज के ॥ खग कैथी कुंभ कैथी श्रीपाल सु
 दार कैथी श्यामज्जके मोहनके सोभन गुच्छ कंज
 के चिंता मनि सौहैं कुच वंचन कालस चारु
 नव गन पति कुंभ रोचन के रंगको ॥ विम
 ल बहन दुज राज रुचि गुर कीन्हो सेवत
 विमद जाहि जगन दुसंगको ॥ हरिजूकी
 पीति हेत जग उल हायो पायो जीवन नरे
 स राज राधाजूके अंगको ॥ २४२ ॥ सवैया

और तिलोकमे कौन त्रिया अति रूपवती वृ
 षमान ललीते। चोरभये कौ भयोन चलयो
 उत जोवन राज प्रताप श्लीते ॥ मेन महा
 वली सेंपि दियो मनु छूटन पावतु वषोंत्रि
 वलीते ॥ श्री नंद तन्दन मोहन हेत विधाता र-
 ची मनो वाञ्छ कलीते २४३ को महा मूढ छवीले
 के अंगन जाय पर्यो ज्यो सुसारो बहीरमें ॥ ठा
 ने अनठान अथीन जो आपते ताहिको आ
 नि रक्के पुनि तीरमें ॥ जोवन पूर विलामत
 रंग उठे मनमोद उमंग समीरमें ॥ सैल उरो
 ज ते कूदि पर्यो मनु जाडू प्रभानदी भौरंग
 भीरमें ॥ २४४ ॥ जोवन को आसमन समुभ
 के पदछोडि चंचलता चारु चरव पद चा
 हि धाई है ॥ जघन पुलिन लरि अर्द्ध थिर
 तार्द्ध चरव छोडि पग चहिके उर जतट
 अर्द्ध है ॥ पानिपमै त्रिवली तरंग नामि भौरंग
 रूप नदी मध्या नंगने प्रवासी यों निकाई
 है ॥ चंचलता थिरता उतारन कारण रोम
 राजी नील मनि सेत रेख उल्ल हाई है ॥ २४५
 कोट कटाछ तुरंगम है पुतरी असचारनवी
 छवि छजै ॥ मत्त राखंदके कुंभ उरोज किलो

कत मानस धीरज भाजै ॥ श्रीमनि चार र-
 थंग नितं व है पन्तिदिलासनते जनु साजै ॥
 सुंदरि के चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अनं
 ग विराजै ॥ २५६ ॥ अविता ॥ सोहत छवीले
 अंग फीर ति नंदनी को हेरिद मंद सुसक्यानि।
 चार चंदहु तुलन है ॥ चिंता मनि इंद्रिाके मं
 दिर अनूप अर विंदतो प्रभात हूं में सवाल छु
 लन है ॥ सेत सारी लारी सेनिहारी नेकु लनमु
 ख सुखनिरीय मन सवात डुलन है ॥ सरद
 में प्रगढत नीरनि अदत मेरु मही परमाने
 अदाकिनी को युक्तिन है ॥ २५७ ॥ अभिनव उ
 दिता मदन रवि रथ चक्र पर पंथी वाल द
 शा निशासय वेलीको याही को सुर दसनस
 मभात घन स्याम खंडन विरह वैरि सेना घे
 रि मेलीको ॥ चिंता मनि याते काहवै चक्राचि
 त चक्रित भयो है लरिव चक्रपानि मेलीको
 * कुं प्रामके मानो कुच कुंभ है भवाइ धरे
 जोवन कुलाल चक्रा नि तंदन वेलीको ॥ २५८
 सोभाके सदन अवतरे हौ मदन तुम देखिये
 ललित रूप रीति रतिवेलीकी ॥ * ॥ चिंता
 मनि काहत गुंजरत भौर आस पास अंगन

मै साह जिवा वामुहै चमेलीकी ॥ दीपनिदी
 दीपति सी दीप जव वसन जोट कदलीको स
 लसी रमंजुल नवेलीकी ॥ सुर पति सुद
 हूतें सुख सरसैगो उरपरसैगो लाल ऊर
 जल वेलीकी ॥ २४७ ॥ चिंता मनि मोहन
 सुभग हेम खंभ चार जोवन सदन मंदपुं
 डरीकलालसी ॥ सोनेकी तरवासी देवामवी
 चरन नख चंद्र पूली अंगुली वंधुवाकली
 वानसी ॥ जेहीरतन जोति चिन्नरंग अंग
 अवर सोवह सित गोपन निधान सी ॥ गंधा
 जूकी जंधा मकार ध्वज प्रधान कैथीं मिर
 को निधान रत्नै गर्भिति निधान सी ॥ २४८ ॥
 सवैया ॥ यों ननि मै न महीप प्रताप तिया
 तन देर सुभाउ गिलेहैं ॥ अज्ञानत पूर निरा
 कारके दिग वार घने तम आहूहिलेहैं ॥ ये
 सुखमा के समूह कछू अंगुरी फलवरी न प्र
 वास तिलेहैं ॥ छोटि सदा को विशेषवाहा
 कार वांछन सों नख चंद्र मिलेहैं ॥ २४९ ॥ का
 वित्त ॥ करनत इनको सदाहो सुक्ति चिंता स
 निकीन्हो जो सुदित मन महा मोद सदाहैं ॥
 नाह मनु मज मोद उल हावै नीके अभिन

वल्लित कल पलता छदते ॥ स्यामकेहे
 सं जीवनि बेलके पल्लव र ज्यादु लियेजो
 वचादु विरहा गिनि हृदते ॥ महा उरंगारं
 गे रंगत है लाल उर राधिका के चरन अधि
 क कौक नदते ॥ चिंता मनि तेदु कहो चंद
 मुखी याको बडी बडी छवि छाती जिनि
 सौतनकी दही है ॥ चंद मुखी ओरै को
 कहि सकत याके अगो अर्थ रात चंद
 हू प्रात रुचि न्याही है ॥ विमल वदन देखि
 याको तुमहू तो चंद मुखी कहि कान्ह मोह
 नदी अवगाही है ॥ निरमल दसनन चारु
 सुंदरि के चरन अंगुरियन सेवत सदा ही
 है ॥ २५३ ॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते क
 विकुल काल्यतरौ श्री राधावर्णनं पंचमं प्र
 करणम्

॥ अथ नायकावर्णनं

दोहा ॥ सकल धरम जुत नियुत धनविकाम
 पूरे होइ ॥ ताको नायक कहत है कवि पंडि
 त सबकोइ ॥ १ ॥ प्रथम स्थिर पद है गनो नाय
 क र निरधारि ॥ कहि उदोत उदुत बहुरिल
 लित संत र चारि ॥ २ ॥ महा संत गंभीर अ

रक्रिया सिद्ध जो होइ ॥ अवि कामन थी गति
 मन यो उदात कहि सोइ ॥ ३ ॥ ध्यान उदोन
 लक्ष्मी ॥ कविता ॥ पिता राम राज अग्नि ये
 कौ बूलाए पुनि वन कौ पठाये नहीं वद
 ल्यो वदन रंग ॥ पवल वैरी को भैया रू न
 हि आयो तासों करुना निकेत आपु रहेमि
 लि एक संग ॥ हन्यो इंद्र जीत कुंभ करन ओ
 रावन ए एक एक तिहूं लोकन के जेता अ
 भंग ॥ इंद्रा दिक देव तानि वरनी वडाई आ
 इ नेकु नाब नाही कहूं प्रगत्यो गरद अंग
 ४ ॥ दोहा ॥ पवल गर्व मत्सर सहित चंडादि
 कथन होइ ॥ मायावी जो जगत भे धीरो
 दुत है सोइ ॥ ५ ॥ सवेया ॥ याहि यो उग्न सु-
 भाउ पर्यो सब छलिय वार इके संधारे ॥
 गर्भ लगे दून छत्रिन को कुल खंडित की
 ने भयंकर भारे ॥ तैं जराके गुर संकर कौ
 धनु तोखो कहामन मोह विचारे ॥ राज बुमा
 र यो तीखन धार पर्यो होल कान दुठारति हमे
 ई ॥ धीरल खिल लक्ष्मी ॥ दोहा ॥ सुंदर अ
 ति मन हरन गन सुरली कान्ह सो हेइ ॥ क
 ला सक्त निहि चिंद सुदु धीर ललित है

सोद ॥७॥सवैया ॥ मोर किरीट लसै चप-
ला पर नील वला हक रंग हरेहैं ॥ गोप के
कांध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभा-
नि भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल
बंजुल कुंजन तें निकोरेहैं ॥ सुंदर मारहुं
तें लक्ष्मि मार सौ वै लखि नंद कुमार खरेहैं

॥८॥धीर भांतको लक्ष्मि

होहा ॥ विप्र सरवा गोविंदको धरम ज्ञान
निविष्ट ॥ इंद्रिय विषयनेतं विरत सोप्रथा
न अति श्लिष्ट ॥ ८ ॥ शृंगारी नायक बहु
रि चारि भांतके जानि ॥ प्रथम कह्यो अन
कूल पुनि दक्षिणा नाम वखानि ॥ १० ॥ बहु
रि धृष्ट पुनि सठ वाह्यो लक्ष्मि फिरि अ
चुरूप ॥ वरनत ए शृंगार के आलंबन मृ
दुरूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया मेरसै सो अनु
कूल वखानि ॥ सवमै सम बहु नारि रतसो
दक्षिणा मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूलको उदा
हरन ॥ सवैया ॥ पीतम और वधु सो मिल्यो
सनिजाने सवै गुन दोख विसरेखै ॥ मै सब
के ते उपाय रचे पिय के सहं और तिया मु
ख पेरै ॥ मेरो विचार अचा ॥ वचन ॥ २

मोपैजु ऊतरुं दे हसि देखे ॥ पावे कहौ कि
 त दूसरी वात चकोर जो चंद्रमा के समले
 खै ॥ १३ ॥ दक्षिणा को उदाहरन ॥ दोहा ॥ स
 व अपने सन मुख लखत होत सकल सा
 नंद ॥ कालनि कालित मनि अतिललित
 प्यारो पूरन चंद्र ॥ १४ ॥ धृष्ट लक्षणा ॥ दोहा
 पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गह
 कहै धृष्टि य धन्यते तासों कोरे सने
 ह ॥ १५ ॥ रिसनि निकारो गेहते निपट नि
 टुर कारि जीउ ॥ कार वटलै देखे कहा सं
 ग सोवतु है पीउ ॥ १६ ॥ सठ लक्षणा ॥ दोहा
 ॥ छपि तियको विषिय कोरे बाहिर प्री
 ति हिरवाइ ऐसों नायक होइ जो सठवादि
 वरन्यो जोइ ॥ सठको उदाहरन ॥ सवैया ॥ १७ ॥
 प्यारी कहौ हमसों निसि वासर यों कछु
 प्रीतिकी रीति निहारी ॥ केहूं बापा कारे
 मोहि चहौ मनि हैंतौ उपाइ बने कारि
 री ॥ कैसे छपै हमसों जो छपाइ भयों नि
 त और के संग विहारी ॥ और कहूं दि. य.
 अंतर की हमसों सुखकी प्रिय प्रीति निहा
 री ॥ १८ ॥ अथ शृंगार लंवन ॥ दोहा ॥ लंवन

वर्गानं ॥ संवैद्या ॥ कौली उष्या री नलेसु
 रह्यो तम साया निसाके सहायन के ॥ कु
 रंद सुधा भार दंद भारे अकलंक अन्
 य सुभायन के ॥ अंगुरी मनि नीलके पा
 सिनके मनौ अंक परे सुभदायन के ॥ उ
 र अंतर सुंदर आनि उये नख दूंदु गुविंद
 के पायन के ॥ १९ ॥ तेरे नहोइ संतोष त
 ऊ जो रहै तिहुं लोक की संपत्तिको गिलि
 दी धिति वै मकरंद सुधा भार वेलि संतो
 ष की रासन में खिलि ॥ तोहि सुहातु है रा
 रा धनौ मनि राग लसै जिनि में तिनि में
 हिलि ॥ चाहे जो सीतल ताहियरे हरिके
 पग मंजुल कंजन सों मिलि ॥ २० ॥ काह
 की ऊरु लखे जग के कदलीन के मूल
 न की छवि लाजै ॥ यों वल खानि उदंड
 लसै लखि दिग्गज सुंदन के मद भाजै
 जो हरिके हर रोमके कूप अखंड वनी व
 र भंड समाजै ॥ ता गुर भारके धारन को
 मनौ नील महा मनि खंभ विराजै ॥ २१ ॥
 खेलमें खेल उठाइ लियो वलकी अधि
 काई सुयो दरसे ॥ कार ऊपर मोहत अंग

मनौ माहि पाद द्वाद सुभाय हैसै ॥ मनि मेचु
क संजु महा गिरि की सुखसाहीर जंगनि
मेजु लसै ॥ मनौ नील प्रयोधर वीच मनोहर
दमिनि की प्रतिमा दरसै ॥ लोचन मीन लसै प
ग कूरम कोल थरा थरकी छवि छांके ॥ रा
वल मोहन सावरे राम हैं दुर्जन राजन कोह
नि वाजै ॥ हैं वलमै वल ध्यान मै बुद्ध लखे
कालकी विपदा सब भाजै ॥ मध्य नृसिंह हैं
वान्हजू मै सिगरे अवतारन के गुन राजै ॥
२३ ॥ कान्हू की देह कलिंद सुता त्रिवली सोत
सा की पाति नची है ॥ नाभि गंभीरद हारनि
हारिके रीति समान समान सची है ॥ लाल
महा मनि मालके वीच रोमावलि रूपकी
रासि रची है ॥ दिव्य दिव्ये दुहु तीर नदीय
सुमध्य मनौ तम रासि वची है ॥ २४ ॥ श्री ह
रिके उर ऊपर चारु खुले सुकता हल हाल
खरें हैं ॥ वै प्रतिविंबित ऊहां नए दुगुने सुखसा
के समूह थरें हैं स्याम महा मनि शैल मिला
नखता बलिके प्रति विंब परें हैं ॥ आपने वंधु
समाजको साजके वंधुन मानौ मिलाप चारे
हैं ॥ २५ ॥ एई उधारत हैं तिनैं जे परे मोदस

दो दधिके जल घेरे ॥ जेडूनको पल ध्यान थ
 रें मन तेन परें वावहूं जम घेरे ॥ राजै रमार
 मनी उप ध्यान अभे वर दानि रहै जन नेरे ॥
 हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुज दंड सहा
 क मेरे ॥ २६ ॥ कान्ह कौ कंवुजु कुंकुम रं
 जित भागनतें मनहूं मन अनौ ॥ श्रीकाम
 ला बल यावलि अंकिंत सुंदरता जग ऊपर
 जानौ ॥ हैं रम नीयत्रिरेख मनौ अव तामै ल
 सी मुकालि वरवानौ ॥ एक निवास के नेह
 मिले सुभ संख सौं सुतिन के सुत मानौ ॥
 २७ ॥ लखि लोचन नील सरोज मिलै हैं प्रका
 सत प्रेम प्रमोद धनौ ॥ मनि कानन मै मुकु
 ता भालकौं उठि हैं परिवार मनौ अपनौ ॥ मुस
 क्यात सदा नद नंदन को मुख यौं सुख मा
 को समूह गनौ ॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
 चांदनी सांवरी सुंदर चंद्र मनौ ॥ २८ ॥ कान्ह
 के अंगन की छवि देखत नीकीन अंग लगे
 अरसीको ॥ ऐसी मनो हर मूर्ति मै मन
 लागत है मनु धन्य जसीको ॥ सो है सुभाव
 कपोलनि मै नद नंदनको मृदु मंद हसी र
 को ॥ नील महा मनि आरसी साहं मनौ भा

लवो प्रति विंव समीको ॥ २८ ॥ लहि याको तो
 स्वादु अचेतन हूं मुरली कियो नाद त्रिलोका छ
 वें ॥ पुनि याही के स्वादु सिरी भई पूजि त
 जे वसवै काठि वानन वें ॥ इत वाके तो स्वा-
 द लिये कवहूं सब लोग सदा विन बुद्धि त-
 वें ॥ मनि मंजुलता हरिके अधरे वह वें
 करि पावत विं पवें ॥ ३० ॥ जाहि लखे वृ-
 जकी वनिता बितजी बाल वानि लिये भव
 लाजै ॥ भूलि गयो गुर लोटाति को दुख छो-
 डि दियो सिगरी रह दाजै ॥ पूरन चंद ते
 जो अधिके मत आनन चंद वडी छवि
 छाजै ॥ ऐसी अनूपम औधकी नाक सुन
 द कुमार की नाक विराजै ॥ ३१ ॥ कान्हू जका
 म स्वरूप थरौ पढ्ये मनौ है सब अंगन ठे-
 ने ॥ मोही सेवे वृजकी वनिता धरनी तरनी
 नई आइ जे गौने ॥ भौहैं कएन से अंजुज
 वान चलाइ लगाइ के वानन कोने ॥ वें
 निकरे मन वें हिय रांसे लगे नंदलाल को
 लोयन लौने ॥ ३२ ॥ आपने को सदा सील
 भरी कोऊ बूझै तो तासों करे मन सौं है ॥
 सज्जन को सुख राम प्रकास ही दुर्जन दा-

नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मन कौ श्यों जु
 री सर नैननि मै न कमान मनोहैं ॥ वेदनिवी
 च विचार यहै सदा सेइये नंद बुमार की
 भोहैं ॥ ३२ ॥ पैटे जवै सुख मा जल न्हान
 कौ व्याकुल वै विरहा नलडादे ॥ जो राव
 री जिनरे चलि स मनिहै वृज नारिन के
 मन गादे ॥ श्री नंद नंदनजूके मनोहर का
 नन कुंडल यों छवि वादे ॥ वैध्वज वाह म
 नो मकार ध्वज राखि सुधारस कुंडल गादे
 ३३ ॥ कान्हकी मूर्ति देखी हुती जिनते ॥
 सिगरे वृज ऊपर जानौ ॥ काहेन ध्यान थ
 रौ निसि वासर भागनते मनहं मन आनौ
 ऐसी लसी नंद लालके भाल मै कुंकुम
 की अरु नादू बखानौ ॥ दिव्य उदैके समै भ
 लक्यौ विध भागमै राग विराजत मानौ ॥
 ३४ ॥ लाग निरंतर जाहि बखानत हैं सिग
 रे निगमौ पचि हारे ॥ स्याम की सोभन रू
 प कला कहं पावत कोटि अनंग विचारे ॥
 आनन ऊपर मोर किरीट सुवार विराजत
 घूंघुर वारे ॥ इंद्रके चाप समेत मनो विधु
 मंडल ऊपर वादर वारे ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ जे

रस उद्दी पित कौरे ले उद्दी यन जानि ॥ चंद्र प्रचला
 दिवा ललित गवतु चिन्तने चरीने ॥ ३ ॥ कवि
 ज ॥ प्रफुलित वाग कुंज मालिका पराग सु
 ज्ञ लयादे जौन्ह वोपसी चढादे उज रादेरे
 चिंतामनि कोहे रेसी सौध मध्यमार्ग ॥ ४ ॥ स
 धन सारकी सधन गग नार्दगे ॥ ५ ॥ दध
 कैसी धारा थोरी थराते पशारी चंदते जू पदेरी
 कंदरप कुटिल कसार्दे मे ॥ गौर कु लिका
 को वैथौ मेरो मंद भागिनि को वातौ ॥ ६ ॥ वि
 स या वसंत की जुन्हार्दे मे ॥ ७ ॥ संवका ॥
 वा मनि मंदिर की छवि हंद छषा कारकी
 छवि पुजन पोख्यो ॥ पाद को खल लनोहर
 चांदनी चापुले मेन महा बल रोख्यो सुंद
 रिके मुख चंद को छोडि चकोरन चंद म
 यूवन चोख्यो ॥ चंद सिलानते नीर सारयो
 सो सबै तियके विरहागिनि सोख्यो ॥ ८ ॥
 कविज ॥ लालन की सिलानि को ललित
 पटाऊ लाल जटित दिवा लनकी चौकी
 चह वोरकी ॥ लाल बद्ध भूमि है महसुखंड
 खंड लाल खंभन खुलानि छवि हंदके सगो
 रकी ॥ चिंतामनि माने सब सारे सन के

वैठकानिमान मृदु यूयुक्त मृदंग धन थोरकी
 सुंदर रतन मय मंदिर सुंदरिनि संग खेल
 नि ललित लाल ललित किमोरकी ॥ ४० ॥ प्रा
 तीप सदीप वक्ती यो उद्दीपन विभावको वि
 वेक कियोहै ॥ दोहा ॥ आलंबन गुन इंगितो
 अलंकार एतीन ॥ पुनि तरथ चौथो कह्यो
 उद्दीपन सबीन ॥ ४१ ॥ आलंबन गुन रूप अ
 र जोनादिक चित अनि ॥ बहुरि हाव भावा
 दिये चेषा ताकी जानि ॥ ४२ ॥ नूपुर अंगरहा
 रइन आदि अलंकार देखि ॥ मलय्या निल
 चंद्रादि ए सब तरथ अब रेखि ॥ ४३ ॥ यापर
 हम यो कहत है ॥ * ॥ दोहा ॥ उद्दीपन जे भाव
 ए सुने कहूँ हमनाहि ॥ चंदो द्याना दिक वा
 है समुझे नीके जाहि ॥ ४४ ॥ आलंबन के गु
 न ममे आलंबन के बीच ॥ तै उद्दीपन जोका
 है कयन लगे यह नीच ॥ ४५ ॥ सो देख्यो दिक
 गुन रहित आलंबने नहोइ ॥ आलंबन गुजर
 हित जो दरनि सवो नहि कोनू ॥ ४६ ॥ चेषाता
 की आपुही बरनेगे अनु भाव ॥ अब उद्दीपन
 कहत है दोसो बुद्धि प्रभाव ॥ ४७ ॥ आलंबन
 की अलंकार है आलंबन साह ॥ सो उद्दीपन

हेतु है जो वरनत कवि नाह ॥४६॥ रस उद्दीप
 न कौं कहै रस प्रधान वै जानि ॥ जो आलंब
 न मध्य है ते आलंबन मानि ॥ ५० ॥ जे तट-
 स्थ उन कहै है चंद्र वावा दून आदि ॥ ते उद्दीप
 न कहि सवै है यह बात अनादि ॥ ५१ ॥ उ
 द्यान उद्दीपन ॥ कविता ॥ मधु मद मते मंजु
 मंजरी रसात् भेद कर मधुर मधुकर वालारत्नी
 चिंता मनि कहै फूल पाल निवाल तउत दं
 स्त्री महा राज आनि ललित लता वाली ॥ पुं
 जनि मै छाह यनि कदली कदंबन की विम
 ल सुगंध जल नलिन नदी चली ॥ राज आ
 भिषेक समै आपनी संपति सबलै रसा
 ल कीन्हो रिदु राज हूँ सहा वाली ॥ ५२ ॥ आ
 र पास मंदिर वने है दिव्य लक्ष्म देदी चदि
 राम चंद्र देखी सुखमा सुखार्द्र है ॥ चिंता म
 नि मन्दिर मंदिर परि जातन की सकल दिन
 नि मै सुगंध सर साई है ॥ नहि पर मत मं
 जु भोरन ए आमन मै गत काल को काल
 न मधु कुर गाई है ॥ आगम ऋतु राज को
 निरखि मानो वन्दी जन ललित सुरन सब
 नाई बजाई है ॥ ५३ ॥ इति श्री चिंता मनि क

विश्वविद्वान् काल्य तरोपचमं प्रवारणं ॥

॥ दोहा ॥

हृत्कारज्ज अन् भाव गानि एकटाक्षदैआ
 दि॥ मधुर जंग देहा कोहे सुहृदय सुखद
 अनादि॥ १॥ जेषुनि थार्द भावको प्रगटक
 रे अनयास॥ ताहि कहत अन् भावहें स
 व कवि बुद्धि विलास॥ २॥ कविता॥ जोवन
 सिंघासनमें सुंदरि को रूप भूप पीतम
 नैन जाके उप सर पनमें॥ चिंता मनि क
 वि विलोकनि मुस क्वाड् पाड् होतहै मु
 दित जैसे पित्र तरपनमें॥ सोहत बदन वा
 ल घृष्ट की ओट पिय कीन्हो तन मन
 धन जाके अरुनमें॥ विलसत मनो प्रतिविंवि
 ल सरद चंद विलल पदुम राग मनि दरप
 नमें॥ ३॥ लाल रंग कंचन कि नारी दार सा
 रो तैसो नाक के नखत मुवातान की उजरे
 है॥ वीद्युत की छटासी छवीली की काठ
 नितैसी चिंता मनि नील घन घटन को च
 रोहै॥ मोहि देखि सुरकि मधुर मुसक्वाड्
 चाड् कीन्हो चित चपल कटा छन को च
 रोहै वाके देखि सुमर ललित पदुलहगा

की सनेहरभूमनमैभूमतमनमैरहे ॥ ५ ॥ दोहा ॥
 खेदतंभरोभांचकहि सुनिसुरभंता वनाड
 वहुरि कंपवै वरयागानि आसु अक्लीना
 दू ॥ ५ ॥ आठ सात्विक सवाहत सज्जनरान
 मन आनि ॥ इनके देत उदा हरन रका कपि
 तमै मानि ॥ ६ ॥ कावित्त ॥ लोचननि आल
 क्यो प्रमोद जल कंप खेद हलिल अचल
 तनु पुलक पसार्योहे ॥ पीत रंग भयो मुख
 बैन निकारेन भैन दू गित हरन करि खेल
 यों उधार्योहे ॥ देखत परस पर यहै गति भ
 ई उनदेवता स्वरूप धेय आपनो दिचार्योहे
 वचन अगोचर जो परम आनंद नंद नंदन
 सो वृष भान नंदनी निहार्योहे ॥ ७ ॥ सं
 चारी भाव लक्षण ॥ दोहा ॥ जे विशेषते आ
 डको अभिमुख रहै वनाड ॥ ते संचारी व
 र्गिये कहत वडे काविराड ॥ ८ ॥ रहत सदा
 धिर भाव मै प्रगट होत इहि सान्ति ॥ ज्यों
 कालील समुद्र मै यो संचारी जाति ॥ ९ ॥
 सोनिर्वेद विष्णुमज्जजड ता थीरज ह्ये
 दैन्य उन्नता चितत्रा सोईखोहे अपर्य ॥ १० ॥
 गौरव सुमिरन भरन मरु सुप्रनीद अरुदा

धा॥ दीडा पत मार मोह मत आलस वेगो बोध
 ११॥ काहि वितर्क अब हिन्थ पुनि मिलि उ
 त्साह वि षाह ॥ उत कंठा अरु चपलता ती
 त बोहे निर्वाह ॥ १२॥ ए मिगरे सब रसनमै
 न को इहे सुभाउ ॥ जार समे नीको जुहे ता
 को वृहां बनाव ॥ १३॥ तत्व ज्ञान दुख डेर आ
 दिव निः फलता ज्ञान ॥ होत आनि संसार
 नै सो निर्वेद वखान ॥ १४॥ निर्वेद लक्षणा ॥ *
 साहित्य दर्पन मत ॥ दोहा ॥ तत्त्वग्या विपतीर
 या विरहा दिव अपमान ॥ जहां की जि
 यतु आनसो तह निर्वेद वखान निर्वेद को उदा
 हरन ॥ १६॥ कविज्ञ ॥ मिहिर मरी चिनमै मृग
 जलकै सो भ्रम सुखन मैतो यके तरंगको द
 गुहे ॥ छोडि सहा शुद्ध ज्ञान आनंद परम पद
 वीर बाहू बाहू विमराम कोन अंगुहे ॥ चिंता
 मनि कहै कहै कौन सो सनेह कीजै सबही
 सो घाट दाट हाट कै सो संगुहे ॥ नीको है तो
 काहा परनाम सब पीको होत तन धन जोव
 न दुसम कै सो रंगुहे ॥ १७॥ मनि जो परमार
 थ चातुरी की चरचा ही भयो चितु चैन चह
 जगकी दिना काज की वातनको विन काज

को काहे को कीजे हाहा ॥ परमोत्तमो पदं
 काज सो परतीति सो पीति भई जू महा ॥
 अवता परविद्या जो और काछू जुरिखी
 तो सिखीन सिखीतो कहा ॥ १५ ॥ आज्ञा
 हा मनि रूढि सी वैठी होव्यों अति उन्नीठ
 सासन लीजतु ॥ मोसों काछू अपराध
 सौ क्रात अंचल लोचन के जल मीजतु
 ॥ * ॥ * ॥ व्यों तुमसो अपराध परे पियव्यों
 तुम ऊपर रोसुहे कीजतु ॥ फेर हया रेही
 द्या सनको मन मोहन जू तुम्हे दीसुनही
 जतु ॥ १६ ॥ दोहा ॥ रत्या दिवाते हातु का
 छू जो निर्वलिता जानि ॥ वैवर्नी दिक्क-
 सो काछू वहरि ॥ १७ ॥ निष्कानि ॥ १७ ॥ म
 ग पग मंद गयंद गति धरति वरति द्वाच
 भार ॥ छकि अभग रति रंगके अविगत
 ग सुहुमार ॥ १८ ॥ वोनो को अवनो तिवो
 द्वानि कुर्गद हेत ॥ जो मन मे ह्योत न मा
 गका काहे सचेत ॥ १९ ॥ शंकाको ग्यु कर
 न ॥ सवैया ॥ जानि विनाह स जानत है य
 ह जानि रहै भुह नाडू लजानी ॥ योऊ क
 हं काछू वात काहे समुझे सब प्रापनि मे

ये कहानी केह हमें जो सर्वा जनतो गडि
 जाति सको चन वाल अथानी ॥ स्याम ति
 हारे सनेह रहे मृग लोचनी सांच संकोच
 समानी ॥ २३ ॥ अमको उदा हरन ॥ सवेया
 रति अंतकछू अल साइ उठी तकि यामे
 तिया करि एक दिये ॥ मनि वनी है पीठि प
 री विथुरीअपनेकसहसरीवामलिये ॥ भालके
 अम बिंदु छुटी अलको विहसोहें से गोल
 वापोल किये ॥ अत्र वेउप जावत सोचन
 को सकुचोहें सलोचन आनहिये ॥ २४ ॥
 धैर्यको लहरा ॥ दीहा ॥ ज्ञान एक आदि
 कानते जोसंतोष धृत मानि ॥ निज अदृष्ट
 परि पाक भो व्यम चित्त पहिचानि ॥ २५ ॥
 धैर्यको उदा हरन ॥ कवित्त ॥ पूरव कारमवस
 अमतहै भूलत मै पूरव जनम जो दियो
 है सोई पायहै ॥ तिनसों महीप कोऊवाहे
 को गुमान कोरे चित्त मनि जिनके सहज
 चित्त चाहैहे ॥ कोसदसवीस को नरेस वि
 सरायो कहा होत विस राये परमेश्वर सह
 यहै ॥ सबके सदाही साथ अनाथन को ना
 थ हमें वाहा दीन बंधु विश्व नाथ विसरा

येह ॥२६॥ होहा ॥ सकल आचरन ज्ञानको
 अक्षमता जित होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखे सु
 ले जडता कहिये सोइ ॥२७॥ जडता को उ
 हा हरन ॥ होहा ॥ अन मिरव लोचन देखवो
 चुप रहिबो इत्यादि ॥ हेत वाज वरनत
 रहत यो सब सुखद अनादि ॥२८॥ अन
 मिरव लोचन के रही हली चली लहि वा
 ल ॥ चित्र पूतरी करीहे छरी अप छराला
 ल ॥२९॥ दृष्ट वस्तु पास हरख मन पुला
 द जो होइ ॥ आंसु खेद गद गद वचन वरत
 तहे सब कोइ ॥३०॥ संवेया ॥ यो मन देओ
 विसरति हो मथुने अव होत वचोगी अंत
 गसो ॥ यीउ अचानक अह गयो लुप्यो प
 गयो शिरो दुख अंगसो ॥ वाहिर भाव
 पूरन ऐसे भयो खट मेरो अनंद दुसंगसो
 पूर उमंग भगी रथके तप जैसे विरगिदुसंग
 डल गंगसो ॥३१॥ होहा ॥ जो दारिद्र विरहा
 दिते होइ मलिनता कोइ ॥ चिंता रनिखा
 सादि कारि होत दीनता होइ ॥३२॥ तापता
 नहीं तपत हो जग भे पाप पर्दान ॥ अवरो
 द्या सुदीन पे कीजतु दवा नदान ॥३३॥ इ

सुरो उदा हरन ॥सवैया॥मोहकेद्योसन नाह
 विदेसनचाहिसंदेसपतीपठाई ॥सोचतिरा
 तिसेवेपलकोपलकोनभरेसुतहांई ॥
 वैठतिनारिजहांसुकुमारिहेलोचनवारि
 नआंखिलगाई ॥सांईमिलेमनोयाफ
 लकोमनिवैठीहेआंसुनकीजलसाई ॥
 ३३॥दोहा॥कछुअपराधलेखेजहांरोस
 चंडउतहोई ॥तर्जनादिकारनजहांहोई
 उमनासोई ॥३३॥रामसीलजगतापह
 रसीतलसुखदअपार ॥एकसनकेसंहा
 रकोअनलभयोइकावार ॥३५॥चिंताके
 हियतध्यानहैसून्यतादिजितहोई ॥आ
 सरस्विसितापतितवरनतहंसवकोई ॥३६॥
 चिंताकोउदाहरत ॥कवित्त ॥गंधतिहैमाने
 सुकृताहलकोहारवहचारुनीरनेनानि २
 कीधारयोदरतिहै ॥असनअधरकहिका
 हेकोदुरितकोरेकौनहेतआजुअंचीसास
 नभरतिहै ॥अचलवैरहीकालिमंदिरमें
 चिंतामनिसथनवदनचंद्रचंद्रिकापर
 तिहै ॥वैठीकतआजुकारकमलकपोल
 धरिध्यानतूकमलनेनीकौनकोकरतिहै

३०॥ दोहा ॥ काकु उपाद् कापादिकर उपजन
 भयजो चित्त ॥ ताही सौ खंडित कहत ना
 स जानिये मित्त ॥ ३७ ॥ सवेया ॥ मानवती
 को मनाइ रह्यो वह चंदमुखी त्रिय केहन मा
 नी ॥ एते भै आइ गई पुरवाई लगे वारी
 गन बोलनि वानी ॥ ऐ सेमै आइ उमंडि
 अचानक कारी घटा घनकी यह गनी ॥
 चैंकि परी चपला चमकै चलिकै पनि
 की दृष्टियां लपटानी ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ जोस
 मृद्धि पर गुनन की उत्तम सही न जाइ सु
 भंगा दिक् ईरषा वरनी बुद्धि बनाइ ॥ ४० ॥
 कान्ह वाह्यो देखी न कहुं राधा की अनुदा
 रि ॥ कह्यो सत्यभामा सुनी राधा गोरी ब्या
 रि ॥ ४१ ॥ अम ररव अपमानादिते चित्त पु
 च्वलित जानि ॥ लैन ररा सिर कंप अमत
 र्ज नादिकर मानि ॥ ४२ ॥ कवित्त ॥ दोन्यो
 हनू मान रावम सो सकान सुर सुर सिद्धन
 अगि ॥ जंगम अनय रसरस सत वचन
 काहो काहां कापिकुलीसाभागे ॥ भुज साध
 न चदि सुंडपक्क फल तोरत प्रखरसगम
 अति जागे ॥ पाइ राधिर वल देउ भैरवनि

भर भाव भरसो अनुरागे ॥ ४३ ॥ गर्वलह
 रा ॥ दोहा ॥ विद्या द्रव्य प्रभाव कुल रूप
 अहं कृत गर्व ॥ होत अन्य अप मान कार
 जामे येसु सर्व ॥ ४४ ॥ कथा ॥ मेरी आखें देखें ।
 कुरा नखें नाना गर कहा को मृग जैनी क
 है ताको कहा कहनो ॥ फिर जनि कहौ का
 कुर्यो र सुप्र रहौ हमै चंद्र सुखी कहै दे
 खौ चंद्रमा को लहनो ॥ जानु डून जात क
 कुर्यो लोने गान पर मोहि पिय सेनेको
 गहावो जिन गहनो ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ सहस
 ज्ञान चित्तादि भू विला सादि जित होइ
 सुमिरन पूरव अर्थ को स्मृत वाहियत है
 लोइ ॥ ४६ ॥ चिंता मन धन स्याम मे यों
 वि छटा उमंग ॥ सुमिरन बान कादंबके प्र
 लका मुक्त सब अंग ॥ ४७ ॥ संवेया ॥ मोही
 है उदाल गुपाल लखे दृजवाल कधूकान मे
 दन पावै ॥ बोलै न बोल दूगी सी लखे मनि
 बोल के बानहि वों अकुलावै ॥ रोमन अंग
 कादंबकली मन मे धन स्यामकी यों छवि
 छावै ॥ सारति मंद कापोल हंसी उमंगे अ
 लवा अखिया भरि आवै ॥ ४८ ॥ मरन ल

दूरा ॥ दोहा ॥ प्रान्त त्याग करि वत लखन
 तौ प्रगट जग नाहि ॥ संसारादि दिवा ह्ये दि
 वी और वरन देनाहि ॥ ५५ ॥ जं नद धात
 हू वनि ये तौ ताकी उद्वेग ॥ संसारादि प्रव
 धसे मर नन वर नन जोगा ॥ ५६ ॥ करि वना
 दुर धर प्रवल विरह खल जप अति गौर
 भास कर लेके और और हल है ॥ एक मर
 दुर धर मायी काये वर अवर में जाइ मर
 अवर चकल है ॥ और वान लखन पास न
 न मान तन फूलकी प्रवल भय निंगरी प्र
 चल है ॥ अमनि से परे मुन त्येहन तुल
 सेना साथ दुर धर हू लिनाय सही नन है
 ५७ ॥ महल दूरा ॥ दोहा ॥ धन विद्या ह्ये मोड
 व आसव जोवन जात ॥ * ॥ उपजात है
 मह भावति त वाहति अलख मान दात ॥
 ५८ ॥ सहकी उदा करन ॥ दोहा ॥ ह्ये ह्ये ह्ये
 जीवन ह्येकी महल ह्येकी मृदु वानि ॥ प्रेस
 ह्येकी आसव ह्येकी मर्ह ह्येविनि की स्वा
 नि ॥ ५९ ॥ आननेन वाति लख किनाये नो
 त लह वलि हार ॥ ह्येकी ह्येकीली नांर न
 रि आसव ह्येकी निहारि ॥ ६० ॥ स्वप्रलक्ष

रा॥दोहा॥स्वप्न नींद अरु अर्थको अनुभ
 व जो कहू होइ ॥ सुखदुखवा दिक्हेतुय
 ह स्वप्नकाहावे सोइ ॥ ५५ ॥ प्यो आयो परदे
 स्तोसुनि सपने कीवात ॥ पति आगम प्रति
 विंव मखि सांचु भयो वह पात ॥ ५६ ॥ स
 पन संग जागि दुख उठे पिय आगमन नि
 हारि ॥ सखी कल्प तरु वाग ह्वै बीच अर
 न्य उजारि ॥ ५७ ॥ मन सं मीनल नाद कहि
 प्रमा दिक्निते होइ ॥ स्वासा दिक् तहं दे
 रिये सव इंद्रिय लय होय ॥ ५८ ॥ सवेया ॥
 मांगते छूटी ललाट लटै लसे लर मोतिन
 की लटकी चट कीली ॥ वेसरि की मुकता
 डल डोलत यों मनि प्रा सन लेति रगीली
 दीली भुजा कारि पीठि छुवे लपटाइ रही
 रनि अंतर सीली ॥ सोइ अजो छतियां है ल
 रीं सुइ ज्यो छतिया मन माह छवीली ॥
 ५९ ॥ दोहा ॥ निदाको अवसान जो सो विवो
 थ मन आनि ॥ दृग मर दन अग राइ अरु
 जंभा दिक् इत जान ॥ ६० ॥ उधरत तिय दृ
 ग जगल छवि निरखत नंद कुमार ॥ खुल
 त जलज जग जागि जनु चुल कुलात अ

लिचार ॥ ६१ ॥ लज्जाकोलहरा ॥ दोहा ॥ हानिदि
 दाई कीजुहै सोलज्जा मनि आनि ॥ मुग्य
 नाबलि आदिक वाछु हेतितहोंहै वा
 नि ॥ ६२ ॥ वेंदी पिय पट मै लगी लीन्होअ
 ली उनारि ॥ वूडि गर्दु अब लोकिइत सकु
 च सिंधु सुकु मारि ॥ ६३ ॥ जो रनहादि आ
 वै समय दुखा दिक्ते होत ॥ अप रमान
 भूपात तित फेन सोन अधि कान ॥ ६४ ॥
 मोह लहरा ॥ दोहा ॥ मोह वाहत है नाह
 को जहां ज्ञान मेदिजात ॥ विमल हृदय
 चिंतानि ते जहं अनि विह बल गात ॥ ६५ ॥
 खान पान परधान सब ज्ञानविस्तारों वा
 ल ॥ यों माही तुम को निराख तुम निरसोई
 लाल ॥ ६६ ॥ मति लहरा ॥ दोहा ॥ नीदपं
 थ अनु सारहै आदि अरथ निर धारि ॥
 मतिताते कछु हास्य रस अरु संतोअअ
 पार ॥ ६७ ॥ विना प्रयो जन मित्र जो सोईम
 त्र वखानि ॥ मित्र प्रयो जन तेजुहै सुतो मि
 त्र जिय मामि ॥ ६८ ॥ विन मतलब को
 यार जो तासो कीज्यो प्यार ॥ मतलबलैयारी या
 रै कहा मतलबी यार ॥ ६९ ॥ निरा दिक्

नै नैन है उत अलाल अंग राहु ॥ नैन अध
 खुले लांति यह बरलन सब कवि राहु ॥ ७० ॥
 अलालसको उदा हरन ॥ कविता ॥ दूटे हारमि
 देहें सिंगार सब अंगानि पै कोटिन सिंगा
 नकी अंग माल वान की ॥ चिंता मनि
 यहै अहो वापै काहि जात गोरे दूद सोव
 हन पर आभा अल वान की ॥ गुर जानि २
 लखि हैं अगो छले सलोनी यह लागी पी
 की ललित बापोल फल वान की ॥ रातिर
 ति रंग पति संग लाज खुली वौसी खुली २
 छवि आजु अध खुली पल वान की ॥ ७१ ॥
 दंहा ॥ काज भाह उद्योग जो मंदसु अल
 स जानि ॥ यहु अलाल लहान गण विद्या
 नाथ वरवानि ॥ ७२ ॥ और कौर को काम न
 नु कामहु सिधिल जुवाम ॥ जो कारि वे पि
 य संग सो प्रवल कारावत काम ॥ ७३ ॥ दूष्ट
 निश दिवानते संभ्रम अस्मिक होदु ॥ ता
 ही सो आवे सकवि वरनत गनथन लौदु ॥
 ७४ ॥ अवेसके उदा हरन ॥ सेवेया ॥ श्री वृष भा
 न कुमरि के संगमै कौलि रची हरिज जसु
 ना तटा ॥ दंपति कुंज के मंदिर में बहली व

नमाल वनीमुकताच्छुट ॥ भूस्वनवास गि
 रे रति रंगमें पायोत्यो काहू के बोल को
 आहट ॥ आकुल है हृदि मैचक अंबर
 राधिका बोदि लियो पियरो पट ॥ ७५ ॥
 चिंताको उदा हरन ॥ दोहा ॥ मिलन गर्व
 कुल कान वन मिले मुई यह कलि ॥ नि
 रगि तुम्है नंदलाल जो सोचति है वह द्य
 ल ॥ ७६ ॥ विनर्कः लक्ष्मीः ॥ दोहा ॥ लो
 विचार संदेहते सो वितर्क यह जानि ॥ सि
 र अंगुन ते न है जही चिंता मनि मन आ
 नि ॥ ७७ ॥ संगो पन आकार को सो अव
 हित्य वषानि ॥ प्रकृति तजि कछु अोर
 को कवि को कथन स्वानि ॥ ७८ ॥ जान
 त लोका अलि न लामि को न लाल ए को
 न ॥ दोऊ एकै है गए कहा मोन ही मोन
 ७८ ॥ व्याधि वियोगा दिवान ते कसता
 दिव निरथारि ॥ कंप ताप भूपात इत २
 आदिक यों जुनिहारि ॥ ८० ॥ सवैया ॥
 काहू की वात सुनेन कछु न कहै कहा
 चिन्तके बीच विचारे ॥ नैननि नीर भा
 रासे भिरे कछु अंगत हूं की नवानि मं-

भारै ॥ गाल लगे विरहा नल सुखन भोज
 न भूखन भौन विसारै ॥ सुंदर ऐसे भयने
 द नंदन वारकालो सुख चंद्र निहारै ॥ ८१ ॥
 दोहा ॥ मनके भ्रम उनसाद कहि कामभ
 या दिक्जात ॥ विन कारन रोदन हसन
 कार्य अनर्थक दात ॥ ८२ ॥ उच्छ्रुति रो
 वति लखि रहति हसत कहति गोपाल
 या ऊपर अव और कछु सोन होदु नंद
 लाल ॥ ८३ ॥ जहां उपाय अभाव ते होइ
 चित्त को भंग ॥ सो विषाद लक्षणा सुउत
 बढत तापके संग ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ मोहि
 कछु नहि सूझि परे दृग देखतहु दिन
 होति अंगारी ॥ कैसे वचौं बूहि आगम
 नो चहु और लगे निशि चंद्र उज्यारी ॥
 रीरे उपाइ चलेन कछु विरहा गिनि
 व्याधि बढे अति न्यारी ॥ होवु हों कौन
 उपाइ रचौं यह जाने को प्रेम की पीर
 बियारी ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ तरुनि बदन विंधु
 सांखु निशि आगम रुचि अधिकात ॥
 प्रात होत पति संगते छूटत छुवि छुटि
 जात ॥ ८५ ॥ उक्कटा लक्षणा ॥ दोहा ॥ अ

भिलखिता रथलाभमें नहिं विलंद लहि
 जाइ॥ उक्तांदा जामें काछू अपावलाता अ
 थिकाइ॥ ६६॥ दुल हिनको विछिया वज
 त थरमें दूत उत जात॥ ज्यों ज्यों हेतु वि
 लंब अति त्यों त्यों अति अपुलाता॥ ७७॥
 रोमा दिवाले होतु हैं थिरता काछू जहान॥
 स्वच्छंद रचनादि को है चापल्य निदान॥
 आवति दिग छूवति न तन हसत हुरान निर्मा
 छरका पल अति मद छवी छवी छवी ली ननि
 इति श्रीचिंतामनिचिरचितेकविकूलतरोपसुप्रकारे
 दोहा॥ भाव हाव माथुर्ये बहु हेला धम
 वरानि॥ लीला और विलास काहि पुनि
 विछित जोमानि॥ १॥ विभ्रम किल विचि
 त काह्यो मुहा यत पुनि आनि॥ बहुदि बु
 दुं वित वरिणिये पुनि विवोक्त वरवानि॥
 ललित कुत हल चकित मन ससुभि
 विहृत अरु हास॥ चेष्टा अष्टा दस गानी
 या शंभार प्रकास॥ ३॥ जो प्रतीप वान्दी
 यके साहितर्पन माह॥ दस रूपका मन
 काम काहे विश्व नाथ कवि नाइ॥ ४॥ जो
 वनमें सत्यज काइत अलं वारु र वीसा॥

दस रूपक में तिन कोहै सुनहु सुकाविष्णु
 वृस ॥ ५ ॥ साहित्य दर्पण में कोहै आठ औ
 र अधिकार । विश्व नाथ सत कवि कह
 त ते अब सुनहु वनाइ ॥ ६ ॥ भाव हाव
 हेला प्रथम तीनों एकै जानि ॥ सोभा कां
 ति कही बहुरि दीपति और वरानि ॥ ७ ॥
 पुनि माधुर्य प्रगल्भता औदा रज गनि
 और ॥ धीर्य सांत अज न भयह कहत
 सुकावि सिर भौर ॥ ८ ॥ लीला और वि
 लास कहि पुनि विद्विष्टि व ॥ ९ ॥ वि
 भ्रम किल किंचित बहुरि मुदायत पुनि
 जानि ॥ १० ॥ बहुरि कुट्ट मित वरनिथै पु
 नि विवोक्त विचारि ॥ चिंता मनि काविक
 हत यौ सफ़जन लेहु विचारि ॥ ११ ॥ ललि
 त विह्वत दस ए कोहै ए दस रूपक माह ॥
 आठ और वरने उल्ले विश्व नाथ कविना
 ह ॥ १२ ॥ तपन सुग्ध विक्षेप पुनि बहुरिकु
 त हस्त मान ॥ हसित चकित अरु काल
 पुनि अष्टा दस ए जानि ॥ १३ ॥ इत प्रता
 प सदीपके कोहै अठारह भेद ॥ तिनको
 लखन उदाहरन वरनत सर्वे अखेद १३

सै सब जौवन मंथि सै मैनके दशो विकार
 र ॥ भाव वरन यौं कहत हैं विद्या नाथ प
 कार ॥ १४ ॥ कोकिल कूक सुने उसगै म
 नर पीछे लिप्यो है ॥ दोहा ॥ भूनेत्रादि
 वि कारजो कछु उपजे मन माहि ॥ कछु
 सलह्य विवार वह भाव हव है जाहि ॥
 १५ ॥ हौं निकरौ दिग है सुयां अंगन पु
 लक जनाइ ॥ * ॥ हेरि त्रिहारे दृगत सों
 चली वाल मुस क्याइ ॥ १६ ॥ जहां देह
 दृग भौंह मुख दंगित अति अधि कात
 अधिक पगट मन भावते हेला सों क
 हि जात ॥ १७ ॥ संवैया ॥ कारसों कार जोरि के
 अनन इंद्रु को वह लता पर वेख कर ॥
 अंग दिखाइ दुरे मन मोहन
 को मुस क्याइ हरे ॥ मृग लोचनी नैन वि
 लासनि सों पियके हिय भीतर मंद भरे
 मन मोहन मोहन भावं मही सों बुलौं वि
 ला सिनि कुंज घरे ॥ १८ ॥ दोहा ॥ विना वि
 भू खन मधुरता सो साधु र्य वरवनि ॥ स
 कल अवस्था मै सदा लसे छविन को सा
 नि ॥ १९ ॥ कवित्त ॥ ओठ मनौ रवि विंय प

कौं मनो दामिनि दीपति अंग निहारे ॥ *
 वार बडे बडे नैन लसें मनो अंबुज पातनि
 भोर सुधारै ॥ पून्यो निमाके काहानखता वलि
 में मन में यौं विचार विचारे ॥ ए अकलंक
 मयंक मुखी तेरे अंग विना ही सिंगार सिं
 गारे ॥ २० ॥ धर्म लक्षणा ॥ देहा ॥ कुला मिला
 दिक् भाववन सोधीरज मन आनि ॥ पिय
 को जो अनु करन सो लीला नाम वखानि
 २१ ॥ कवित्त ॥ पीरी पीरी होति लागे सुर सुर
 भिव यारि सीरी पीरी चंदाकाहू पे अचल
 चित राखै जू ॥ चिंता मनि कहै मोहि तात
 मात व्याहि देह देवतामि सेदू सही वात अ
 भिलाखै जू ॥ खान पान छुंहे निज देह भर
 म्हारे वह काहं सो वात निज मनकी न
 भाखै जू ॥ ऐसे हाल करि वह विरह वि
 हाल लाल केह बाल बाल बाल कान पे
 ननाखै जू ॥ २२ ॥ लीला को उदा हरन ॥ *
 कवित्त ॥ सांदे स्वरूप मै मगन मन मृगने
 नी मृग मद अंग राग अंगमै धरति है ॥ २
 वरह मुकुट धरि तन पीत पटकमि ललि
 त लकट हाथ हिरा हरति है ॥ अलि चं

द सुखी मंद समद गयंद शक्तिमोहि दौ काहि
 मन मोदनि भरति है ॥ छविनि की स्वानिपे
 म छवि यों छवीली कान्ह राधिका तिहा
 रौ अनु कारन करति है ॥ २३ ॥ दोहा ॥ यों
 ही आभवन जहं अधिक संस्यता होइ ॥ सो
 विहित बखानि ये कहत सुकवि सब कोइ
 २४ ॥ काहि कौ भूवन धरति पुहप नदुल
 वपु साहि ॥ नायक नायका नीति सब स
 क जाक सुक लाहि ॥ २५ ॥ विलास लहरा ॥
 दोहा ॥ पिय के देखत अंगोमे दंगिन जोक
 छु होइ ॥ तत कालिका सु विलास लखि वर
 नत हैं सब कोइ ॥ २६ ॥ लखिता जहौ लखि
 त पर परे अन्ना नवा नैज ॥ तम लग है कुव
 ली अदलि हर वर से जनु जैज ॥ २७ ॥ प्रगटी
 नाम धरु चपल अंचल दूतानग दार ॥ मंद
 रि लनि सो पानि मग उतरो रूप उदार ॥ २८
 कवित्त ॥ आरु अव लोकी एक अश्ववेली
 बाल पुह मी तलमौ आव उरवसी विल स
 ति है ॥ अजों वा छवीली की बदन मयंक
 वि लोचन चकोरन को रुधा बरसति है ॥ भवि
 ने पद ओटकी करनि तावो भेदिकारि कौ

सी चारु चंद्रिका वाहिर निकसति है ॥ मृग
 लोचनी की वह कछू अचानक हंसि हेरि
 की मुरनि मेरे मनमें बसति है ॥ २९ ॥ विभ्र
 म लक्षणा ॥ दोहा ॥ आनद अंग आभार को
 अंग अंग आविस ॥ त्वरित समै विभ्रम य
 है वरनत सुकावि सुरस ॥ ३० ॥ संवैया ॥ देख
 त कौन हमें अवलोकिथों आली कहा य
 ह वेख कियो है ॥ को करि है कित जायो च
 है मन मोहि गयो इहि भाति हियो है ॥
 नूपुर हाथन पाइन में पहुंची काट हार
 लपेट लियो है ॥ तेरे कहा उर नैन महा उ
 र अंजन ओठन बीच दियो है ॥ ३१ ॥ दोहा
 क्रोध आसु अरु हास भय आदिक जह
 इक वार ॥ कालि किं त तासों कहत स
 व कवि बुद्धि विचार ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ दंपति
 अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते दोऊ रस
 रति नैन सरसति है ॥ तरुन चढ़ाइ त्योंरी
 भूँ है भाभि कोर कंप मनि मन छुतिया
 की छुवनि सुहति है ॥ वहिया गहत पिय स
 न तिन प्यारी भारी कोपते मिहारि देदे
 नैनन कारति है ॥ * ॥ नहियां कारति नीवीर

खोलति नवेली बाल रोवति रिजात नर
 साति मुख वपाति है ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ जहं वि
 यकी वीतें सुनति भाव प्रका सित है ॥
 लाहि कुह मित कहत हैं यों वभनन नद
 कोह ॥ ३४ ॥ संदेया ॥ कान्हके रूपको पाये
 नवे विधि कोटि अन गन दोप विचारो
 भेरे कादो सुनि कै उत जैसी भवे वह वं
 सीचु आपु निहारे ॥ रोस उठे दूरा सहे में
 नीर सों कीन्हो वधु मन मोह विहारे ॥ तो
 हिबाई मन मोहन जह मन मोहन मोहन
 मंत्र तिहारे ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ प्रिय वार तन म
 रदनहु मन सुख पावे वर नारि ॥ पिनि दृ
 ग सिर कंपन करे सो कुह मित विचारि
 ३६ ॥ कुह मित को उदा हरन ॥ संदेया ॥ क
 छु देखति चित्रहु त्यों जित में तित अति
 अकेलिये ठाढ़ी भई ॥ विहसो हें के लो
 से लनि सों मनकी मनि प्रीति भई नानद
 कुच गाढ़े गह्यो वार ओचकने भिजा ॥
 कारत हाथ अनूप भई ॥ हिय पीरि कंठति
 य पीर जनाइ कछु सिसकी मुख वयाइ न
 ई ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ ईठहु को अप साग जोक

रै गस्वगहि नारिताही को विवोकतहं वर
 नत सुकावि विचारि ॥ ३८ ॥ सवेया ॥ बस
 उठौ नौ हीठ भये लगे जोरन जो अखि
 यान हठार्ड ॥ मोसों सुनौ दुहुं वंसकी प्री
 ति सुलागति वंसकी रीति सिठार्ड ॥ मा
 खनकीन मिठार्ड भयो सुख लागे जुमां
 गन ओठ मिठार्ड ॥ रेसुनु टोटा जसो म
 तिके अव छोटिदे आजुते दीठ दिठार्ड
 ३८ ॥ दोहा ॥ ललित अंग विन्यास जो
 ललित काहवै सोड ॥ चिंता मनि कावि
 काहतयो सुनौ सुकावि सब कोड ॥ ४० ॥
 कावित ॥ रासको विलास देखि चिंताम
 नि धुनि सुनि मैखला की भानक नूपुर
 विछियानकी ॥ चंद्रमुखी चंद्रिका पसा
 नी आने अजनि मै देखत जो धन्य दसा
 ताहीके जियनकी ॥ सुभै देखि प्यारी ऐ
 सी मगज भई है जाते हरकि गर्ड है त
 नी अगीया सिपनिकी ॥ देखौ लाल ल
 लित श्वीली ऐली नीको चली आव
 तिजु पीकी कौरे हीपति दियनकी ॥ ४१
 कुत हल ललित ॥ दोहा ॥ रस्य वरुकेल

खनको जो चंचलता होइ ॥ ताहि कुतह
 ल वरिगै यो वरनत सब कोइ ॥ ४३ ॥ *
 कविता ॥ वाजे जव वाजे महा मधुर नगर
 कीच धुनि सुनि नगारे कीभललावा अवा
 लाइ है ॥ पौली मह लनि मनि मेखला भा
 नका संग महा मनि नूपुर निना दनकी
 भाइ है ॥ मीठे मीठे सुरनि जो बोलत मगनिनी
 तहो मुखते निकसि रांध इत उत द्योइ
 है ॥ * ॥ पहिले उज्यासन जो भूखन मयखन
 की पाछेते मयंक मुखी देखन को अइ
 है ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ पीतम को अये वाइ भ
 यसंभम जो होइ ॥ चिंता मनि तासो चिका
 त वरनत है सब कोइ ॥ ४४ ॥ तिय संगी
 भ अचानका गरुड वाह का राहि ॥ स
 खी चकित अतिही भई अंचल लोचन
 न चाहि ॥ ४५ ॥ बोलन हुके समय में राज
 न बोलन देइ ॥ विहृत वाहत है ताहि सो
 चिंता मनि गुर सेइ ॥ ४६ ॥ सबैया ॥ पग
 भूमि लखे वह टाठी ही द्वार विलोकात मा
 ह हिये उलही ॥ विह सौं हैं से गोल कापो
 ल किये सो सकोचन लोचन नाइ रही

उद्यस्यो अक्षर लगी बोल कछू पर आयौ नवो
 ल वों लाज रही ॥ रुधि आवत ही कासवै छ
 लिया जो कछू वतियावो तियानवाही ॥ ४७
 दोहा ॥ जीवनको आगम समै दिन का जहि
 जो हाम ॥ हंसति नाम सो तियनको लसत अ
 नूप विलास ॥ ४८ ॥ उवन चहत जोदन ससी
 प्रगट्यो हाम प्रकास ॥ लो नीके आयो भाल
 कि नैननि ललित विलास ॥ ४९ ॥ रूप भो
 गता पुण्यते सोभा अंग सिंगारि ॥ मनमथ
 उत्थापित सुतौ कांति कहति निरधारि ॥ ५० ॥
 कांतिहु को विस्तार वो सो दीपति पहि चा
 नि ॥ चिंता मनि कवि कहत है रस रंथनको
 जानि ॥ ५१ ॥ सोभा कांति दीप प्रमा धुर्भको
 उदाहरन ॥ कविज ॥ वैसकी उठोन ठौन रूप
 की अनूप कान्ह अंग अंग औरै कछूवो
 प उल हति है ॥ चिंता मनि चंचला विलास
 वो रसाल नैन मदनके मद और आभा उ
 म हति है ॥ कुंदन की बेली सी नबेली अ
 लबेली वाल केतिक गरव की सो गौरता
 गहति है ॥ उमकि भरोषे तुम्हे चाहिवे कौचं
 द मुखी घोसहू मै चंद्रिका पसारति रहति है

पृ॥ संभ्रम ॥ संभ्रम को साहित्य को लक्ष्य
 गल्लवलादि ॥ चिन्ता मनि दग्धि प्रहल नि
 सुवाविल्लहु पति चानि ॥ पृ॥ चार्त्तुं पान
 चरु नाह लौ आनि राद लौ देगा ॥ सुंदर
 सुवत जो तिया जिह हि द्वा दौ नैत प
 सहा विने जी ता विदे जी देन प्रकति लेक
 लाको हेत उहा हरव सुका वि लुनी सुवत
 दू ॥ पृ॥ वह मेरी सुन जो यती कित उत र
 खति दो प ॥ पृ॥ सरल सनि चंद्रिय
 कारतिन रो प ॥ पृ॥ उदर जो साहित्य द
 के भेद तिन दो उहा हरव भदौ ह ॥ पृ॥ प
 रको बिरह ते लन संता पंजु होइ ॥ लप विज
 हत हैं ताहि से विरह नाय दादि दोइ पृ॥
 सदैया ॥ वामनि सांवर को छावि हंद छपा
 वारदी छावि सुंजन पोख्यौ ॥ पाइके स्व
 ह मनो हर चांदनी चापुंल मैन महा दल मे
 ख्यौ ॥ सुंदरि के मुख चंदको छोटि चकोर
 न चंद्र मयूरदन चौख्यौ ॥ चंद्र तिलानि ते
 नीर भाख्यौ सवै लियके विरहा गिति सो
 ख्यौ ॥ पृ॥ दोहा ॥ पीतम को अरु लोचिदो
 रहै जहां नहि जात ॥ उपज विदुं प नहां

र नत सुकावि सुजान ॥ ५८ ॥ संवेया ॥ लो
 व लखे नंद लाल विलोकत वाल कहा
 यह हाल भई है ॥ तोहि विलो कत मोहि
 नहा दुख मोहि कहा दूहि भांति गई है ॥
 आनि थरी दिग में गगरी अपनी कत
 र यत्न छोडि गई है ॥ ताहि कहा मयो मे
 रो अरी गगरी सिर छूछी उठाइ लई है
 ई ॥ नद को उदा हरन दै आये है संचारी भा
 वन में सोई जानने ॥ दोहा ॥ तासो कहियत
 मुग्धता कवि जन मनमें आनि ॥ जहां पी
 व सों जानि तिय कहे आपनी वानि ॥ ६१
 संवेया ॥ ह्वं दूनको विवहार लख्यो माहि
 मंडल और पृथ्वीन कहाती ॥ ह्वं उतै उत्तर
 दै को संके कांहे बात सरवी दूने कौन स-
 काती ॥ कौन फलै विटपी मुक्ता फल
 बोलो हहा कहि यों मुसकाती ॥ जावै जवै
 पियके निकटै तवहीं एतजो अज्ञान
 है जाती ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ नायक के संग खे
 लिवो कोलि कहावै सोइ ॥ विश्व नाथ को
 सत कहत समभलेहु सब कोइ ॥ ६३ ॥
 भूलति नभ दामिनि वधू जलद भए वृज

राज ॥ कान्ह कुवर की बनी की कान्ह बली
 छवि अज ॥ ६५ ॥ इति श्री चिंता मनि
 विर चिते कावि कुल कल्प लये सप्तमं ॥

प्रकार राम

दोहा ॥ जामे आई रति सुतौ मनकी लगन
 अनूप ॥ चिंता मनि कावि कहत है सोर
 गार सहस्र ॥ १ ॥ सुतौ एक संजोग है दिव्य
 लभ काहि और ॥ द्विविधि होत मृगास यों
 वर नत कावि सिर मोर ॥ २ ॥ जहां दंपनी
 पीतिसों विलसत रचत दिहार ॥ चिंता
 मनि कावि कहत है यों संजोग सिंगार ॥ ३
 शृंगाखोडदा हरन ॥ काविज ॥ कांचन की सा
 कारन संजुत ललित मंच नग जहितज
 मै उलं है मरीचवर ॥ वैठी पारा प्यारी सं
 ग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अं
 गन विलास है अनंग सर ॥ कौरु मुरालि
 नी लिये हाथ में चमर चारु काहु वैज
 राऊ राजै यानत कोडवा कर ॥ निरसल
 मनि मय महल में खेलै चंद्रवदनी कु
 लावै लाल भूलत हिडोले पर ॥ ५ ॥
 तीसरो उदा हरन ॥ सदैया ॥ चंद्रिका सो

थकियो सिंगरो जगसौथके ऊपर दंपति
 सोहैं ॥ दूथके फोनसी सेजके ऊपर रूप अ
 रूप प्रभा मन मोहैं ॥ ह्वां पिय प्यारीके चा
 रचुरे दृग दूर दुरेही सखी जान जोहैं ॥ स्याम
 भयो ससि देखि मनो हिय देखति पंक्ष जुरे
 इत कोहैं ॥ ६ ॥ कविता ॥ चैतकी चाँदनी के
 थो चंद्र अत्र लोकानिले छीरनिधिछिरको
 पूरन पूर उमगे चिंत ॥ मनि कोहै मन आन
 द मगन ह्वैको विहरत दंपती परम प्रेम सो
 पगे ॥ अथ खुली अखियां सुरति सुखरस
 वस मानो भोर अथ खुलेकामल ममैखरो
 प्यारीके सकलतन अमजल विंदु सोहैंक
 नक लतामै मुक्ता फाल मानो लगे ॥ ७ ॥
 चुवन आ लिंगन हिंदे अदि विविधि विधि
 भोग ॥ चिंता मनि अंगारमै सो रवो संजो
 ग ॥ ८ ॥ जहां मिले नहि नारि अरु पुरुषसु
 वरन वियोग ॥ विप्रलंभ यह नाम काहि
 वर नत सब कवि लोग ॥ ९ ॥ विप्रलंभको
 साधारन उदाहरन ॥ ज्यों ज्यों जलु डगरत
 जलद त्यों त्यों जारात जागि ॥ सम उपाय
 विरहित विरह यह पानीकी आगि ॥ १० ॥

दोहा ॥ सो पूर्व अनुसंग अस्त सान प्रवाम
 वस्वानि ॥ पुनि कहिये कस्तनी तत्रा तदु जगरो
 हु मन आनि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ मिलतते प्रथम ही
 सो पूर्व अनुसंग ॥ योमै दहन वारत मव
 लन कावि हसा विधाता ॥ १२ ॥ पूर्व अनुसंग
 ग को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लखत लुआ सी
 तव लही सब पारते ज्यों आनि ॥ विमै वि
 खा सिनि की भई यह सुद्वै सुख वसानि ॥
 १३ ॥ प्रेम प्रीति अखियान की पुनि मन सं
 गम जानि ॥ पुनि संदल्प वखानि ये पुनि
 प्रवाम उर आनि ॥ १४ ॥ बहुदि जागवन पर
 निये जामता और विचारि ॥ अगति लान
 को छोडि वी पुनि सब जत निर आनि ॥ १५
 पुनि उन माद वखानि वै सुही योम प्रव
 नि मरन अंतकी दशा ह वारत अति लज्जा
 नि ॥ १६ ॥ प्रथम वरन अखिला व सुनि चिं
 ता चितमे आनि ॥ बहुदि खानि सुख वाप
 न वहुँरौ सुमति वखानि ॥ १७ ॥ पुनि उद
 ग प्रलाप गनि पुनि उल्लासो गति ॥ व्या
 धि और जडता कही सरन अंतमे जानि
 १८ ॥ क हूं गंध जारता दोहे समंथन दशा

भेद ॥ इन्द्रके लक्षण उदाहरन वरनत सुनो
 अश्वत्थ ॥ १७ ॥ आनंद सौंदरसन जुहे चक्षु
 प्रीति सौं जानि ॥ मन लगान मन संगीत
 नि चिंता ननि मन आनि ॥ २० ॥ जुहे म
 मोरच वृष्टीसे सो संकल्प वरधानि ॥ वातें
 प्रिय संभ्रम को सो प्रलाप मन आनि ॥
 २१ ॥ संकल्प तनको रापु गन मूर्ती ज्ञान
 अश्वत्थ ॥ २२ ॥ नैल गन को उदा हरन ॥
 लोहा ॥ २३ ॥ परत पर अदन चिदि निरव
 ता त्यागा त्याग ॥ हि स गिदि कांवर जैको
 अशि सुद हर को आस ॥ २४ ॥ मन लगान
 को उदा हरन ॥ सवेया ॥ उलहे नद नंदन
 को ननसे कुर्वी नील चया धनकी निदरे
 मिलेसे मनि कुंडल वातन से मुख चंद्र
 मयूर पिपू व भौते ॥ अश्व लोकान को त
 रनी लखको पहिरे सुकाल हल मालगो
 ॥ २५ ॥ विपरी एह मोर विरिह लसे नद नाग
 न मेरु ले नदरे ॥ २६ ॥ हूरो उदा हरन ॥
 सवेया ॥ लंग सखीन को आइ गली हंसि
 परत अच नया को किल वैनी ॥ आइ

गण्ड उत लाल लकी छदि ज्यो कहु चंद्र
 की दीपति रेनी ॥ खोजी फेरुन वाग महुं
 की कोरे जेकराह वी कोरे जे पेली ॥ एमरु
 आसति जावि गहु लजिलाम गहु मलम
 सुग नैनी ॥ २५ ॥ हा पाल्य को उहा हेरत ॥
 सवेया ॥ जो वाकहु हण भान लली कां
 न्योति जसो मति स्याह सुखोदे ॥ विजा
 विजित दोह विलो कवि दोलनि भीलये
 भीतर भावे ॥ सोहि विलो कात ही हीलये
 भुज चंपक लाल रीरे एहि दोदे ॥ लाली
 रई ॥ हियरा मे यही अत दो हियन सि
 यरा मे लगावे ॥ रई ॥ अति कोरे वाकहु
 यो गली क हि वेंगो विलो कहु हियन मे
 को चन ॥ ज्यो थरको खरको हियने ह स
 जा नतिहें मरसादवी रीरे नीम ॥ पुं पुं
 लोलह सोहें वापो लन तंद लकी रीरे
 ते दुख मोचन ॥ पाहुं लहुं लीरे दोह
 कांत हो देरवी जहां हिलोनी वीरुनी यन
 २७ ॥ पलाप को उहा हख ॥ दोहा ॥ वाहा
 काहत कोसे लखे वेंगो वीरुत जंद लाल ॥
 पुनि पुनि वारें रावरी वीरुत नि एन वा-

ल॥२८॥दूसरो उदा हरन॥सर्वेया॥रूपअ
 नूपकादंबके कानन कुंजनि वेलिवाले
 ल कालाको ॥काम कारो की सूरति स्या
 म की थीरज कोन वाहा अवला को ॥
 मोर किरीट वरे वन माल विसारि सके
 सरिदर कपलाको ॥मंद हसी मुख चंद
 मनो हर नंदके नंद गुविंद ललाको २८
 दोहा ॥चंद्र मंत्र अनु सत सरनि भारत
 मदन अरति ॥मोहन सो अरिवयां लगी
 अरिवयां लगीं नरति ॥३०॥कृमलाको
 उदा हरन ॥दोहा ॥जेकार मूलन मैगडे
 मति काकन है पात ॥तुम्हे देखि जानेन
 उन प्यरहि जात विरि जात ॥३१॥अर
 ति को उदा हरन ॥सर्वेया ॥तीनो तिलो
 क संवारन अन्न धरे हर आपने अंगस
 हार्डे ॥जामे वडी विष मारु हती त्योंही
 ताको दर्द थल माह उचार्डे ॥कंद लिला
 टमे सीस मर्दे सभ ली यह दाहक पां-
 ति दसाई ॥तीरे हला हल आगि कला-
 नि सो जारे सुवेयोन कला निधि मारु ॥*
 ३२॥ब्रीडा त्याग को उदा हरन ॥कविता ॥

चिंता मनि स्यास जह्लो सुंदर वदत ॥१॥
 महें चिंतानी कौन यासे छल छंदे ॥१॥
 हो बुलबुल वानि जाति वौन पे निदाई,
 जाइ देखतु है याही ताहि लाग्यो प्रेम
 पाहु है ॥ मधुर वापी लनि लघु सुनवत
 नि माई मधुर विलो वानि मधुर सुनवत
 है ॥ जैसे सब कालनि असूल सप
 ऐसे निभर आनंद सय नंद ॥ १ ॥
 ३३ ॥ संजूर वी उदा हत ॥ वापि का
 प सुराल जल जालत दो पातन वापि
 जह्लो विदेह जल जालत दो पातन वापि
 है कवि चिंता मनि विदाए विनिर्वात
 हीतल अपार उषरार अभि काले
 चंदन अगर ताके जराही वहराई नई
 सिवाता कापूर चूर अति अमर दाने ॥ १ ॥
 ते परप्रति फाल विरह बिची विनिर्वात
 रे पीरे होत येन सीरे होत वाने ॥ १ ॥
 होहा ॥ * ॥ विसल वदन जी अकारने वि
 रह सहा दूका पाइ ॥ हरी चंद लीन विनि
 रनि परी वाल सुभाजू ॥ १ ॥ ॥ ॥ ॥
 न अभिलाष सुनि चिंता मनि

बहुरि वरनि ये गुन कथन पुनि उद्देग व
 खानि ॥ ३६ ॥ पुनि पलाप उन माद मि
 लि व्याधि रुजड ता होइ ॥ हसौ हसा स
 गनत हैं सुवा वि चंथ कर कोइ ॥ ३७ ॥ इ
 स्यो वस्तु अरम्य सम दुखद यह ह्वै जाइ
 चिंता मनि कवि कहत है सो उद्देग रा
 नाइ ॥ ३८ ॥ वचन अनर्थ पलाप कहि
 उन्माद वृथा व्यापार ॥ व्याधि हास्य त्या
 दिव्य वस्तु कवि जन बुद्धि विचार ॥ ४० ॥
 जडता चेष्टा रहित तनु मदन न वरनी
 जोरा ॥ चिंता मनि कवि कहत यों कह
 त चंथ कर लोग ॥ ४१ ॥ अमिलारव को
 उदाहरन ॥ कविता ॥ नैननि की सुसक्य
 नि अनूप सुमैलनि बीच सुधा रस नाऊं
 या जग ऊपर मै अयनो यहती धन
 जीवनि भाग गनाऊं ॥ श्री गारा नाथ
 अभीष्ट के हातहि वार अनेक मैं शम्भु म
 नाऊं ॥ ॥ वार कहौ जु विलासिन को मु
 ल्य चंद विलास विलो कान पाऊं ॥ ४२ ॥
 ज्यों निसि वासव चाहतु वाहि सुतौ वाव
 हं यह चाह धरे वी ॥ हेरि हरी हैं काटाह

न हो मूढ लोचनी तो दिव्य ज्ञानि होंगी ॥
 या निरद्वै निरसा नाथकी रज्जुली बानन के
 धन ताप हरेगी ॥ आनन रस्य वाला कवि
 ता निष्ठा नाथ हीं मोहि सनाथ करेगी ॥
 ४३ ॥ सर्वैया ॥ मोहि कछू लहि देखि परे
 दृग देखत हं दिन होत अंधारी ॥ केने व
 चौं दहि आधि मने चहुं ओर कों ति
 सि चंद्र उज्यारी ॥ हीरे उपावू चनेन वाधु
 बिरहा नल व्याधि चंदे अनि न्यारी ॥ हा
 दू तै कौन उपावू कों वहु पावे वों एम
 की सीखी थारी ॥ ४४ ॥ रस्य वा उदा ह
 रन ॥ सर्वैया ॥ हो हियते निखरेन सुदेगें वि
 सेरे छवि अंता आलोखनि की ॥ सुनिहै दिव्य
 सेवर नूर पुल लोल च सीहत सुख दंशकनी
 लगी यों नलहे लति संजुत पंचक वंति
 कटाक्ष काली लनकी ॥ मुस वयानि मै दामि
 नि हों रसके चसके सुख ओप बापे लन
 की ॥ ४५ ॥ पानीन पीलति पानन स्वात र
 वै तनके व्यचहार निदरे ॥ सुंदरि तें स्वर
 पको सोरत दोलेन वार पचा सयां टरे ॥ चं
 दिकासी मुख चंद्र हसी कछू हीरे भवे ॥

लको तनु हैरे ॥ नैननि नीर भिरगनि सरै वि
 हनेन विलास विला सिनितैरे ॥ ४६ ॥ ना
 चक की स्युत ॥ संवेया ॥ मोही है ग्वालिंगु
 पाल लखे लुजकी वनिता काछु भेदन पावे
 दोलेन बोल ठगी सी लखे मग मैन के वा
 न हियो अकुलावे ॥ रोमनि अंग कादं वका
 ली मन मै यन स्याम की यों छवि छोवे ॥
 सोरति मंदकियो हरिके उमरों असुवां अ
 हियां भरि आवें ॥ ४७ ॥ गुन कथन ॥ पेरवत
 ही प्रगटी मनको मनि वैनी महा विषना
 विनिगार्ड ॥ ताप चहाडू गयो निरखे सुर
 ची तरुनी मुख चंद्र ठगार्ड ॥ नील सरोरुह
 मैनको वानन नैन निसारिके पीर जगार्ड ॥
 अगि अंगारके रंगन अंगनि कैसी अनंग
 की अगि लगार्ड ॥ ४८ ॥ उद्देग ॥ संवेया ॥
 सैनको वान गनै विष संजुत वाराके पूर
 नि मंग विहारे ॥ चंद्र उतै निसि मै लखि
 के बाहै जोर जगी जग अगिलि हारे ॥ होत
 नही बाल व्याकुल होत हितू उप चारनि
 के पचिहार ॥ ऐसे भये मन मोहन लाल
 हिया सिनी बाल वियोग तिहारे ॥ ४९ ॥

ताछिन तोहि विलाकि विलामिनि ताछि
 नते कछु अप्रारन भावे ॥ तेरिये वात सुहा
 ति सदा पुलकै कोउ तेरेजु नाम सुनावेनि
 क नहीं कल मोहन लालहि येा सव नंक
 मयंक सतावे ॥ तो वनि आवे जो आनन
 तेरो अरी अकलंक मयंक जिअवे ॥ ५०
 नायका को उदा हरन ॥ वीछी को डंक म
 यंक किधौं आगे लिखेहे पलाप ॥ संवे
 या ॥ मूर्ति तेरी मनोहर मै रचि बोलत
 यों कछु मोहन प्यारे ॥ आवे जू वेठा किंतै
 ही किंतै चली भाग खुले काछु आजु
 हमारे ॥ बोलत क्यों यह संका गई जाक
 हे मृदु मंजुल नाम तिहारे ॥ बोलत क्यों
 हो जू वूमौ जंवे लखेन कछूके कछूकाहि
 डारे ॥ ५१ ॥ उन माद ॥ संवेया ॥ माया स
 नोज की मोहन के बहु चार रचे बहु रु
 पतिहारे ॥ सामुहे आवति मूर्ति पेपरि
 भनको भुज दंड पसारे ॥ हाहा करे मुख चुं
 वन भागै हसेहे कापोल लसे छवि वार
 ऐसे विला सिनी राबरे प्रेम पे वावरी सी
 है कछू कार डारे ॥ व्याधि ॥ संवेया ॥ जे

मनिकंकन गादे गडे वार मूलन है छल
 काहू निकारु ॥ तेगिरि भूमि पर नहि जा
 लन ऐसी भई तनमै दुवराई ॥ नीरीन नै
 नलि नीद काहू निशि पीरी कपोलनिमै
 परि आरु ॥ तेरी विलो कानि पाहु विला
 सिनि ऐसी दसा मन मोहन पाहु ॥ ५३ ॥
 छूटि गयो हसिबो सब खलि चोलिब को
 भयो आचु निवरो ॥ ज्ञान काछून रह्यो
 उनको अब ऐसी वियोगा की आपदा
 द्यो ॥ अंग अली नहलै नचलै आनमे
 रहे खटयो यह साहस भेगो ॥ ऐसी दसा
 सुनि मोहन लालकी वयो मन होतद
 जानत तेरो ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कवहु समनवर
 निरी जीवन कावहु होइ ॥ तोपुनि वाको
 आहुये यों कवि सिद्धा कोइ ॥ ५५ ॥ दं
 पति की रिस परस पर मानवरवान्यो
 आहु ॥ प्रनय ईर्या भेदसो द्वे विधि ता
 हि बनाइ ॥ ५६ ॥ प्रनय मानलः ॥ दोहा
 होन प्रनय की कुटिल चाति विनकीन्ह
 नो रोस ॥ दंपति कोइक सेंजमे प्रनय
 मान विन दोस ॥ ५७ ॥ सबैया ॥ तू मन

दर्यन अह विचिद्र मलीहि जो मेरी कर्ता
 सिख माने ॥ जाहि चोह सो सदापुनि वि
 वित लोसे काहात् रहे अकुरांने ॥ दाहिर
 कीन सखाई काछू ज्ये अंतरवाहि म
 ले फहि चाने ॥ जो मुस क्यानि में लीन
 रहे तो तू आप को ताप काछू नदि अंन
 पठ ॥ वात काही अपने मनमें सुख वाहि
 रके हमहू को सुनाई ॥ ताकोन उत्तर दी
 जिये आपु तो होति गुमानहि की अर्थ
 काई ॥ जानको कौन सो बोलत को चहुं
 काहके अंतर की गति पाई ॥ जाकी लु
 भी मुस क्यानि है चाहिय तामो सुकोन
 कोरेगी सखाई ॥ पृष्ठ ॥ दोहा ॥ पुनय मान
 गत दुहुन को वै वा मानतु हाइ ॥ सुता
 वरनिदे नियन में यों वरनत सब कोइ ॥
 ई ॥ और तियाके होवते वारे सखद ज्ञाना
 नि ॥ लधु सखदत इह भेद सु सावक द्विवि
 धि लिचाहि ॥ ई ॥ दोहा ॥ कौतुक छुटत मान ल
 लु सखदस लीजे सोह ॥ गुर छुटत पाइन
 पर पैर चदनि नहि भौह ॥ ई ॥ लधु सा
 सवेया ॥ मन मान कियो व ध मान लकी

अनेते अत्र लोकात लाल लहे ॥ उत आ
 दू जुरी सरिवयां सिगरी पिय आयां स
 खी दूक वीज काहे ॥ दूग मूदि रहौ चित
 रज्जु पै मान लाला हसिते दूग मूदि रहे
 मुस वयादू के राधि का आनंदसों भुजमा
 लसों लाल लघेट राहे ॥ ६३ ॥ मध्यममा
 ना दोहा ॥ प्यारीकी पदवी हमै हीन्ही आ
 जू गुपाल ॥ तेरीसों लाईन उर समुभि
 और तू वाल ॥ ६४ ॥ गुरु मान ॥ दोहा ॥ हं
 सति काहा मोपै निरखि लरिख लरिखइ
 नके अंग ॥ नेहे और तिय नेह सों नेह
 हमारे संग ॥ ६५ ॥ सबैया चैतको चंद औ
 मंद वयारि वहै अति सीत सुगंध भई
 दून ॥ जाको घनो लल चातिहोवालसो
 लालसलेनो परयो मनि पाइन ॥ जोवन
 के दिन पाहुनहें पछ ताउगी पीछेके
 मेरी गुसा दून ॥ केलि करौ मिलि मोहन
 सों काहा दीक जुठानतीहो ठकुराइन ॥
 ६६ ॥ दोहा ॥ मान हरन के करनको वर
 ने छयो उपाइ ॥ छोडत दून तेरोसति
 य सेसे सहा सुभाइ ॥ ६७ ॥ माना पमानो

भेद ॥ दोहा ॥ साम भेद अरु हीन काहि ।
 लोही पुनितवरदानि ॥ बहुरि उपेक्षाकाह
 तहें फिरि रस अंतर दानि ॥ ६८ ॥ १०
 मधुर वचन री सास काहि भेद सरवी
 की बात ॥ हान व्याज सरदादिका पुनि
 तवरन को पात ॥ ६९ ॥ सामा दिवावी ।
 छीनता होत उपेक्षा चिन्ता ॥ सास हरद
 इनआदि है काहि रस अंतर मित्त ॥ ७०
 सम्पापाडू ॥ कावित्त ॥ वैत सुधातुही री
 चै विलासिनि मोमन मोद लतानिची
 क्यारी ॥ मोहि कहा काल होत काहुं मनि
 जो पल एक रहै जव न्यारी ॥ मेरिये नन
 चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
 उज्यारी ॥ जो कछु जानौ सुजाडू बांधोनु
 म मेरेहो पाननते अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क-
 वित्त ॥ चिन्ता मनि जोपै तुम्है उनसोहें र
 सेवेतो काहेको उनको मनु बांध्यो प्रेम
 पादसों ॥ वेतोहें विलखें मुख तुम विनत
 महंतो दुखित हो विरहित आनंद को
 कुंदसों ॥ हमतो जानति एहो तुम्है हैं स
 यान देखौ पूरन अयान मान ठान्यो नद

नंदमों ॥ वैतुमसों मिली तुम इनमों मि
 लहीरबल्यो चंद जैसे चादनी सो चांदनी ज्यों चंद
 सों अचिंतामनि होइ कोऊ नीकी अनै-
 ही कवित आगे लख्यो है ॥ दोहा ॥ सो
 तनके कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यो
 निदान ॥ अत्र मनि एका पर चढ़ी कर
 री भोंह कामान ॥ ७३ ॥ दानो पाइ ॥ कवित
 मानसों निहारि चख भानकी कुमारि-
 का हिल्या स नंद लाल गूढ़ि कर माल
 तीकी माल ॥ अनि अनवोली के मरे मे
 पहि राई कह्यो कौसी नीकी लागी प्यारि
 दुति उलही विसाल ॥ नेक मुस कषाडु ऊं
 चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग २
 चिंता मनि यों लखे गुपाल ॥ चिबुकाक
 पोल चूमि चूमि गहि कंठ भूम भूमि हं
 सि लाल भुज माल भरि भेटी वाल ॥ ७४
 प्रनतिको उदा हरन ॥ दोहा ॥ द्योडि मान
 पाइन पखौ जो पिय कह्यो अधीन ॥ नी
 ल कमल से दृगनि मै तियके माल क्यो
 नीर ॥ ७५ ॥ उत्प्रेक्षा उदा हरन ॥ दोहा ॥ पति
 गयो उठि इकि यो ऐसे कछु बहु मान ॥

यह नहि देखति च नो मरिचि द्रव्य कौं मरिचि
 गुमान ॥ ७६ ॥ असांतरी ॥ अरिचि ॥ असांतरी ॥ असांतरी ॥ असांतरी ॥
 वृष भान वुसादिल सात्ये नृवा गिता गी
 र मनाई ॥ और उपाडु थके दिवस मय रंग
 नयों तव वाते चलाई ॥ पीछे तिहों का
 है तिया काहि जो वदियां सनेम मनाई ॥
 यों भिा भकी उनको लपकी नं सिंदो नद
 नंदन कांठ लगाई ॥ ७७ ॥ कागनी तसः ॥ ७७ ॥
 दोहा ॥ जहां सुख तिय जुगल से सुख
 क की होइ ॥ पुनि जीवनि की आस
 मना तमगन सोइ ॥ ७८ ॥ जो वर नो का
 वरी सुंदरी का वृत्त ॥ सो कारना नम वात
 हैं सब पंडित बल बत ॥ ७९ ॥ प्रवास नज
 रा ॥ दोहा ॥ तन मन होत तिया न को नास
 नि पास प्रकास ॥ पीतल को परदेस को वास
 सुवरन प्रवास ॥ ८० ॥ होन द्वार नर नर
 जो द्वै विधि वरन प्रवास ॥ ताको देन उदा
 हरन सज्जन सुनो प्रवास ॥ ८१ ॥ भदि ज्य
 त प्रवास ॥ ८२ ॥ कौसी करी म न पार प्रीति
 तौन धरी द्विय हेरि दे वन ॥ संत वि का
 न काहा सज्जनी उत दादुह जोर प

के गन ॥ पावस मै परदेस गर पिय ऐसेन
 है कावहु निरदे मन ॥ आर नहीं धन ह्याम
 ये कहा देखे नहीं उनर उनर धन ॥ ८२
 दोहा ॥ प्रथम हेतु अभिलारव पुनि विरहा
 ईरषा मानि ॥ पुनि प्रवास अरु साप पुनि वि
 पुलंभ को जानि ॥ ८३ ॥ अभिलाष हेतु ॥
 लवेया ॥ नैननि की मुस क्यानि अनूपम
 नैननि दीच सुधा रस नाऊं ॥ ओठन को
 धन राग लखै मनमै अनुराग प्रमोदवदा
 ऊं ॥ यो जग ऊपरमै अपनो यहतौ धन
 जीवन भाग गनाऊं ॥ बार कहौ ज्यु विला
 सिनिको मुख चंद्र विलास विलोलन पा
 ऊं ॥ ८४ ॥ विरह लक्षणा ॥ दोहा ॥ गुरजना
 दि परतंत्र जहं निकटहु मिलनन होइ ॥
 दंपति को बुधजन वाहत विरह कहा वत
 सोइ ॥ ८५ ॥ ललित कथा निसि केलिकी वि
 रह जलधि को सेतु ॥ होत दुहुन को घो
 ससै नख पद पदको हेतु ॥ ८६ ॥ सुंदरि
 निरमल सौध अह सरद चांदनी राति ॥ २
 वौं रुटी पियसौं अरी मिहरी मूरव जाति
 ८७ ॥ प्रवास हेतु ॥ दोहा ॥ मोहि तोहि चाति

का कहा जल धर जीवत देते ॥ ५१ ॥ या उ गति
 रति मरे निरुद्ध काहा र्हा धु लेत ॥ ५२ ॥ सेपे ह
 दु का सेपे दूत ये ॥ दोहा ॥ विप्रित औ वृत्त
 वचन जो और वैष कचु वेदु ॥ ताते उप
 जत हास्य जो वरुत है सब कोइ ॥ ५३ ॥
 वचना दिवा वैद्यत निरखि संभन ज चन
 विकास ॥ विरथे का वह देखि के वादत सुका वि
 जन हास ॥ ५४ ॥ हास्यत आर्द्र भाव जिन
 सुतो हास रस जान ॥ जाते उप जत है सुने
 न्ना संवन पाहि चान ॥ ५५ ॥ चैश ताकी
 वाहन दुख दीपत दूत को हेनु ॥ अब विस्था
 लम आदि पुनि संवारी सो होइ ॥ ५६ ॥ हा
 र्मिमत अरु हसित पुनि कहिये औ विच
 रि ॥ और पर जिये उद्ध सित अरु अपहसि
 त निहादि ॥ ५७ ॥ पुनि आदि हसित छविध
 सुख है है निम्न रानाइ ॥ उत्तम मध्यम अ
 धम कत गतरु लसुभा कताइ ॥ ५८ ॥ रिमत
 वाहि विवा सित दृगद वाधु लख परे क
 हंत ॥ वाहन सित उत गेन के द्वै वर नत
 धवंता यधु सुखर विह सित सिरः वा उ
 उद्ध सित जानि ॥ मध्यम नर गत नाम वा

ये दे भेद वखानि ॥ आसुन जुत कहि अपहसि
 त बहुरि अपति हसित ज्ञान ॥ तन परसे पुह
 मीत लै सप्रथमनके मानि ॥ ६७ ॥ सेतवर
 न यह प्रथम पति देव तहां सब खानि
 याको देत उदा हरन सुकावि लेहु मन
 आनि ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ आरसी देखि जसो
 मतिजू सो कहै तुत रात यों वात वान्हे
 या ॥ वैठते वैठ उठते उठे अरु वूदेते वूदे
 चलेते चलैया ॥ बोलैते बोलैहसेतेहसेभाव
 जैसो वारो त्योही आपु करैया ॥ दूसरी
 कातर दुलारी कियो यह कोहे जु मोहि
 भिन्नभावत मैया ॥ ६९ ॥ इष्ट नासकि अ
 लेशकी आगम तें जो होइ ॥ दुःख सोका
 थई जहां भाव दारन वाहि सोइ ॥ १०० ॥
 आलंबनिग सोकइत ताकी दाह त्रियादि
 उही पन अणु भाव गति रोदन भूपा तादि
 १०१ ॥ निर्वेदा दिवा होतहैं जामै बहु विधि
 चारि ॥ तेसव अपनी बुद्धि बल लीजे विबु
 ध विचारि ॥ १०२ ॥ यहु कवोर रंगरसु वाहो
 जमै देवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन
 सुनो सृजन मन आनि ॥ १०३ ॥ कथित ॥ १

ऐसी भाँति राम सब नीतवो प्रकार पूछ्यो
 भरत सुनायो रोडू पितावो मरन है ॥ दिहू
 ल अंगनते अचेत है गिरहैं भाँस भाडू इ
 नको मन दीख भयो अस रन है ॥ नेरही
 वियोम तें तिहारे पिता पान तजे तुमवा
 थराको अव धीरज धरन है ॥ यह सुनत
 ही राम सूनी सब जग लख्यो वार्हा समे
 ह्ये गयो वहन विवरन है ॥ १०४ ॥ वैदेही रा
 वै तीनी भाई लरो रोदन ल्यो जागि रघुना
 थ ए वचन मुख बादि हैं ॥ रावो जिन को
 ऊ कहा तुम्है वीन दोसु राज मेरे वाज द
 न तजे मेरे पान गादि हैं ॥ तुमहू नहुतें दि
 जीवें वाहो वीन शांति रोतौ दुरजत चित
 आगहू नटा देहैं ॥ ऐसी बातै कहि वादि
 रतसों रोडू राम नैन जल जनतै विपुल त
 ल बादि हैं ॥ १०५ ॥ भरत वचन बोलांग
 वहू तुकहा उठो तीनी जने चलि उदवा
 वा करौ ॥ लक्ष्मिन सीताको विलोका
 ह्यो ऐसी भाँति अव उठो चलो धीरवंत
 रो। साथमें सुमंत आस भाडू सब मंदा वि
 नी जल त्रिया करै भरे असुवान लो वयो

पुनि गिरि चदि आस उदज के द्वारमें सुका
 रसव रोस संसार की दसा जरौ ॥ १०६ ॥ *
 दोहा ॥ अरि विरचित अप राधते चित्त
 प्रजलन कीध ॥ सोयाई जित रौद्र सों प
 रगत निर्मल बोध ॥ १०७ ॥ आलंघन अ
 व वरनि ये उद्दीपन मन आनि ॥ ताको जे
 आचारसव बुधजन लखत वखानि १०८
 कृत्वादि भंग दृग असन अरु अधर दंस
 इत्यादि ॥ अरु वरनत अनु भाव सव्यमि
 चारी इत्यादि ॥ १०८ ॥ अरु वरनत अनु
 भावम् ॥ दोहा ॥ रक्त रंग सदाधि पति रौ
 द्र वखानो जाइ ॥ ताको हेत उदा हरन सु
 कवि सुनौ मन लाइ ॥ ११० ॥ चनाक्षरी ॥
 काह्यो अरु अरु गुननको वानतु छिन स
 कसे त्वत्त तप सीन साहो ॥ धराने पारो
 अरु छेदिन भतारिकों समर मै सची प
 तिको लंघारो ॥ मीचुको मीचु संनिहत
 कर सकत हो भुज नदल प्रवल पड़े उ
 लठो ॥ भक्त वैमान कुसार ह मारद्वै उतम
 निमित्त तिनको विचारो ॥ १११ ॥ अति
 अकार आकाश श्री प्रन सम गाकारि ।

अह निशि वामर चंद्र चालिय उदास हर प
धरि ॥ दिशि य पूरन विपति गेकि रावन
के दे रहि ॥ चलो उचारो संवादी मौरा संदी
ग्राहि दित सति वल यन वान्त हव वयन
ह भव ससद सद ॥ शति पूरन विपुल क
यिवन जलधि पहुच्यो दक्षिण ज वदि
तद ॥ ० ॥ ११२ ॥ जो लो को न वान भे नि
पु जंत उताह ॥ सो जामे साई लख ज्यो
र कहल कावि ताह ॥ ११३ ॥ जेत व्यान वन
बरन ताको इंगिल कोइ ॥ उई पत अतुया
हि पुनि संचारी इत सोइ ॥ ११४ ॥ नायक को
आचरन जो सो रानि ये अनु भाव ॥ नान
धर्म को सुहु को द्यासु अपादि वाना ॥ ११५ ॥
चंद्र देवता कानका नम वरन सुधा को जनि
उत्तम नायक विषल कहें हेइ सुधा को जनि
ल आनि ॥ ११६ ॥ सुभावादि नूनको सुधा को
बुध जत बुधिनल जानि ॥ इतको हेइ सुधा
हरन सुधा विलो सन आनि ॥ ११७ ॥ वरु
वीर को उदा हरन ॥ यवा जरी ॥ अर रिनि
ही वन लखन लो जानि दिति राम चरन
वचनिज अंग कीन्हो ॥ दिव्यत नीर को

हैं सुभग अंग मौरुचिर रघुवीर कार चाप
 लीन्हो ॥ कियो घन गरज घन धनुष र्त
 कोर अरु ललित मुख हरष भालवयोन
 वीनो ॥ आडू भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व
 जैवौलि रघुनाथ कौ विजै दीनो ॥ ११८ ॥
 तवै धरको पकारि आप आयो उतै जितै
 सरचाप धरि राम राजै ॥ संगलै सधन ध
 न संघ समरहगन तिष्य तमशरख वरखा
 नि राजै ॥ परस तिसूल आस पास मुद्गा
 रविपुल असनि सम राम पर डारि गाजै
 समुद्र ज्यो आप गावेग सहि आपु घनवे
 ग सहि छविन रघुवीर राजै ॥ ११९ ॥ *
 राम भुजदंड पाछे खिरव्योहै ॥ दानवीर ॥
 कविज ॥ कारियै लखन अभिषेक विभीष
 न जूको लखन विभीरवन को कीन्हो अ
 भिषेकहै ॥ वडो सुखु पायो वानरन रीछ
 राकासन भयो मनौ सवनि सुर समेकुहै ॥
 ल्याए रामजूको साधमोदक अछत राज
 मंडलकी साज भयो उदाव अनेकुहै ॥ रा
 वत संधारौ राजु दियो विभीरवनको ज
 गत सरा ह्यो रघुनाथकौ विवेकुहै ॥ १२० ॥

परम अपार भवसागर उतारि विवें ॥ पाँच
 लिरव्यो है ॥ काविन् ॥ अवधनि घट नंद ना
 उकोस स्वका पर निरव्यो करवाए पदधा
 रीसोग साधको ॥ चिंता मनि वांहे सृष्टा चर
 म जटानि धरे सुनि वे व जरात अभयदा
 र हाथको ॥ वंस अलं हात करि आपने
 चरित्र सत्यकारी भागी रथ आह्वन साध
 को ॥ जादू हनुमान देख्यो धरम वृत्तन धरे
 परव्यो है भरत उत भैया रघुनाथको ॥ १२१
 दया वीरको उदाहरन ॥ दोहा ॥ इंद्र कह्यो म
 न मोद धरियो सुनिये श्रीराम ॥ वों सि-
 ल्या सु प्रजा भई पाइ पूत गुन धाम ॥ १२२
 इंद्र कह्यो अवसाग वर यो वेले वृत्तगत
 वै जीवें कपि रीछजे मरे महा संग्राम ॥
 १२३ ॥ जे फल भूल अकास हूं पावें वातर
 वीर ॥ होइ विमल वैसवनदी विलसैं जिनको
 तीर ॥ १२४ ॥ इंद्र कह्यो है है इहै गल निना
 रे हेत ॥ सुने बाहू संसार में जीवन लाह पर
 त ॥ १२५ ॥ है है सब जो चाहियत यों दादि
 गयो अकास ॥ सबको देखत समसं वरयो
 अमृत प्रकास ॥ १२६ ॥ परलोन रावास लोय

पर दाहं अहृत कौ विंदु ॥ मोह गयौ मृत क
पितको ह्यो ज्ञान कौ विंदु ॥ १२७ ॥ उठे ह
जिन दिन कापि हवै जात दूरवर भगवान
दस रथ बंदन समस्त करी अली किकठा
न ॥ १२८ ॥ होइ विता भव चित्तकी विक
लपता भय जानि ॥ सो यामै थाई सुख अ
यात्त चाहि पहि जानि ॥ १२९ ॥ जाके उप
जत हें सुखें तें आलवन जानि ॥ ताके दु
हित के कहु उही पतरु मानि ॥ १३० ॥ वै
वर्ण दिक्क वने स जाके बल अनुभाव ॥
शंका शंका दिक्क कहें तें संचारि गनाव
१३१ ॥ बाल वरन याको वरन बाल देवता
मानि ॥ याको दैत उदा हरन सुकवि लेहु
मन जानि ॥ १३२ ॥ मया नक को उदा ह
रन ॥ अति अलीत रुकसी मयौ राम विद्या
शे गाल ॥ भजे बालिगाधिपति के दीर उ
खोरे दान ॥ १३३ ॥ वीभस्मित लहरा ॥ होह ॥
नेरं दुःखित यातकी द्विधि जुवा ब्राह्म
मि ॥ सोहै थाई भाव जित मो की मल्लव
वर्तन ॥ १३४ ॥ राधिर नाम दुखंधु अरु अ
लंघन मजाहि ॥ महा बाल प्रति नीलव

ग उही पनक्रम आदि ॥ १३५ ॥ अपस सा
 र आदेश अरु मोहा दिवा अरु चारि ॥
 वरनत रस वी भत्स मे सज्जन सैकु वि
 चारि ॥ * ॥ १३६ ॥ कवित्त ॥ * ॥ विपु विपु
 ल निश्चर वानर वपु विगत पुन रन सं
 बुल रवीडिय ॥ सज्जत वाज उदा लानन
 च्चानु निरखि रिक्त पति ग्राहस चं
 डिय ॥ समर भूमि पर तुरत वैगि उठि
 भिरत रीधर जल सरित उमंडिय ॥ * ॥
 ढाल कक्ष मुज खंड मक्ष सम सिक्ता
 अस्थि मुसल शिल कंडिय ॥ * ॥ १३७ ॥ * ॥
 दोहा ॥ निरखि अलौ किका - वस्तु जो
 होत चित्त विस्तार ॥ सो विश्वै पाई जि
 तै सो अद भुत रस रार ॥ १३८ ॥ वात अ
 लौ किका जो कछू सो उही पन जानि
 महिमा जाके गुनन की सो उही पन मा
 नि ॥ १३९ ॥ आलं वनगानि वस्तु जो वरन
 अलौ किका सोइ ॥ उही पन ता गुनन
 की महिमा जो कछू होइ ॥ १४० ॥ नत्र
 विवासा दिक्क जहां वर नरुहें अरु वर
 व ॥ हर्य वितकी दिवा इते संवर्षिन

सुकाव ॥१४१॥ पीत वरुन सो वरनिये म
 न मय देवत मानि ॥ याके हेत उहा हरन
 सुकाविलेहु मन आनि ॥१४२॥ कविज ॥
 बाल पन कौसिक के मखके विधत क
 र निसा चर मारे सिला प ॥ २५ ॥ तारी
 है ॥ गरु हर चाप तोरौ वाप सत वैन
 कीन्हो कानन सिधारे राज सिरो नानि
 हारी है ॥ वाली माणौ महा बली राक-
 स संधारे पाति रावल के भुज दंडन
 की मही पर पारी है ॥ दीन्हो निजु था
 मल अवधि दया निधि को अवधन
 रेस राम अवधि उधारी है ॥१४३॥ कविज
 कोमल करकमल कर कस गिरि तै
 उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
 है ॥ जीवैगो सो जीवै जो मरेगो बहु मरे
 सोसो कैसे निजु बालक कलेस देख्यो
 जातु है ॥ मेरो कह्यो करुन तो निवारि म
 रोगी काहि चली जहां कर का सिलानि
 को निपातु है ॥ जहां कटै गोपी गोपम
 न संग नंद रानी तहां रत्ना करिबे को अ
 चल अधि कातु है ॥१४४॥ संत लहरा

*॥ दोहा ॥ *॥ सम कहियत वैराग्यने नि
 वि कार मन होइ ॥ सो थार्ई जित सां ल
 रस वर नत हैं सब कोइ ॥ १४५ ॥ कुंद कुंद
 सम थवल यह श्री नारायण आप ॥ वा
 रसके अधि देवता जो मैदत सब ताप ॥
 १४६ ॥ अलंवन संसार के निश्चिन सत्त
 वरवानि ॥ कैं पर मारथ अरथ जो सो अ
 लंवन जानि ॥ १४७ ॥ पुंन्या अम हरि कं
 न अरु तीरथ रम्य वनादि ॥ ताके उद्दीप
 न गनत महा पुरुष संग्गादि ॥ १४८ ॥
 पुलका दिक् अनुभाव गनि संचारी
 रथादि ॥ सकल साधु सेवत लसत यह
 अति विमल अनादि ॥ १४९ ॥ काविन ॥

पूरन विमल गुरु कृपाके प्रभा
 व सब विगरे प्रपंच भर व्याप
 क गंगन है ॥ प्राचीन कर्म भोग
 करति जो देह ताकी सुधिनका
 छू है से से मान्यो जगन है ॥ का
 म क्रोध लोभ मद मत्सर आदि
 महा मोहके विलास ठग सन
 ठगन है ॥ धन्य जन कोऊ राम

अभिराम इह ज्ञान आनंद
 अजर पारवार में मगन हैं १५०
 ॥ दोहा ॥

यह रस पुनि स अलक्ष्य काम व्यंग आ पु
 छति हरी ॥ १५१ ॥ शब्दा शब्द विशेष पद वाच
 काहात्विचारि ॥ १५१ ॥ वाचक पद रसुय
 हो जो सब साधारण नाम ॥ चिंता मनि
 कवि कहत है समभौ बुध अभिराम ॥
 १५२ ॥ इत शब्द नें कहत हू वंधन रस
 यो होइ ॥ यतें रस सब ठौरमें व्यंग्यक
 हत रसकोइ ॥ १५३ ॥ काछु विभाव अनु
 भाव काछु अधिक बहुत संचारि ॥ व्य
 क्ति शब्द भावसों रस काम यह निर
 धारि ॥ १५४ ॥ व्यक्ति रस को कामजुय
 ह समभौ रस श्वनि नाम ॥ जो रसया सो
 होतु है सज्जन मन अभि राम ॥ १५६ ॥
 त्योंही भाव विचार रस भावनको अभि
 रस ॥ भाव शब्दा दिवो पुनि अकाम व
 रन प्रकास ॥ १५७ ॥ देव पुत्र गुर आदि
 जे तिनमें जो रति भाव ॥ कौ संचारी व्य
 क्ति सो शुद्ध भाव समु भाव ॥ १५८ ॥ देव

विषय करति भाव को उदा हरन ॥ सवेया ॥
 अरे वयो अजहू नहि होतु स्वयेया जो प
 री लो लो लो लो लो लो लो ॥ १५० ॥
 न दोसु काहा पर पंच जदपे नही के लमा
 यन मे ॥ मनि हातु लला शिव बदन नही
 जो प्रकास बडो को सुठायन मे ॥ यह वं
 धन जो मन ही को कियो मने बांध मया
 लीके पायन मे ॥ १५० ॥ दूसरो उदा हरना
 कावित्त ॥ चार मुख चंद्र लंद हसनि मना
 हर है चिंता मनि सोतित की माल हरि
 के गारे ॥ लाल पीत पट लंद कटिल पटा
 ये नट नागर निपट रम नीय रूपका को ॥
 का ननके सोतित की चंद्रिका बांधाल
 चम कात जरी चीरा पर जोर चंद्रिका
 थरे ॥ कोटि काम सुंदर विश जन हुंवर
 कान्हु कालिंदी के दूल मे काहंय तनये
 तरे ॥ १६० ॥ पुत्र विषय करति भाव को उ
 दा हरन ॥ कावित्त ॥ दुलही ललित जगवा
 सी जग मगो अत भालर मे भाल कत
 मुकता हसो सुटार ॥ कोस के रंग रगी
 भीनी सी भगुलि या मे भालकन अंगक

वलय हल सुकु मार ॥ हसत वदन दतिया
 हैं देखि चिंता मनि जनम सुपाल करि
 माने हसरथद्वार ॥ गोदलैके राम जूको
 आनंद भगन मैया ललकि के वलैया
 लेत वार वार ॥ १६१ ॥ रसा भास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय करति जुहे
 सोई तरस आभास ॥ अनुचित
 विषयके भाव जो सो पुनि भा
 वाभास ॥ १६२

वैठि भरोखे मारि दृग वानन करति कु
 काज ॥ मृग नैनी मृगाया रची तरुन मृग
 न पर आज्ञा ॥ १६३ ॥ भावा भास ॥ दोहा ॥
 पाइ न परि ईश्वर कहै जाको सुर नर ना
 ग ॥ पशु मिथि बध रावन कियो रघु पति
 जूरन जाग ॥ १६४ ॥ उपसमया वै भाव
 जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदि
 का सुतौ उदया दिवा पहि चानि ॥ १६५
 मान वली पीतम लख्यो खरो हीन मुख
 दूरि ॥ औचक ही लोचन जलज आणज
 लसों पूरि ॥ १६६ ॥ भावो दयको लहरा

* ॥ दोहा ॥ *

वेंदी पिय पट सों लगी लीनी अली उता
 रि ॥ वृद्धि गर्दु अच लोकि उत सवुच सिं
 थु सुकु मारि ॥ १६७ ॥ भाव संधिको उदा
 हरन ॥ कविता ॥ चारु मुख चंद्र राम चं
 द अर विंदु नैन दूदी वर देहु इति लस
 नि सुहाई हैं ॥ कानन के मुकता पाल
 नीकी भालकि मंद हसनि कपो लानि
 अमोल छवि छाई हैं ॥ रीभी सुकु मा
 रि दूसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
 ष हीन सुख सुर भाई हैं ॥ ह्वैके विह व
 लतन जानुकी विकल मनहि मनसेल
 सुता कुल देवता मनाई हैं ॥ १६८ ॥ *

भाव सबलता

कविता ॥ दूरहीते सोंही चारु अचल हरी
 ही ऊंची भौहन के संग सोहे सुभा नर
 लीकी ॥ आयो जब दिग तव सुवरन व
 ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन चूग
 कोलीकी ॥ पुनि अथ खुली दूदी वर
 की कालीसी आइ परी है तिरि छी डीठि
 वचा के सहेलीकी ॥ विविधि कटाक्ष भौ
 ति मैन सर पांति खरी खुली अशु अ-

वाङ्मयकान्त २१६

खियां अनूप अल वेल्लीकी ॥ १६८ ॥ ॥

इतिष्ठी चिंता मनि वि
रचिते कावि कुल कल्प
त्तरे अष्टम प्रवारणाम्
समाप्तम् शुभ मस्तु ॥ ॥

हस्ताक्षर चराडी दत्त वाम्हरा काव्यकुञ्ज

